मेरी खेती

PAGE NO. 1-76, JULY, 2023

किसान समाचार

- खेत खलियान
- सरकारी नीतियां
- मौसम व अन्य कृषि सुझाव
- सब्ज़ी
- फूल
- औषधीय खेती
- पशुपालन - पशुचारा
- प्रगतिशील किसान

MERIKHETI

सम्पादकीय

केंद्र सरकार की तरफ से भारत के अंदर बढ़ती अन्न की बर्बादी को ध्यान में रखते हुए। अन्न भंडारण योजना को स्वीकृति दी है। इस योजना के अंतर्गत देश के प्रत्येक ब्लॉक में गोदाम निर्मित किए जाएंगे।
भारत में अन्न की बर्बादी ना हो इसको लेके केंद्र सरकार ने एक बड़ा फैसला लिया है। सरकार की ओर से अन्न भंडारण योजना को स्वीकृति दे दी गई है। जिसके अंतर्गत हर एक ब्लॉक में 2 हजार टन के गोदाम स्थापित किए जाएंगे। इस व्यवस्था को शुरू करने के लिए त्रिस्तरीय प्रबंध किए जाएंगे। इस योजना का उद्देश्य अन्न की बर्बादी को रोकना है।

बतादें, कि फिलहाल भारत में अन्न भंडारण की कुल क्षमता 47 प्रतिशत है। परंतु, केंद्र सरकार की इस योजना से अन्न भंडारण में तीव्रता आएगी। कैबिनेट की बैठक खत्म हो जाने के उपरांत केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर का कहना है, कि सहकारिता मंत्री के नेतृत्व में समिति बनाई जाएगी। योजना की शुरुआत 700 टन अन्न भंडारण के साथ होगी। इस योजना की शुरूआत होने पर भारत में खाद्य सुरक्षा को बल मिलेगा। इस योजना को जारी होने पर अन्न भंडारण क्षमता में इजाफा होगा। वर्तमान में भारत के अंतर्गत अनाज भंडारण की क्षमता 1450 लाख टन है। जो कि फिलहाल बढ़कर 2150 लाख टन हो जाएगी।

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस लक्ष्य को हांसिल करने के लिए 5 साल का वक्त लग जाएगा। इसके लिए केंद्र सरकार पांच साल में 1 लाख करोड़ रुपये का खर्चा करने वाली है। योजना के अंतर्गत भारत के हर एक ब्लॉक में गोदाम स्थापित किए जाऐंगे। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर के मुताबिक, यह योजना सहकारिता क्षेत्र में विश्व का सबसे बड़ा अन्न भंडारण कार्यक्रम है। इस योजना से भारत में रोजगार के अवसर भी उत्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त फसल की बर्बादी भी रुकेगी।
केंद्र सरकार के अनुसार, सहकारिता क्षेत्र में गोदाम के अभाव के चलते अन्न की बर्बादी ज्यादा हो रही है। अगर ब्लॉक स्तर पर गोदाम निर्मित होंगे तो अन्न का भंडारण होने के साथ-साथ ट्रांसपोर्टिंग पर आने वाली लागत भी कम आएगी। योजना के अंतर्गत खाद्य सुरक्षा को मजबूती मिलेगी। फिलहाल, भारत में प्रत्येक वर्ष 3100 लाख टन खाद्यान्न की पैदावार होती है। लेकिन, सरकार के पास केवल उत्पादन के 47 प्रतिशत भाग को भंडारण करने की ही व्यवस्था है। जो कि इस योजना के आने के उपरांत ठीक हो जाएगी।

-संपादक
दिलीप यादव

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

डॉ. एमसी शर्मा,
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति
आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी. सिंह
पूर्व कुलपति वेटरनरी विश्वविद्यालय
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ वेटरनरी
एंड एनिमल साइंस

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत)
उत्तर प्रदेश

डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय कुम्हेर भरतपुर
राजस्थान

डॉ. जे.पी.एस. डबास
वरिष्ठ वैज्ञानिक
आई ए आर आई

डॉ.हरी शंकर गौड़
साइंटिस्ट, गलगोटियास
विश्वविद्यालय

दिलीप यादव
विशेषज्ञ, मेरीखेती

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

कृष्ण पाठक
विशेषज्ञ, मेरीखेती

राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे संवेदनशील विषयों को संभालने के लिए आप किस पार्टी का समर्थन करते हैं?

बी जे पी

कांग्रेस

आप

कोई नहीं

netahub.com

खेत खलियान

ग्वार की खेती कैसे की जाती है, जानिए सम्पूर्ण जानकारी के बारे में

ग्वार की खेती कैसे की जाती है, जानिए सम्पूर्ण जानकारी के बारे में

ग्वार अब भोजन, फार्मास्यूटिकल्स और तेल जैसे विभिन्न उद्योगों में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। भारत में राजस्थान ग्वार का प्रमुख उत्पादक है जिसके बाद हरियाणा, गुजरात और पंजाब का स्थान आता है। ग्वार उत्पादन अब अन्य राज्यों जैसे मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु तक भी बढ़ गया है। ग्वार का प्रमुख उत्पाद ग्वार गम है जो खाद्य उत्पादों में इस्तेमाल होने वाला एक प्राकृतिक गाढ़ा एजेंट है। भारत से प्रमुख निर्यात में से एक ग्वार गम है, प्रक्रिया में कुछ और अनुसंधान और विकास और बेहतर तकनीक के साथ, यह किसानों के लिए अत्यधिक लाभदायक होगा।

ग्वार की फसल का महत्व

ग्वार एक दलहनी फसल है, 'और दलहनी फसलों के मुकाबले ग्वार को अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती है। ग्वार फली आमतौर पर चारे, बीज और सब्जी के उद्देश्य से उगाई जाती है। फसल से गोंद का उत्पादन होता है जिसे ग्वार गम कहा जाता है और विदेशों में निर्यात किया जाता है। इसके बीजों में 18% प्रोटीन और 32% रेशा होता है और भ्रूणपोष में लगभग 30-33% गोंद होता है।

ग्वार की फसल के लिए उपयुक्त जलवायु और तापमान

ग्वार धुप में पनपने वाला पौधा है। उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की शुष्क भूमि की फसलें उच्च तापमान को सहन कर सकती हैं। उचित वृद्धि के लिए इसे 25° से 30°C के बीच मिट्टी के तापमान की आवश्यकता होती है।

यह पाले के प्रति संवेदनशील है। यह निश्चित रूप से उत्तर भारत में खरीफ मौसम की फसल है, लेकिन कुछ किस्में मार्च से जून के दौरान बसंत-ग्रीष्म फसल के रूप में और अन्य किस्में जुलाई से नवंबर के दौरान दक्षिण भारतीय जलवायु परिस्थितियों में वर्षा ऋतु की फसल के रूप में उगाई जाती हैं।
यह गर्म जलवायु को तरजीह देने वाली फसल है और गर्मियों के दौरान बारानी क्षेत्रों में अच्छी तरह से बढ़ती है। फसल 30 -40 सेमी वर्षा वाले शुष्क क्षेत्रों में अच्छी तरह से बढ़ती है। भारी बारिश, जलभराव की स्थिति, नाइट्रोजन फिक्सिंग बैक्टीरिया गतिविधि को कम करती है।

ग्वार की फसल किस प्रकार की मिट्टी में अच्छी उपज देती है

ग्वार फली सभी प्रकार की मिट्टी में उगाई जा सकती है लेकिन मध्यम बनावट वाली बलुई दोमट मिट्टी इसके विकास के लिए बेहतर होती है। भरपूर धूप के साथ मध्यम बारिश फसल की बेहतर वृद्धि में मदद करती है। पौधा छाया को सहन नहीं कर सकता है और वनस्पति विकास के लिए लंबे दिन की स्थिति और फूल आने के लिए कम तापमान वाले दिनों की आवश्यकता होती है। ग्वार की फसल एक अच्छी जल निकासी वाली बलुई दोमट मिट्टी में अच्छी उपज देती है। यह 7.5 – 8.0के बीच पीएच के साथ खारी और मध्यम क्षारीय मिट्टी को सहन कर सकता है।

फसल की बुवाई के लिए भूमि की तैयार

रबी की फसल की कटाई के बाद मोल्ड बोर्ड हल से एक गहरी जुताई के बाद, डिस्क हैरो से 1 – 2 जुताई या कल्टीवेटर चलाकर पाटा लगाया जाता है।

अच्छी जल निकासी सुविधा के लिए उचित रूप से समतल खेत की आवश्यकता होती है।

ग्वार की उन्नत किस्में

FS-277:– यह किस्म CCSHAU, हिसार द्वारा स्थानीय सामग्री से चयन द्वारा विकसित की गई थी और पूरे भारत में खेती के लिए अनुशंसित है।

एचएफजी-119:– यह किस्म सीसीएसएचएयू, हिसार द्वारा चयन द्वारा विकसित की गई थी और भारत के पूरे ग्वार उत्पादक क्षेत्र में खेती के लिए अनुशंसित है। फसल 130-135 दिनों में काटी जाती है। यह बेहद सूखा सहिष्णु, गैर-बिखरने वाली और अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट किस्म के लिए प्रतिरोधी है।

गुआरा-80:– यह किस्म पीएयू, लुधियाना द्वारा इंटरवैराइटल क्रॉस (एफएस 277 × स्ट्रेन नं. 119) से विकसित की गई, यह देश के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में खेती के लिए अनुशंसित है। यह 26.8 टन/हेक्टेयर हरा चारा और 8 क्विंटल/एकड़ बीज पैदा करता है।

HG-182:– इस किस्म को CCSHAU, हिसार द्वारा आनुवंशिक स्टॉक (परिग्रहण HFC-182) से एकल पौधे के चयन से विकसित किया गया था। यह 110-125 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है

मारू ग्वार (2470/12):– इस किस्म को काजरी, जोधपुर में एनबीपीजीआर, नई दिल्ली द्वारा आपूर्ति की गई जर्मप्लाज्म सामग्री की मदद से विकसित किया गया था। यह किस्म दो प्रकार की है जो पश्चिमी राजस्थान के लिए उपयुक्त है।

HFG-156:– इस किस्म को हरियाणा में खेती के लिए CCSHAU, हिसार द्वारा विकसित किया गया था। यह 35 टन/हे. हरे चारे की उपज देने वाली लंबी, शाखित किस्म है।

बुंदेल ग्वार-1:– इसे आईजीएफआरआई, झांसी में एकल पौधे चयन के माध्यम से विकसित किया गया था। यह 50-55 दिनों में पोषक चारा उपलब्ध कराती है। यह किस्म एपीफाइटोटिक क्षेत्र परिस्थितियों में पत्ती झुलसा रोग के लिए मध्यम प्रतिरोधी है। यह आवास प्रतिरोधी है, उर्वरकों के प्रति उत्तरदायी है, सूखा सहिष्णु है।

ग्वार क्रांति (आरजीसी-1031):– यह किस्म एआरएस, दुर्गापुरा में विकसित की गई थी और यह आरजीसी-936 × आरजीसी-986/पी-10 के बीच के इंटरवैरिएटल क्रॉस का व्युत्पन्न है। यह राजस्थान राज्य में खेती के लिए अनुशंसित है।

बीज की बुवाई कैसे की जाती है ?

5 -6 किलोग्राम बीज एक एकड़ में बुवाई करने के लिए पर्याप्त है।

फसल जुलाई के प्रथम सप्ताह से 25 जुलाई तक बोई जाती है। जहां सिंचाई की सुविधा हो वहां फसल जून के अंतिम सप्ताह में या मानसून आने के बाद भी उगाई जा सकती है। गर्मी के दिनों में इसे मार्च के महीने में उगाया जा सकता है। बुवाई करें समय पंक्ति से पंक्ति की दुरी 45 CM रखें और पीज से बीज की दुरी 30 CM रखें।

बीज उपचार

फसल को मिट्टी जनित रोग से बचाने के लिए बीज को 2 ग्राम थीरम और 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति किलो बीज से उपचारित किया जा सकता है। बीजों को बोने से 2-3 दिन पहले उपचारित किया जा सकता है। कवकनाशी बीज उपचार के बाद बीज को उपयुक्त राइजोबियम कल्चर @ 600 ग्राम / 12-15 किलोग्राम बीज के साथ टीका लगाया जाता है।

फसल में सिंचाई प्रबंधन

वैसे तो ग्वार की फसल को अधिक पानी की आश्यकता नहीं होती है। क्योंकी ये एक खरीफ की फसल है। इस मौसम में समय समय पर बारिश होती रहती है जिससे फसल में पानी की कमी पूरी हो जाती है। अगर लंबे समय तक बारिश नहीं होती है तो फसल में सिंचाई अवश्य करें। फसल में जीवन रक्षक सिंचाई विशेष रूप से फूल आने और बीज बनने की अवस्था में दी जानी चाहिए।

फसल में उर्वरक और पोषक तत्व प्रबंधन

बुवाई से कम से कम 15 दिन पहले लगभग 2.5 टन कम्पोस्ट या FYM का प्रयोग करना चाहिए। एफवाईएम या कम्पोस्ट का प्रयोग मिट्टी की जल धारण क्षमता में सुधार करने और पौधों की वृद्धि के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्वों की आपूर्ति के लिए उपयोगी है।

दलहनी फसल होने के कारण ग्वार फली की प्रारंभिक वृद्धि अवधि के दौरान शुरुआती खुराक के रूप में नाइट्रोजन की थोड़ी मात्रा की आवश्यकता होती है। ग्वार की फसल के लिए प्रति हेक्टेयर 10-15 किग्रा नाइट्रोजन और 20 किग्रा फास्फोरस की आवश्यकता होती है।

नाइट्रोजन एवं फास्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई के समय देना चाहिए।
उर्वरक को बीज से कम से कम 5 सेंटीमीटर नीचे रखना चाहिए। उपयुक्त राइजोबियम स्ट्रेन और फॉस्फोरस सॉल्यूबिलाइजिंग बैक्टीरिया (PSB) के साथ बीजों का उपचार फसल की उपज बढ़ाने के लिए फायदेमंद होता है।

फसल में खरपतवार प्रबंधन

ग्वार फली में बुवाई के 20-25 और 40-45 दिनों के बाद दो निराई – गुढ़ाई फसल को खरपतवार मुक्त रखने के लिए पर्याप्त होती है। हालांकि, कभी-कभी श्रम उपलब्ध न होने के कारण रासायनिक खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है।

फसल के अंकुरण से पहले पेंडीमिथालिन 250 GRAM/एकड़ ए.आई. उभरने से पहले छिड़काव करें और फसल के उभरने के बाद उपयोग के लिए इमेज़ेटापायर 20 ग्राम/एकड़ ए.आई. 150 लीटर पानी में बुवाई के 20-25 दिनों पर दिया जाता है जो खरपतवार नियंत्रण के लिए उपयुक्त होता है।

फसल की कटाई

दाने वाली फसल के लिए, कटाई तब की जाती है जब पत्तियाँ सूख जाती हैं और 50% फली भूरी और सूखी हो जाती है। कटाई के बाद फसल को धूप में सुखाना चाहिए फिर थ्रेशिंग मैन्युअल रूप से या थ्रेशर द्वारा किया जाता है। चारे की फसल के लिए, फसल को फूल अवस्था में काटते समय।

एक एकड़ में 6 – 8 क्विंटल बीज की उपज होती है। एक एकड़ में 100 क्विंटल तक हरे चारे की उपज हो जाती है।

मक्का की खेती करने के लिए किसान इन किस्मों का चयन कर अच्छा मुनाफा उठा सकते हैं

आज हम आपको इस लेख में मक्के की खेती के लिए चयन की जाने वाली बेहतरीन किस्मों के बारे में बताने वाले हैं। क्योंकि मक्के की अच्छी पैदावार लेने के लिए उपयुक्त मृदा व जलवायु के साथ-साथ अच्छी किस्म का होना भी बेहद महत्वपूर्ण होता है।

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि खरीफ सीजन में मक्का उत्पादक कृषकों के लिए खुशखबरी है। आज हम मक्का उत्पादक किसानों के लिए मक्के की ऐसी प्रजाति लेकर आए हैं, जिसकी खेती से किसान कम खर्चे में अधिक लाभ उठा सकते हैं। साथ ही, उनको मक्के की इन प्रजातियों की सिंचाई भी कम करनी पड़ेगी। मुख्य बात यह है, कि विगत वर्ष ICAR का लुधियाना में मौजूद भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान द्वारा इन किस्मों को विकसित किया था। इन किस्मों में रोग प्रतिरोध क्षमता काफी ज्यादा है एवं पौष्टिक तत्वों की भी प्रचूर मात्रा है। यदि किसान भाई मक्के की इन प्रजातियों की खेती करते हैं, तो उनको अच्छी-खासी उपज मिलेगी।

मक्का की IMH-224 किस्म

IMH-224 किस्म: IMH-224 मक्के की एक उन्नत प्रजाति है। इसको वर्ष 2022 में भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित किया गया था। यह एक प्रकार की मक्के की संकर प्रजाति होती है। अब ऐसे में झारखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार और ओडिशा के किसान खरीफ सीजन में इसकी बिजाई कर सकते हैं। क्योंकि IMH-224 एक वर्षा आधारित मक्के की प्रजाति होती है। IMH-224 मक्के की किस्म में सिंचाई करने की जरूरत नहीं होती है। बारिश के जल से इसकी सिंचाई हो जाती है। इसका उत्पादन 70 क्विंल प्रति हेक्टेयर के करीब होता है। मुख्य बात यह है, कि इसकी फसल 80 से 90 दिनों के समयांतराल में तैयार हो जाती है। रोग प्रतिरोध होने के कारण से इसके ऊपर चारकोल रोट, मैडिस लीफ ब्लाइट एवं फुसैरियम डंठल सड़न जैसे रोगों का प्रभाव नहीं पड़ता है।

मक्का की IQMH 203 किस्म

IQMH 203 किस्म: मक्के की इस प्रजाति को वैज्ञानिकों द्वारा वर्ष 2021 में इजात किया गया था। यह एक प्रकार की बायोफोर्टिफाइड प्रजाति होती है। वैज्ञानिकों ने राजस्थान, गुजरात, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के मक्का उत्पादक किसानों को ध्यान में रखते हुए विकसित किया था। IQMH 203 प्रजाति 90 दिनों की समयावधि में पककर कटाई हेतु तैयार हो जाती है। जैसा कि हम जानते हैं, कि मक्का एक खरीफ फसल है। कृषक मक्का की IQMH 203 किस्म का उत्पादन खरीफ सीजन में कर सकते हैं। इसके अंदर प्रोटीन इत्यादि पोषक तत्व भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। इतना ही नहीं मक्के की इस किस्म को कोमल फफूंदी, चिलोपार्टेलस एवं फ्युजेरियम डंठल सड़न जैसे रोगों से भी अधिक क्षति नहीं पहुँचती है।

मक्का की PMH-1 LP किस्म

PMH-1 LP किस्म: पीएमएच-1 एलपी मक्के की एक कीट और रोग रोधी प्रजाति है। मक्का की इस प्रजाति पर चारकोल रोट एवं मेडिस लीफ ब्लाइट रोगों का प्रभाव बेहद कम होता है। पीएमएच-1 एलपी किस्म को दिल्ली, उत्तराखंड, हरियाणा एवं पंजाब के किसानों को ध्यान में रखते हुए इजात किया गया है। यदि इन प्रदेशों में किसान इसका उत्पादन करते हैं, तो प्रति हेक्टेयर 95 क्विंटल की पैदावार मिल सकती है। मक्का की खेती से किसान भाई अच्छी-खासी आय कर सकते हैं। मक्का की खेती कृषकों के किए काफी फायदेमंद साबित होती है।

BRAJDHAM

BRAJDHAM
FARMS & RESORT

Best place to Celebrate Your Day

www.brajdhamfarms.com

नींबू की खेती से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

नींबू की खेती अधिकांश किसान मुनाफे के तौर पर करते हैं। नींबू के पौधे एक बार अच्छी तरह विकसित हो जाने के बाद कई सालों तक उत्पादन देते है। यह कम लागत में ज्यादा मुनाफे देने वाली फसलों में से एक है। बतादें, कि नींबू के पौधों को सिर्फ एक बार लगाने के उपरांत 10 साल तक उत्पादन लिया जा सकता है। पौधरोपण के पश्चात सिर्फ इनको देखरेख की जरूरत पड़ती है। इसका उत्पादन भी प्रति वर्ष बढ़ता जाता है। भारत विश्व का सर्वाधिक नींबू उत्पादक देश है। नींबू का सर्वाधिक उपयोग खाने के लिए किया जाता है। खाने के अतिरिक्त इसे अचार बनाने के लिए भी इस्तेमाल में लिया जाता है। आज के समय में नींबू एक बहुत ही उपयोगी फल माना जाता है, जिसे विभिन्न कॉस्मेटिक कंपनियां एवं फार्मासिटिकल कंपनियों द्वारा इस्तेमाल किया जाता है।

नींबू का पौधा झाड़ीनुमा आकार का होता है, जिसमें कम मात्रा में शाखाएं विघमान रहती हैं। नींबू की शाखाओ में छोटे-छोटे काँटे भी लगे होते है। नींबू के पौधों में निकलने वाले फूल सफेद रंग के होते हैं, लेकिन अच्छी तरह तैयार होने की स्थिति में इसके फूलों का रंग पीला हो जाता है। नींबू का स्वाद खट्टा होता है, जिसमें विटामिन ए, बी एवं सी की मात्रा ज्यादा पाई जाती है। बाजारों में नींबू की सालभर काफी ज्यादा मांग बनी रहती है। यही वजह है, कि किसान भाई नींबू की खेती से कम लागत में अच्छी आमदनी कर सकते हैं।

नींबू की खेती के लिए उपयुक्त मृदा

नींबू की खेती के लिए सबसे अच्छी बलुई दोमट मृदा मानी जाती है। साथ ही, अम्लीय क्षारीय मृदा एवं लेटराइट में भी इसका उत्पादन सहजता से किया जा सकता है। उपोष्ण कटिबंधीय एवं अर्ध शुष्क जलवायु वाले इलाकों में नींबू की पैदावार ज्यादा मात्रा में होती है। भारत के पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश, बिहार और राजस्थान राज्यों के विभिन्न इलाकों में नींबू की खेती काफी बड़े क्षेत्रफल में की जाती है। ऐसे इलाके जहां पर ज्यादा वक्त तक ठंड बनी रहती हैं, ऐसे क्षेत्रों में नींबू का उत्पादन नहीं करनी चाहिए। क्योंकि, सर्दियों के दिनों में गिरने वाले पाले से इसके पौधों को काफी नुकसान होता है।

नींबू में रोग एवं उनका नियंत्रण

कागजी नींबू

नींबू की इस किस्म का भारत में अत्यधिक मात्रा में उत्पादन किया जाता है। कागजी नींबू के अंदर 52% प्रतिशत रस की मात्रा विघमान रहती है | कागजी नींबू को व्यापारिक तौर पर नहीं उगाया जाता है।

प्रमालिनी

प्रमालिनी किस्म को व्यापारिक तौर पर उगाया जाता है। इस प्रजाति के नींबू गुच्छो में तैयार होते हैं, जिसमें कागजी नींबू के मुकाबले 30% ज्यादा उत्पादन अर्जित होता है। इसके एक नींबू से 57% प्रतिशत तक रस अर्जित हो जाता है।

विक्रम किस्म का नींबू

नींबू की इस किस्म को ज्यादा उत्पादन के लिए किया जाता है। विक्रम किस्म के पौधों में निकलने वाले फल गुच्छे के स्वरुप में होते हैं, इसके एक गुच्छे से 7 से 10 नींबू अर्जित हो जाते हैं। इस किस्म के पौधों पर सालभर नींबू देखने को मिल जाते हैं। पंजाब में इसको पंजाबी बारहमासी के नाम से भी मशहूर है। साथ ही, इसके अतिरिक्त नींबू की चक्रधर, पी के एम-1, साई शरबती आदि ऐसी किस्मों को ज्यादा रस और उत्पादन के लिए उगाया जाता है।

नींबू के खेत की तैयारी इस तरह करें

नींबू का पौधा पूरी तरह से तैयार हो जाने पर बहुत सालों तक उपज प्रदान करता है। इस वजह से इसके खेत को बेहतर ढंग से तैयार कर लेना चाहिए। इसके लिए सर्वप्रथम खेत की बेहतर ढ़ंग से मृदा पलटने वाले हलो से गहरी जुताई कर देनी चाहिए। क्योंकि, इससे खेत में उपस्थित पुरानी फसल के अवशेष पूरी तरह से नष्ट हो जाते है।

इसके पश्चात खेत में पुरानी गोबर की खाद को डालकर उसकी रोटावेटर से जुताई कर मृदा में बेहतर ढ़ंग से मिला देना चाहिए। खाद को मृदा में मिलाने के पश्चात खेत में पाटा लगाकर खेत को एकसार कर देना चाहिए। इसके उपरांत खेत में नींबू का पौधरोपण करने के लिए गड्ढों को तैयार कर लिया जाता है।

नींबू पोधरोपण का उपयुक्त समय एवं विधि

नींबू का पौधरोपण पौध के तौर पर किया जाता है। इसके लिए नींबू के पौधों को नर्सरी से खरीद लेना चाहिए। ध्यान दने वाली बात यह है, कि गए पौधे एक माह पुराने एवं पूर्णतय स्वस्थ होने चाहिए। पौधों की रोपाई के लिए जून और अगस्त का माह उपयुक्त माना जाता है। बारिश के मौसम में इसके पौधे काफी बेहतर ढ़ंग से विकास करते हैं। पौधरोपण के पश्चात इसके पौधे तीन से चार साल उपरांत उत्पादन देने के लिए तैयार हो जाते हैं। नींबू का पौधरोपण करने के लिए खेत में तैयार किये गए गड्ढों के बीच 10 फीट का फासला रखा जाता है, जिसमें गड्ढो का आकार 70 से 80 CM चौड़ा एवं 60 CM गहरा होता है। एक हेक्टेयर के खेत में लगभग 600 पौधे लगाए जा सकते हैं।

नींबू के पौधों को ज्यादा सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती है। वह इसलिए क्योंकि नींबू का पौधरोपण बारिश के मौसम में किया जाता है। इस वजह से उन्हें इस दौरान ज्यादा सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इसके पौधों की सिंचाई नियमित समयांतराल के अनुरूप ही करें। सर्दियों के मौसम में इसके पौधों को 10 से 15 दिन के अंतराल में पानी देता होता है। इससे ज्यादा पानी देने पर खेत में जलभराव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, जो कि पौधों के लिए अत्यंत हानिकारक साबित होती है।

नींबू की खेती में लगने वाले कीट

रस चूसक कीट

सिटरस सिल्ला, सुरंग कीट एवं चेपा की भांति के कीट रोग शाखाओं एवं पत्तियों का रस चूसकर उनको पूर्णतय नष्ट कर देते हैं। बतादें, कि इस प्रकार के रोगों से बचाव करने के लिए पौधों पर मोनोक्रोटोफॉस की समुचित मात्रा का छिड़काव किया जाता है। इसके अलावा इन रोगो से प्रभावित पौधों की शाखाओं को काटकर उन्हें अलग कर दें।

काले धब्बे

नींबू की खेती में काले धब्बे का रोग नजर आता है। बतादें, कि काला धब्बा रोग से ग्रसित नींबू के ऊपर काले रंग के धब्बे नजर आने लगते हैं। शुरआत में पानी से धोकर इस रोग को बढ़ने से रोक सकते हैं। अगर इस रोग का असर ज्यादा बढ़ जाता है, तो नींबू पर सलेटी रंग की परत पड़ जाती है। इस रोग से संरक्षण करने हेतु पौधों पर सफेद तेल एवं कॉपर का घोल बनाकर छिड़काव किया जाता है।

नींबू में जिंक और आयरन की कमी होने पर क्या करें

नींबू के पौधों में आयरन की कमी होने की स्थिति में पौधों की पत्तियां पीले रंग की पड़ जाती हैं। जिसके कुछ वक्त पश्चात ही पत्तियां सूखकर गिर जाती हैं और पौधा भी आहिस्ते-आहिस्ते सूखने लगती है। नींबू के पौधों को इस किस्म का रोग प्रभावित ना करे। इसके लिए पौधों को देशी खाद ही देनी चाहिए। इसके अलावा 10 लीटर जल में 2 चम्मच जिंक की मात्रा को घोलकर पौधों में देनी होती है।

नींबू की कटाई, उत्पादन और आय

नींबू के पौधों पर फूल आने के तीन से चार महीने बाद फल आने शुरू हो जाते हैं। इसके उपरांत पौधों पर लगे हुए नींबू को अलग कर लिया जाता है। नींबू की उपज गुच्छो के रूप में होती है, जिसके चलते इसके फल भिन्न-भिन्न समय पर तुड़ाई हेतु तैयार होते है। तोड़े गए नीबुओं को बेहतरीन ढंग से स्वच्छ कर क्लोरीनेटड की 2.5 GM की मात्रा एक लीटर जल में डालकर घोल बना लें। इसके पश्चात इस घोल से नीबुओं की साफ-सफाई करें। इसके पश्चात नीबुओं को किसी छायादार स्थान पर सुखा लिया जाता है। नींबू का पूरी तरह विकसित पौधा एक साल में लगभग 40 KG की उपज दे देता है। एक हेक्टेयर के खेत में लगभग 600 नींबू के पौधे लगाए जा सकते हैं। इस हिसाब से किसान भाई एक वर्ष की उपज से 3 लाख रुपए तक की आमदनी सुगमता से कर सकते हैं।

शकरकंद की खेती से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

शकरकंद की फसल को कंदीय वर्ग में स्थान दिया गया है। भारत में शकरकंद की खेती अपना प्रमुख स्थान रखती है। भारत में शकरकंद की खेत का क्षेत्रफल प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। किसान आधुनिक ढंग से शकरकंद की खेती कर के अच्छा उत्पादन कर बेहतरीन आमदनी कर रहे हैं। शकरकंद की खेती व्यापारिक दृष्टिकोण से भी बेहद फायदेमंद है।

यदि आप शकरकंद की खेती करना चाहते हैं एवं शकरकंद की खेती के आधुनिक तरीके जानना चाहते हैं। तो यह आर्टिकल आपके लिए काफी मददगार साबित होगा। क्योंकि शकरकंद की खेती कब और कैसे की जाती है, इसके लिए उपयुक्त जलवायु, मिट्टी, खाद व उर्वरक क्या हैं। शकरकंद की खेती के लिए कितना पीएच मान होना चाहिए और शकरकंद की रोपाई कैसे करें आदि की जानकारी इस लेख में मिलेगी।

शकरकंद की फसल के लिए भूमि, जलवायु एवं उपयुक्त समय

शकरकंद की खेती से बेहतरीन पैदावार लेने के लिए समुचित जल निकासी वाली और कार्बनिक तत्वों से युक्त दोमट अथवा चिकनी दोमट भूमि सबसे अच्छी मानी गई है। शकरकंद की फसल का बेहतरीन उत्पादन लेने के लिए मिट्टी का पी. एच. 5.8 से 6.7 के मध्य होना चाहिए।

शकरकंद की खेती के लिए शीतोष्ण और समशीतोष्ण जलवायु अनुकूल मानी जाती है। शकरकंद की खेती के लिए सर्वोत्तम तापमान 21 से 27 डिग्री के मध्य होना चाहिए। शकरकंद के लिए 75 से 150 सेंटीमीटर वर्षा अनुकूल मानी जाती है।

शकरकंद की खेती मुख्यतः वर्षा ऋतु में जून से अगस्त में की जाती है। रबी के मौसम में अक्टूबर से जनवरी में सिंचाई के साथ की जाती है।

उत्तर भारत में शकरकन्द की खेती रबी, खरीफ व जायद तीनों मौसम में की जाती है। खरीफ ऋतु में इसकी खेती सर्वाधिक की जाती है। खरीफ सीजन में 15 जुलाई से 30 अगस्त तक शकरकंद की लताओं को लगा देना चाहिए। सिंचाई की सुविधा सहित रबी (अक्टूबर से जनवरी) के मौसम में भी शकरकंद की खेती की जाती है।

जायद ऋतुओं में, इसकी लताओं को लगाने का वक्त फरवरी से मई तक का होता है। इस मौसम में खेती का प्रमुख उद्देश्य लताओं को जीवित रखना होता है। जिससे कि खरीफ की खेती में उनका इस्तेमाल हो सके। लताओं के अतिरिक्त शकरकन्द के कन्द को लगाकर भी सुनहरी शकरकन्द की खेती की जा सकती है।

शकरकंद की उन्नत किस्में कौन-कौन सी होती हैं

गौरी- शकरकंद की इस किस्म को साल 1998 में इजात किया गया था। गौरी किस्म को तैयार होने में लगभग 110 से 120 दिन का समय लग जाता है। शकरकंद की इस किस्म के कंद का रंग बैंगनी लाल होता है। गौरी किस्म की शकरकंद से औसतन उत्पादन तकरीबन 20 टन तक हो जाती है। इस किस्म को खरीफ एवं रवी के मौसम में उत्पादित किया जाता है।

श्री कनका- शकरकंद की श्री कनका किस्म को साल 2004 में विकसित किया गया था। इस किस्म के कन्द का छिलका दूधिया रंग का होता है। इसको काटने पर पीले रंग का गूदा नजर आता है। यह 100 से 110 दिन के समयांतराल में पककर तैयार होने वाली किस्म है। इस किस्म का उत्पादन 20 से 25 टन प्रति हेक्टेयर है।

एस टी-13 – शकरकंद की इस किस्म का गूदा बैगनी काले रंग का होता है।

जानकारी के लिए बतादें, कि कंद को काटने पर गूदा बिल्कुल चुकंदर जैसे रंग का नजर आता है। इस किस्म के अंदर बीटा केरोटिन की मात्रा जीरो होती है। लेकिन, एंथोसायनिन (90 मिली ग्राम प्रति 100 ग्राम) वर्णक की वजह से इसका रंग बैंगनी-काला होता है। साथ ही, मिठास भी काफी कम होती हैं। लेकिन, एंटीऑक्सीडेन्ट एवं आयु बढ़ाने के लिए अच्छी साबित होती है। यह 110 दिन की समयावधि में पककर तैयार हो जाती है। साथ ही, इसका उत्पादन 14 से 15 टन प्रति हैक्टर होता है।

एस टी- 14 – शकरकंद की यह किस्म साल 2011 में इजात की गई थी। शकरकंद की इस किस्म के कंद का रंग थोड़ा पीला वहीं गूदे का रंग हरा पीला होता है। इस किस्म के अंदर उच्च मात्रा में वीटा केरोटिन (20 मिली ग्राम प्रति 30 ग्राम) विघमान रहता है। इस किस्म को तैयार होने में 110 दिन का वक्त लगता है। यदि इसकी उपज की बात की जाए तो वह 15 से 71 टन प्रति हेक्टेयर होती है। आज तक के परीक्षण में इस किस्म को सबसे अच्छा पाया गया है।

सिपस्वा 2- शकरकंद की इस किस्म का उत्पादन अम्लीय मृदा में भी किया जा सकता है। इनमें केरोटिन की प्रचूर मात्रा होती है। शकरकंद की यह किस्म 110 दिन की समयावधि में पककर तैयार हो जाती है। इसकी उपज 20 से 24 टन प्रति हेक्टेयर है।

इन किस्मों अतिरिक्त शकरकंद की और भी कई सारी किस्में जैसे कि – पूसा सफेद, पूसा रेड, पूसा सुहावनी, एच- 268, एस- 30, वर्षा और कोनकन, अशवनी, राजेन्द्र शकरकंद- 35, 43 और 51, करन, भुवन संकर, सीओ- 1, 2 और 3, और जवाहर शकरकंद- 145 और संकर किस्मों में एच- 41 और 42 आदि हैं। किसान भाई अपने क्षेत्र के अनुरूप किस्म का चयन करें।

शकरकंद की फसल में खरपतवारों की रोकथाम

शकरकंद की फसल में खरपतवार की दिक्कत ज्यादा नहीं होती है। वैसे खरपतवारों की समस्याएं आरंभिक दौर में ही आती हैं, जब लताएं पूरे खेत में फैली हुई नहीं रहती। यदि शकरकंद की लताओं का फैलाव पूरे खेत में हो जाता हैं, तो खरपतवार का जमाव नहीं हो पाता है। यदि खेत में कुछ खरपतवार उगते हैं, तो मिट्टी चढ़ाते वक्त उखाड़ फेंकने चाहिऐं।

शकरकंद की खेती के लिए खाद एवं उर्वरक

शकरकंद की खेती में कार्बनिक खाद् समुचित मात्रा में डालें, जिससे मृदा की उत्पादकता बेहतर व स्थिर बनी रहती है। केन्द्रीय कंद अनुसंधान संस्थान द्वारा संस्तुति की गई रिपोर्ट के अनुसार 5 से 8 टन सड़ी हुई गोबर की खाद खेत की पहली जुताई के दौरान ही भूमि में मिला देनी चाहिए।

रासायनिक उर्वरकों में 50 किलोग्राम नाइट्रोजन और 25 किलोग्राम फॉस्फोरस तथा 50 किलोग्राम पोटाश की जरूरत प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करनी चाहिए। नाइट्रोजन की आधी मात्रा फॉस्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा शुरू में लता लगाने के दौरान ही जड़ों में देनी चाहिए। शेष नाइट्रोजन को दो भागों में बांटकर एक हिस्सा 15 दिन में दूसरा हिस्सा 45 दिन टाप ड्रेसिंग के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए।

जानकारी के लिए बतादें, कि अत्यधिक अम्लीय जमीन में 500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से चूने का इस्तेमाल कंद विकास के लिए बेहतर रहता है। इनके अतिरिक्त मैगनीशियम सल्फेट, जिंकसल्फेट और बोरॉन 25:15:10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से इस्तेमाल करने पर कन्द फटने की दिक्कत नहीं आती हैं। वहीं समान आकार के कन्द लगते हैं।

फल

अमरूद की खेती को बढ़ावा देने के लिए इस राज्य में मिल रहा 50 प्रतिशत अनुदान

बेगूसराय जनपद में किसान केला, नींबू, पपीता और आम की खेती काफी बड़े पैमाने पर करते हैं। परंतु, अमरूद की खेती करने वाले किसान भाइयों की तादात आज भी बहुत कम है
।
बिहार राज्य में किसान दलहन, तिलहन, धान और गेहूं के साथ-साथ बागवानी फसलों की भी बड़े पैमाने पर खेती करते हैं। दरभंगा, हाजीपुर, मुंगेर, मधुबनी, पटना, गया और नालंदा समेत तकरीबन समस्त जनपदों में किसान फल और सब्जियों का उत्पादन कर रहे हैं। विशेष कर इन जनपदों में किसान सेब, आलू, भिंडी, लौकी, आम, अमरूद, केला और लीची की खेती बड़े स्तर पर की जाती है। परंतु, वर्तमान में उद्यान विभाग द्वारा बेगूसराय जनपद में अमरूद का क्षेत्रफल बढ़ाने के लिए शानदार योजना तैयार की है। इस योजना के अंतर्गत अमरूद की खेती चालू करने वाले उत्पादकों को मोटा अनुदान दिया जाएगा।

केवल इतनी डिसमिल भूमि वाले किसान उठा पाएंगे लाभ

मीडिया एजेंसियों के अनुसार, मुख्यमंत्री बागवानी मिशन योजना के अंतर्गत बेगूसराय जनपद में अमरूद की खेती करने वाले किसान भाइयों को 50 प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा। मुख्य बात यह है, कि इस योजना के अंतर्गत जनपद में 5 हेक्टेयर भूमि पर अमरूद की खेती की जाएगी। जिन किसान भाइयों के पास न्यूनतम 25 डिसमिल भूमि है, वह अनुदान का फायदा प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए कृषकों को कृषि विभाग की आधिकारिक वेवसाइट पर जाकर आवेदन करना पड़ेगा।

अमरुद उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए 40 प्रतिशत अनुदान

बतादें, कि बेगूसराय जनपद में किसान केला,नींबू, पपीता और आम की बड़े स्तर पर खेती करते हैं। लेकिन, जनपद में अमरूद की खेती करने वाले कृषकों की तादात आज भी जनपद में बेहद कम होती है। यही कारण है, कि कृषि विभाग द्वारा मुख्यमंत्री बागवानी मिशन योजना के अंतर्गत जनपद में अमरूद की खेती का क्षेत्रफल में बढ़ोत्तरी करने की योजना बनाई और किसानों को 50 प्रतिशत अनुदान देने का फैसला लिया है। किसान रामचंद्र महतो ने कहा है, कि यदि सरकार अनुदान प्रदान करती है, तो वह अमरूद की खेती अवश्य करेंगे।

बेगूसराय में कितने अमरुद लगाने का लक्ष्य तय किया गया है

साथ ही, जिला उद्यान पदाधिकारी राजीव रंजन ने कहा है, कि सरदार अमरूद एवं इलाहाबादी सफेदा जैसी प्रजातियों के पौधे कृषकों को अनुदान पर मुहैय्या कराए जाऐंगे। उनका कहना है, कि अमरूद के बाग में 3×3 के फासले पर एक पौधा लगाया जाता है। यदि किसान भाई एक हेक्टेयर भूमि में खेती करेंगे तो उनको 1111 अमरूद के पौधे लगाने होंगे। साथ ही, बेगूसराय जनपद में 5555 अमरूद के पौधे लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

कीवी की खेती से प्रति हेक्टेयर कितने लाख की आमदनी की जा सकती है

भारत में किसान सबसे ज्यादा कीवी की एबॉट, एलीसन, बूरनो, मोंटी, टुमयूरी और हेवर्ड प्रजाति की खेती करते हैं। क्योंकि, यह प्रजातियां यहां की जलवायु के अनुकूल हैं।

कीवी एक विदेशी फल है। परंतु, वर्तमान में भारत के अंदर भी इसकी खेती चालू हो चुकी है। कीवी का सेवन करने से शरीर को भरपूर मात्रा में विटामिन एवं पोषक तत्व प्राप्त होते हैं। कीवी एक एंटी-ऑक्सीडेंट एवं एंटी-इंफ्लेमेटरी फल है। इसको खाने से शारीरिक रोग प्रतिरोध क्षमता बढ़ जाती है। इसमें राइबोफ्लेविन, बीटा कैरोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फॉस्फरोस, कॉपर, विटामिन बी, विटामिन सी, कैल्शियम, फाइबर, पोटैशियम और जिंक समेत विभिन्न पोषक तत्व पाए जाते हैं। यही कारण है, कि डेंगू से प्रभावित मरीजों को चिकित्सक कीवी खाने की राय देते हैं।

कीवी की इन राज्यों में बड़े पैमाने पर खेती की जाती है

दरअसल, कीवी चीन की मुख्य फसल है। परंतु, भारत में अब कीवी की खेती चालू हो चुकी है। केरल, सिक्किम, मेघालय, अरूणाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, नागालैंड और उत्तराखंड में किसान बड़े पैमाने पर इसकी खेती कर रहे हैं। यदि किसान भाई कीवी की खेती करते हैं, तो कम वक्त में ज्यादा मुनाफा उठा सकते हैं। ऐसी स्थिति में कीवी का भाव काफी ज्यादा होता है। यह सेब एवं संतरा की तुलना में बेहद महंगा बिकता है। इसके बावजूद भी इसकी बिक्री काफी ज्यादा होती है।

कीवी की खेती किस तरह करें

जैसा कि उपरोक्त में बताया भारत में किसान सबसे ज्यादा कीवी की एलीसन, बूरनो, मोंटी, टुमयूरी, हेवर्ड और एबॉट किस्म की खेती करते हैं। क्योंकि यह प्रजातियां यहां की जलवायु के अनुकूल हैं। कीवी की खेती के लिए सर्दी का मौसम सबसे उपयुक्त होता है। जनवरी माह में इसके पौधे लगाने पर विकास बेहतर होता है। यदि किसान भाई कीवी की खेती करना चाहते हैं, तो इसके लिए बलुई रेतीली दोमट मिट्टी अच्छी होती है। साथ ही, इसके बाग के अंदर इसके खेत में जल निकासी की उत्तम व्यवस्था होनी चाहिए। इससे वृक्षों पर फल शीघ्रता से आने चालू होते हैं।

कीवी की खेती से वर्ष में कितने लाख का मुनाफा हो सकता है

यदि किसान भाई चाहें, तो अपने बाग में बडिंग विधि अथवा ग्राफ्टिंग विधि से भी कीवी के पौधे रोप सकते हैं। इसके लिए सर्वप्रथम खेत में गड्ढे खोदने पड़ेंगे। इसके पश्चात गड्ढों में लकड़ी का बुरादा, सड़ी खाद, कोयले का चूरा, बालू और मिट्टी डाल दें। इसके पश्चात चीकू के पौधे की बिजाई करें। इससे आपको उत्तम उत्पादन मिलेगा। कीवी की विशेष बात यह है, कि कीवी के फल शीघ्रता से खराब नहीं होते हैं। तोड़ाई करने के पश्चात आप इसके फल को 4 माह तक प्रिजर्व कर के रख सकते हैं। अगर आप एक हेक्टेयर में कीवी की खेती करते हैं, तो प्रतिवर्ष 12 से 15 लाख रुपये तक की आमदनी होगी।

इस राज्य में जामुन की खेती करने पर मिल रहा 50 प्रतिशत अनुदान

जामुन को एक औषधीय फल माना जाता है। इससे विभिन्न प्रकार की औषधियां भी निर्मित की जाती हैं। मुख्य बात यह है, कि जामुन की खेती भी लीची, अमरूद और आम की भांति ही की जाती है।

जामुन का सेवन करना प्रत्येक व्यक्ति को पसंद है। यह एक एंटीऑक्सिडेंट फल है, जिसका सेवन करने से शरीर की इम्युनिटी बढ़ जाती है। इसमें पोटेशियम, विटामिन सी, आयरन और कैल्शियम भरपूर मात्रा में पाया जाता है। यह माना जाता है, कि जामुन का सेवन करने से हड्डियां काफी मजबूत होती हैं। यही वजह है, कि जामुन का भाव आम एवं अमरूद से भी ज्यादा होता है। अगर किसान भाई जामुन की खेती करते हैं, तो अमरूद की तुलना में ज्यादा आमदनी कर सकते हैं। विशेष बात यह है, कि विभिन्न राज्यों में राज्य सरकारें जामुन की खेती करने पर कृषकों को अनुदान भी देती हैं।

यह राज्य सरकार जामुन की खेती पर 50 प्रतिशत अनुदान देती है

फिलहाल, बिहार सरकार जामुन की खेती चालू करने वाले किसान भाइयों को अनुदान दे रही है। बिहार सरकार प्रदेश में जामुन समेत बहुत सारी फसलों का क्षेत्रफल बढ़ाना चाहती है। यही वजह है, कि वह मुख्यमंत्री बागवानी मिशन एवं राष्ट्रीय बागवानी मिशन योजना के अंतर्गत किसानों 50 फीसद अनुदान प्रदान कर रही है। यदि किसान भाई जामुन की खेती करना चाहते हैं, तो कृषि विभाग की आधिकारिक वेबसाइट पर HTTP://HORTICULTURE.BIHAR.GOV.IN पर जाकर अनुदान के लिए आवेदन कर सकते हैं।

जामुन के खेत में समुचित जल निकासी की व्यवस्था होनी चाहिए

जामुन एक औषधीय फल है और इससे विभिन्न प्रकार की दवाइयां भी निर्मित की जाती हैं। विशेष बात यह है, कि जामुन की खेती भी लीची, अमरूद और आम की तरह ही की जाती है। इसके लिए सर्वप्रथम खेत को जोता जाता है। इसके पश्चात पाटा चलाकर खेत को एकसार कर लिया जाता है। यदि आप चाहें, तो इसके खेत में जैविक खाद के तौर पर गोबर का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके उपरांत समान फासले पर जामुन के पौधे लगा सकते हैं। जामुन के खेत में जल निकासी की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

एक हेक्टेयर भूमि में कितने जामुन के पौधे लगाए जा सकते हैं

जामुन के पौधे लगाने पर 4 से 5 साल के अंदर फल आने चालू हो जाते हैं। परंतु, 8 साल के पश्चात पौधे पूरी तरह से पेड़ का रूप धारण कर लेते हैं। इसके उपरांत जामुन का उत्पादन बढ़ जाता है। मतलब कि 8 साल के पश्चात आप जामुन के वृक्ष से 80 से 90 किलो तक फल तुड़ाई कर सकते हैं। यदि आप एक हेक्टेयर में जामुन की खेती करना चाहते हैं, तो 250 से अधिक पौधे लगा सकते हैं। इस प्रकार 8 साल के उपरांत आप 250 जामुन के पेड़ से 20000 किलो तक फल अर्जित कर सकते हैं। फिलहाल, बाजार में जामुन 140 रुपये प्रति किलो बिक रहा है। इस प्रकार आप एक हेक्टेयर भूमि में जामुन का उत्पादन कर 20 लाख रुपये से अधिक की आमदनी कर सकते हैं।

फूल

इस राज्य में गुलाब की खेती से सालाना लाखों का मुनाफा कमा रहा किसान

आज हम आपको एक सफल फूल उत्पादक किसान के बारे में बताने वाले हैं। जो कि गुलाब की खेती करके अच्छी-खासी आमदनी कर रहा है। बतादें, कि महाराष्ट्र के लातूर जनपद में काफी बड़ी संख्या में किसान गुलाब की खेती कर रहे हैं। इन किसानों में से ही एक किसान हैं बाबूराव शामराव सुरवसे। यह पहले पारंपरिक फसलों की खेती किया करते थे। लेकिन, पारंपरिक फसलों की खेती करने से किसान बाबूराम शामराव सुरवसे को अच्छी आय अर्जित नहीं हो पा रही थी। इस वजह से उन्होंने बागवानी की तरफ अपना रुख करके गुलाब की खेती करना शुरू किया।

महाराष्ट्र में बागवानी फसलों के रकबे में काफी वृद्धि हुई है

अधिकांश लोगों की यह धारणा है, कि महाराष्ट्र में किसान केवल गन्ना, कपास, प्याज और सोयाबीन की ही खेती करते हैं। परंतु, इस प्रकार की कोई बात नहीं है। वर्तमान में यहां पर किसान बाकी राज्यों की भांति बागवानी में भी रुची दिखा रहे हैं। महाराष्ट्र में काफी बड़ी तादात में किसान केला, हरी सब्जी, आम और अमरूद की खेती कर रहे हैं।

हालाँकि, विशेष बात यह है कि वर्तमान में बहुत सारे किसानों ने तो फूलों की खेती भी चालू कर दी है, जिससे उन्हें काफी अच्छी कमाई हो रही है। खबरों के अनुसार किसानों ने सरकार की सलाह पर आधुनिक विधि से फूलों की खेती शुरू की है।

पारंपरिक फसलों की जगह शुरू की गुलाब की खेती

मीडिया खबरों के मुताबिक, महाराष्ट्र के लातूर जनपद में बड़ी संख्या में किसान गुलाब का उत्पादन कर रहे हैं। बाबूराव शामराव सुरवसे भी इन्ही किसानों में से एक हैं। इन्होंने पहले पारंपरिक फसलों की खेती की जिसमें प्राकृतिक आपदाओं के की वजह से उनको प्रति वर्ष नुकसान वहन करना पड़ता था। अब ऐसी स्थिति में उन्होंनें 9 एकड़ भूमि में गुलाब की खेती चालू कर दी। इसकी खेती आरंभ करते ही बाबूराव शामराव सुरवसे की तकदीर पूर्णतय बदल गई। अब वह साढ़े 3 लाख रुपये सालाना शुद्ध मुनाफा उठा रहे हैं।

बाबूराव शामराव सुरवसे से गुलाब की खेती सीखने आ रहे अन्य किसान

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि वर्तमान में बाबूराव शामराव सुरवसे से गांव के अन्य किसानों के लिए भी प्रेरणा के स्त्रोत बन चुके हैं। दरअसल, अब उनके पास गांव व आसपास के इलाकों से लोग गुलाब की खेती करने के गुर सीख रहे हैं। बाबूराव शामराव सुरवसे का कहना है, कि उन्होंने 9 एकड़ भूमि पर गुलाब की खेती की है। इसके लिए उन्हें 35 हजार रुपये का खर्चा करना पड़ा है। परंतु, फिलहाल वह फूल विक्रय करके खर्च निकाल कर प्रतिदिन एक हजार रुपये का मुनाफा अर्जित कर रहे हैं। इस प्रकार बाबूराम एक वर्ष में लगभग साढ़े तीन लाख रुपये से ज्यादा की आय कर रहे हैं।

हरियाणा का राजेश भी फूल की खेती से उठा रहा लाखों का मुनाफा

बतादें, कि विभिन्न राज्यों में फूल की खेती करने पर किसानों को बढ़ावा दिया जा रहा है। विगत माह इसी प्रकार की एक खबर हरियाणा में सामने आई थी। जहां पर एक किसान गुलाब की खेती से अमीर हो गया। जानकरी के लिए बतादें, कि हरियाणा के उस किसान का नाम राजेश कुमार है। जो कि पहले गार्ड की नौकरी किया करता था। परंतु, इससे उसके घर का भरण पोषण भी ठीक से नहीं हो पा रहा था। इस वजह से राजेश ने गुलाब की खेती करना शुरू किया था। वर्तमान में राजेश साल में 5 लाख रुपये तक की आमदनी कर रहे हैं।

इस राज्य में किसान फूल की खेती से सालाना लाखों का मुनाफा कमा रहे हैं

करड़ी गांव के किसान विशाल सिंह का कहना है, कि पहले वह मजदूरी किया करते थे। इससे उनके घर का खर्चा भी नहीं चलता था। प्रति माह उनको 12 से 15 हजार रुपये ही मिलते थे।

अधिकांश लोगों का मानना है, कि हिमाचल प्रदेश में किसान केवल सेब की ही खेती किया करते हैं। परंतु, इस प्रकार की कोई बात नहीं है। यहां के किसान बाकी राज्यों के किसानों की भांति मक्का, गेहूं, धान एवं सब्जियों की बड़े पैमाने पर खेती करते हैं। विशेष बात यह है, कि हिमाचल प्रदेश के किसानों ने तो अब फूल की खेती भी चालू कर दी है। इससे किसान भाइयों को अच्छी आमदनी हो रही है। यहां के किसानों द्वारा उगाए गए फूल की मांग संपूर्ण राज्यों में हो रही है।

हिमाचल प्रदेश के किसान फूल की खेती कर रहे हैं

आज तक की खबर के अनुसार, वैसे तो पूरे हिमाचल प्रदेश में किसान फूल की खेती कर रहे हैं। परंतु, हमीरपुर जनपद की बात बिल्कुल अलग है। यहां के करड़ी गांव में 30 किसान फूल की खेती कर रहे हैं। इन किसानों के लिए फूल की खेती ही जीवन यापन का मुख्य स्त्रोत है। वह फूल की खेती से वर्ष में 5 से 6 लाख रुपये की आमदनी कर रहे हैं। साथ ही, उद्यान विभाग का कहना है, कि जनपद में साढ़े 7 हेक्टेयर के रकबे में किसान फूल की खेती कर रहे हैं। यहां के किसान फूल बेचकर अच्छी-खासी आमदनी कर रहे हैं।

किसान फूलों को विक्रय कर कितना मुनाफा कमा रहे हैं

करड़ी गांव के रहने वाले किसान विशाल सिंह का कहना है, कि पहले वह मजदूरी किया करते थे। जिससे उनके घर का खर्च भी नहीं चल पाता था। महीन में उनको 12 से 15 हजार रुपये ही मिलते थे। अब ऐसी स्थिति में विशाल सिंह चंडीगढ़ से नौकरी छोड़ने के उपरांत गांव आ गए एवं फूल की खेती करने की योजना बनाई। इसके लिए उन्होंने विद्यान विभाग के कार्यालय में जाकर जानकारी प्राप्त की और 4 पॉली हाउस का निर्माण करवाया। फिलहाल, वह पॉली हाउस में खेती करके 5 से 6 लाख रुपये की वार्षिक आमदनी कर रहे हैं। साथ ही, इसी गांव के किसान करनैल सिंह का कहना है, कि पहले वह बेरोजगार थे। तभी उद्यान विभाग से फूल की खेती करने की जानकारी प्राप्त हुई। अनुदान पर उन्होंने 4 पॉलीहाउस का निर्माण किया और फूलों की खेती चालू कर दी। वर्तमान में वह फूल बेचकर वर्ष में 5 लाख रुपये की आमदनी कर रहे हैं।

करनैल सिंह कौन-कौन से फूल उगा रहे हैं

किसान करनैल सिंह अपने खेत में गेंदा एवं कारनेशन के फूल उत्पादित कर रहे हैं। उनकी मां का कहना है, कि पहले वह अपने बेटे को फूल की खेती करने से रोक रहे थे। परंतु, उनका अनुमान बिल्कुल गलत सिद्ध हुआ। उनका बेटा फिलहाल फूल की खेती से अच्छी-खासी आमदनी कर रहा है। नादौन उद्यान विभाग की कृषि अधिकारी निशा मेहरा का कहना है, कि जनपद में बहुत सारे किसान फूल की खेती कर रहे हैं। फूल की खेती से बेरोजगार युवा खूब धनवान हो गए हैं। यहां पर उद्यान विभाग किसानों को पॉली हाउस निर्माण के लिए अनुदान भी देता है।

मशीनरी

जानिए SWARAJ 855 FE ट्रैक्टर के नए अवतार के बारे में

किसान भाइयों जैसे की आप जानते है, स्वराज कंपनी के ट्रैक्टर आज कल किसानों द्वारा बहुत पसंद किये जाते है। स्वराज कंपनी का SWARAJ 855 FE ट्रैक्टर किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय बना हुआ है। ये ट्रैक्टर कम डीज़ल की खपत में बेहतरीन काम करने के लिए जाना जाता है। इस ट्रैक्टर में कंपनी ने कई बदलाव किए है जिससे किसानों को फायदा होगा। इस ट्रैक्टर के नए फीचर्स और SWARAJ 855 FE ट्रैक्टर प्राइस को जानने के लिए इस लेख को अंत तक पढ़े।

स्वराज कंपनी के बारे में

स्वराज ट्रैक्टर्स की स्थापना 1974 में आत्मनिर्भर होने और भारत का पहला स्वदेशी ट्रैक्टर विकसित करने के मिशन के साथ की गई थी। आज स्वराज एक तेजी से बढ़ती कंपनी है, ट्रैक्टर और कृषि मशीनरी का एक विस्तृत पोर्टफोलियो है, और भारत में शीर्ष ट्रैक्टर ब्रांडों में मजबूती से खड़ा है। हम विभिन्न खेती की जरूरतों के लिए 15HP से 65HP तक के ट्रैक्टरों की एक श्रृंखला का निर्माण करते हैं, जिसमें आर्द्रभूमि के लिए 4WD ट्रैक्टर और बागवानी के लिए विशेष ट्रैक्टर शामिल हैं।

SWARAJ 855 FE ट्रैक्टर की इंजन क्षमता

SWARAJ 855 FE ट्रैक्टर के इंजन की बात करे तो इस ट्रैक्टर में कंपनी ने 52 हप श्रेणी और 3307CC का इंजन प्रदान किया है। ट्रैक्टर के इंजन में 3 सिलेंडर दिए गए है और ट्रैक्टर का इंजन 2000 आरपीएम जनरेट करता है। SWARAJ 855 FE ट्रैक्टर में एयर क्लीनर की बात करें तो इस ट्रैक्टर में आपको 3 स्टेज वेट एयर क्लियर कंपनी द्वारा प्रदान किया गया है।

ट्रैक्टर फ्रंट डिज़ाइन

SWARAJ 855 FE ट्रैक्टर के फ्रंट की बात करे तो ट्रैक्टर का फ्रंट एक्सएल एडजस्टेबल दिया गया है। ट्रैक्टर में आगे फ्रंट में अंदर की तरफ हैलोजन लाइट दी गयी है जो ट्रैक्टर के लुक को और भी अच्छा बनाता है। फ्रंट में ऊपर की तरफ स्वराज की ब्रांडिंग भी दी गयी है।

स्वराज ट्रैक्टर 855 FE शुद्ध शक्ति प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया एक प्रतिष्ठित ट्रैक्टर है, यह ट्रैक्टर कठिन क्षेत्र संचालन और कठोर मिट्टी के संचालन के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह दिशा नियंत्रण वाल्व, मल्टी स्पीड फॉरवर्ड और रिवर्स पीटीओ, पावर स्टीयरिंग, ड्यल क्लच आदि जैसी सुविधाओं से लैस है। यह एम बी हल, स्ट्रॉ मेकिंग मशीन, रोटावेटर, जेनसेट कंप्रेसर जैसे अनुप्रयोगों के लिए उपयुक्त है।

SWARAJ 855 FE ट्रैक्टर फीचर्स और स्पेसिफिकेशन
ट्रांसमिशन टाइप

SWARAJ TRACTOR 855 ट्रैक्टर में गियरबॉक्स ट्रांसमिशन टाइप कांस्टेंट मैश व स्लाइडिंग का कॉम्बिनेशन दिया गया है। इस ट्रैक्टर के गियर बॉक्स में कंपनी ने बदलाव किया है पहले इस ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स स्पीड के गियरबॉक्स कंपनी प्रदान करती थी। इस में अब बदलाव करके 12 फॉरवर्ड + 3 रिवर्स गियर्स की स्पीड दी गयी है।

स्टीयरिंग टाइप

इस ट्रैक्टर में पावर स्टीयरिंग दिया गया है, पावर स्टीयरिंग होने से ट्रैक्टर को कम से कम जगह में आसानी से मोड़ा जा सकता है। पावर स्टीयरिंग होने से चालक को ट्रैक्टर चलाने में भी आसानी होती है।

ब्रेक

इस ट्रैक्टर में तेल में डूबे ब्रेक कंपनी ने दिया है। ट्रैक्टर में तेल में डूबे ब्रेक होने से ट्रैक्टर को कठिन फिसलन की स्थिति में भी आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है। ब्रेक के साथ ट्रैक्टर का टर्निंग रेडियस काफी बेहतरीन है।

पीटीओ पावर

स्वराज 855 एफई मल्टी स्पीड पीटीओ और सीआर पीटीओ के साथ 540/1000 प्रति घंटे की क्रांतिकारी रफ्तार से आता है। यह खेत में प्रदर्शन को बढ़ाता है। स्वराज ट्रैक्टर 855 पीटीओ एचपी 42.9 एचपी का है।

लिफ्टिंग कैपेसिटी

इस ट्रैक्टर की लिफ्टिंग कैपेसिटी 1700 किलोग्राम है। हाइड्रोलिक्स स्वराज 855 में 60 लीटर का ईंधन टैंक है। स्वराज 855 का माइलेज बहुत अच्छा और परफॉर्म करने वाला है। इस ट्रैक्टर में लाइव हाइड्रोलिक्स: स्थिति नियंत्रण: किसी भी वांछित ऊंचाई पर निचले लिंक को पकड़ने के लिए है,स्वचालित ड्राफ्ट नियंत्रण: एक समान गहराई बनाए रखने के लिए है और मिश्रण नियंत्रण: इष्टतम फ़ील्ड आउटपुट के लिए है।

लिंकेज: श्रेणी- I और II प्रकार के कार्यान्वयन पिनों के लिए उपयुक्त 3 बिंदु लिंकेज इस ट्रैक्टर में कंपनी द्वारा प्रदान किये गए है।

ट्रैक्टर डाइमेंशन्स और वजन

-
- ट्रैक्टर की कुल लंबाई 3614 MM है और ट्रैक्टर की कुल 1802 MM चौड़ाई है।
- SWARAJ 855 FE ट्रैक्टर का व्हीलबेस 2274 MM का इस ट्रैक्टर में है।
- इस ट्रैक्टर का कुल वजन 2410 किलोग्राम है।

टायर

- ट्रैक्टर में कंपनी आगे के टायर 7.50×16 आकर के प्रदान करती है।
- SWARAJ 855 FE ट्रैक्टर में कंपनी पीछे के टायरों में आपको दो विकल्प प्रदान करती है 14.90×28 और 16.90×28 आकार के आप अपने काम के हिसाब से टायरों का चुनाव कर सकते है।

SWARAJ 855 FE ट्रैक्टर PRICE?
SWARAJ 855 FE PRICE ट्रैक्टर की बात करे तो इस ट्रैक्टर की कीमत 8 -8.5 लाख रूपए तक है। कीमत में कई स्थानों पर फरक भी देखने को मिलता है।

स्वराज ट्रैक्टर के बारे में मेरा क्या कहना है?

किसान भाइयों मेरा मानना है की स्वराज 855 FE ट्रैक्टर बहुत ही शक्तिशाली इंजन वाला ट्रैक्टर है। ये ट्रैक्टर खेती में काम करते समय अच्छी खिचाई करता है। हैरो, कल्टीवेटर, रोटावेटर और थ्रेशर जैसे कार्य करने के लिए ये ट्रैक्टर बहुत ही उत्तम है। इस ट्रैक्टर की कीमत कंपनी ने किसानों के बजट के हिसाब से निर्धारित की है। अगर आप मेरी मानते है तो आप इस ट्रैक्टर को खरीद कर अपने खेती को कार्य को उसने से कर सकते है और खेती से अच्छी आय अर्जित कर सकते है।

स्वराज कंपनी ने लॉन्च किया नया ट्रैक्टर स्वराज टारगेट 630

जैसा की किसान भाइयों आप जानते है हाल ही में स्वराज ट्रैक्टर्स ने छोटे, हल्के ट्रैक्टरों की अपनी नई "स्वराज टारगेट " सीरीज़ लॉन्च कर दी है। दशकों से, स्वराज ने देश भर के इलाकों को जीतने के लिए उन्हें अदम्य शक्ति देकर किसानों का दिल जीत लिया है। कंपनी ने 2 जून को इस सीरीज़ को लॉन्च किया है। इस सीरीज़ में कंपनी ने दो ट्रैक्टरों को लॉन्च किया है।

कंपनी ने टारगेट सीरीज़ में 25 और 29 एचपी में दो मॉडल "स्वराज टारगेट 625" और "स्वराज टारगेट 630" ट्रैक्टर लांच किए हैं। कंपनी ने इन दोनों मॉडल के ट्रैक्टरों पर 6 साल यानि की 4500 घंटे की वांरटी देने की घोषणा की है। कंपनी ने स्वराज टारगेट सीरीज़ के इन ट्रैक्टरों की कीमत किसानों के बजट के आधार तक निर्धारित की है।

कंपनी ने भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी को कंपनी के आधिकारिक ब्रांड एंबेसडर के रूप में चुना है। मेरी खेती के हमारे इस लेख में हम आपको स्वराज टारगेट 630 ट्रैक्टर के बारे में सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करने वाले है।

स्वराज टारगेट 630 ट्रैक्टर की इंजन क्षमता क्या है?

स्वराज टारगेट 630 लाइटवेट ट्रैक्टर में कंपनी ने 29 एचपी का 3 सिलिंडर इंजन प्रदान किया है। ट्रैक्टर का इंजन नई तकनिकी से निर्मित है। ट्रैक्टर का इंजन 1331 CC डिस्टपसमेंट के साथ आता है। ट्रैक्टर का इंजन 2800 के रेटेड आरपीएम पर अच्छा प्रदर्शन करता है। ट्रैक्टर के इंजन को ठंडा रखने के लिए इस ट्रैक्टर में लिक्विड कूलिंग सिस्टम दिया गया है।

स्वराज टारगेट 630 ट्रैक्टर की प्रमुख विशेषताएँ

स्वराज टारगेट 630 ट्रैक्टर में मैकेनिकल सिंक्रोमेश टाइप का ट्रांसमिशन दिया गया है। ट्रैक्टर के गियरबॉक्स में 9 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर्स कंपनी प्रदान करती है। मैकेनिकल डिफरेंशियल लॉक के साथ आने वाले इस ट्रैक्टर में बुल गियर रिडक्शन का खास फीचर्स भी है।

स्वराज टारगेट 630 ट्रैक्टर में तेल में डूबे ब्रेक आते है। स्टीयरिंग की बात करे तो ट्रैक्टर में पावर स्टीयरिंग दिया गया है जो छोटे खेतों में बेहतरीन काम करता है।

ट्रैक्टर की वजन उठाने की क्षमता 980 किलोग्राम है। स्वराज टारगेट 630 ट्रैक्टर में ऑटोमेटिक डेप्थ एंड ड्राफ्ट कंट्रोल (ADDC) टाइप की हाइड्रोलिक्स सिस्टम कंपनी द्वारा प्रदान की गई है।

ट्रैक्टर में कैटेगरी 1 में 3 पाइंट हिच के साथ ट्रांसपोर्ट लॉक का ऑप्शन मिलता है। लिफ्टिंग की सेसिंग भी ट्रैक्टर में उत्तम दर्जे की प्रदान की है।

स्वराज टारगेट 630 ट्रैक्टर के टायर्स की बात करे तो ट्रैक्टर के फ्रंट टायर 180/85D12 और रियर टायर 8.30×20 साइज में दिए गए हैं। साथ ही ट्रैक्टर में अगले टायर नैरो रिम के साथ 180/85D 12 के ऑप्शन में भी मिलते है। वहीं रियर टायर में 9.50×20 और 9.50×20 HIGH LUG का ऑप्शन मिलता है।

स्वराज टारगेट 630 ट्रैक्टर पीटीओ चलने के लिए ट्रैक्टर में अलग से स्विच दिया गया है। ट्रैक्टर के पीटीओ की पावर की बात करे तो इस ट्रैक्टर में पीटीओ की पावर 24 एचपी है। पीटीओ स्पीड 540 और 540 इकोनॉमी दी गई है।

स्वराज टारगेट 630 ट्रैक्टर में 4 व्हील ड्राइव पोर्टल टाइप का फ्रंट एक्सल दिया गया है। ट्रैक्टर को 4 व्हील ड्राइव में चलाने के लिए मैकेनिकल लीवर दिया गया है।

स्वराज टारगेट 630 ट्रैक्टर का कुल वजन 975 किलोग्राम है। ट्रैक्टर का ईंधन टैंक 27 लीटर का है।

ट्रैक्टर का व्हीलबेस 1555 MM का है। ट्रैक्टर का टर्निंग रेडियस 21 मीटर है।

ट्रैक्टर की फ्रंट ट्रैक विड्थ 840 MM है और ट्रैक्टर के नैरो वेरिएंट में 755 MM का ऑप्शन मौजूद है। वही रियर ट्रैक विड्थ 797 एमएम है। साथ ही 710 और 910 का ऑप्शन भी मोजूद है। ट्रैक्टर की कुल ऊंचाई 1275 एमएम है।

स्वराज टारगेट 630 ट्रैक्टर की कीमत क्या है ?

स्वराज टारगेट 630 ट्रैक्टर की कीमत 5.35 लाख रुपए है।अलग-अलग जिलों और राज्यों में डीलरों के पास कीमत में थोड़ा फरक भी ढकने को मिल सकता है।

हमारे इस लेख में आपने स्वराज के टारगेट सीरीज के स्वराज टारगेट 630 ट्रैक्टर के बारे में जाना। अगर आप खेतीबाड़ी से जुडी जानकारी प्राप्त करना चाहते है तो हमारी वेबसाइट मेरीखेत डॉट कॉम पर जा कर देख सकते है, हमारी साइट पर खेतीबाड़ी और पशुपालन से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी आपको मिलेंगी। अगर आप इससे जुड़ी वीडियोस देखना चाहते है तो हमारे यूट्यब चैनल मेरीखेती पर जा के देख सकते है।

SONALIKA DI 745 III सिकंदर ट्रैक्टर घर लाए और अपनी खेती के कार्य को आसान बनाए

विदेशों को सबसे ज्यादा एक्सपोर्ट होने वाला ट्रैक्टर ब्रांड सोनालिका ट्रैक्टर्स वर्तमान में भारत में नंबर 1 ट्रैक्टर एक्सपोर्ट ब्रांड है। यह देश में तीसरा सबसे बड़ा ट्रैक्टर निर्माता होने के साथ-साथ दुनिया भर के शीर्ष 5 ट्रैक्टर निर्माताओं में गर्व से खड़ा है। कंपनी अनुकूलित ट्रैक्टर और उपकरण बनाती है जो क्षेत्र के साथ-साथ किसानों की अनुप्रयोग केंद्रित आवश्यकताओं के अनुसार विकसित किए जाते हैं।

सोनालिका कंपनी 20 HP से 120 HP तक के ट्रैक्टर का निर्माण करती है। भारत में किसानों द्वारा सोनालिका कंपनियों के ट्रैक्टरों को बहुत पसंद किया जाता है। आज हम हमारे इस लेख में इसी कंपनी के एक ट्रैक्टर SONALIKA DI 745 III SIKANDER ट्रैक्टर के बारे में सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करने वाले है।

इंजन क्षमता

SONALIKA DI 745 III सिकंदर ट्रैक्टर में कंपनी ने SONALIKA DI 745 III SIKANDER ट्रैक्टर के इंजन की बात करे तो इस ट्रैक्टर में कंपनी ने बड़ा इंजन दिया है जिससे ट्रैक्टर को खेती सम्बंधित उपकरण और सड़क पर ढुलाई के लिए ज्यादा पावर प्रदान करता है। ट्रैक्टर के इंजन की पावर की बात करे तो इस ट्रैक्टर में आपको 50 HP श्रेणी का इंजन मिलता है। इंजन में कंपनी 3 सिलेंडर प्रदान करती है और इंजन की क्यूबिक कैपेसिटी 3065 CC है। SONALIKA DI 745 III SIKANDER ट्रैक्टर का इंजन 1900 आरपीएम पर उत्कर्ष्ट प्रदर्शन प्रदान करता है। ट्रैक्टर के इंजन में फ्यूल इंजेक्शन के लिए BOSH कंपनी का INLINE पंप दिया गया है।

SONALIKA DI 745 III सिकंदर फीचर्स और स्पेसिफिकेशन

- SONALIKA DI 745 III SIKANDER को विशेष रूप से किसान की समृद्धि के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- ट्रैक्टर कुशल कार्यक्षमता के लिए हैवी ड्यटी कॉन्स्टेंट मेश टाइप ट्रांसमशन के साथ और 16F+4R/12F+3R गियरबॉक्स के साथ आता है।
- ट्रैक्टर में आपको सिंगल/डुअल क्लच विकल्प दोनों देखने को मिलते है।
- ये ट्रैक्टर मैकेनिकल/पावर स्टीयरिंग विकल्प के साथ, सुविधा के लिए एर्गोनोमिक सीट के साथ डिजाइन किया गया है।
- ट्रैक्टर के टायर्स की बात करे तो इस ट्रैक्टर में (6.0 – 16) / (7.50 – 16) फ्रंट टायर साइज और – (13.6 – 28) / (14.9 – 28) रियर टायर साइज है।
- DI 745 III तेल में डूबे ब्रेक के साथ बेहतर वाहन नियंत्रण प्रदान करता है।
- इसमें 2000 किलोग्राम की लिफ्ट क्षमता और सर्वोत्तम परिचालन परिणामों के लिए सटीक हाइड्रोलिक्स भी हैं।
- अधिक लिफ्टिंग क्षमता होने से आप इस ट्रैक्टर से ढुलाई जैसे कार्य भी आसानी से कर सकते है।
- इस ट्रैक्टर के पीटीओ की पावर की बात करे तो इस ट्रैक्टर में 40 HP क्षमता वाला पीटीओ कंपनी ने प्रदान किया है।
- ट्रैक्टर में कंपनी 2 साल यानि की 2000 घंटो की वारंटी कंपनी प्रदान करती है।
- हल, कल्टीवेटर, रोटावेटर, वेटलैंड कल्टीवेशन, बुवाई, थ्रेशर, आलू प्लांटर, ढुलाई, मल्चर, स्ट्रॉ रीपर, सुपर सीडर जैसे विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए डिज़ाइन किया गया।
- अत्याधुनिक सोनालिका डीआई 745 III एक प्रौद्योगिकी चमत्कार है जो सबसे उपयुक्त है भारत की फसल और मिट्टी की विशिष्ट परिस्थितियों के लिए, जिससे बेहतर उत्पादकता के साथ अधिक आय अर्जित करने में मदद मिलती है।

ट्रैक्टर की कीमत क्या है ?

सोनालिका सिकंदर 745 III ट्रैक्टर की कीमत 6.95 – 7.32 लाख रुपये सीमा के तहत उपलब्ध है। कई स्थानों पर ट्रैक्टर की कीमत में थोड़ा फरक भी देखने को मिलता है

हमारे इस लेख में आपने SONALIKA DI 745 III सिकंदर ट्रैक्टर के नए मॉडल के बारे में जाना। अगर आप खेतीबाड़ी से जुडी जानकारी प्राप्त करना चाहते है तो हमारी वेबसाइट मेरीखेत डॉट कॉम पर जा कर देख सकते है, हमारी साइट पर खेतीबाड़ी और पशुपालन से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारीआपको मिलेंगी। अगर आप इससे जुड़ी वीडियोस देखना चाहते है तो हमारे यूट्यब चैनल मेरीखेती पर जा के देख सकते है।

बिहार में धान की दो किस्में हुईं विकसित, पैदावार में होगी बढ़ोत्तरी

बेगूसराय जनपद में 17061 हेक्टेयर के करीब बंजर जमीन है। वहीं, 11001 हेक्टेयर पर किसान खेती नहीं करते हैं। अब ऐसी स्थिति में इन जगहों पर किसान राजेंद्र विभूति प्रजाति की खेती कर सकते हैं।

बतादें कि धान बिहार की मुख्य फसल है। नवादा, औरंगाबाद, पटना, गया, नालंदा और भागलपुर समेत तकरीबन समस्त जनपदों में धान की खेती की जाती है। मुख्य बात यह है, कि समस्त जनपदों में किसान मृदा के अनुरूप भिन्न-भिन्न किस्मों के धान की खेती किया करते हैं। सबका भाव एवं स्वाद भी भिन्न-भिन्न होता है। पश्चिमी चंपारण जनपद में सर्वाधिक मर्चा धान की खेती की जाती है। विगत अप्रैल महीने में इसको जीआई टैग भी मिला था। इसी प्रकार पटना जनपद में किसान मंसूरी धान अधिक उत्पादित करते हैं। यदि बेगूसराय के किसान धान की खेती करने की तैयार कर रहे हैं। तो उनके लिए आज हम एक शानदार समाचार लेकर आए हैं, जिसकी खेती चालू करते ही उत्पादन बढ़ जाएगा।

बेगूसराय जनपद की मृदा एवं जलवायु के अनुरूप दो किस्में विकसित की गईं

मीड़िया खबरों के अनुसार, कृषि विज्ञान केंद्र पूसा ने बेगूसराय जनपद की मृदा एवं जलवायु को ध्यान में रखते हुए धान की दो बेहतरीन प्रजातियों को विकसित किया है। जिसका नाम राजेन्द्र श्वेता एवं राजेन्द्र विभूति है। इन दोनों प्रजातियों की विशेषता यह है, कि यह कम वक्त में पक कर तैयार हो जाती है। मतलब कि किसान भाई इसकी शीघ्र ही कटाई कर सकते हैं। इसकी पैदावार भी शानदार होती है। साथ ही, कृषि विज्ञान केंद्र खोदावंदपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ. रामपाल ने बताया है, कि जून के प्रथम सप्ताह से बेगूसराय जनपद में किसान इन दोनों धान की नर्सरी को तैयार कर सकते हैं।

यहां राजेंद्र विभूति की खेती की जा सकती है

खोदावंदपुर के कृषि विशेषज्ञ अंशुमान द्विवेदी ने राजेंद्र श्वेता व राजेंद्र विभूति धान की प्रजाति का बेगूसराय में परीक्षण किया है। दोनों प्रजातियां ट्रायल में सफल रहीं। इसके उपरांत कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को इसकी रोपाई करने की सलाह दी है। यदि किसान भाई राजेन्द्र श्वेता एवं राजेन्द्र विभूति की खेती करना चाहते हैं, तो नर्सरी तैयार कर सकते हैं। साथ ही, कृषि विज्ञान केंद्र खोदावंदपुर में आकर खेती करने का प्रशिक्षण भी ले सकते हैं। विशेषज्ञों के बताने के मुताबिक, बेगूसराय जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में राजेंद्र विभूति की खेती की जा सकती है।

विकसित दो किस्मों से प्रति हेक्टेयर चार क्विंटल उत्पादन बढ़ जाता है

बतादें, कि बेगूसराय जनपद में 17061 हेक्टेयर बंजर भूमि पड़ी है। वहीं, 11001 हेक्टेयर भूमि पर किसान खेती नहीं करते हैं। अब ऐसी स्थिति में इन जमीनों पर किसान राजेंद्र विभूति प्रजाति की खेती कर सकते हैं। इस किस्म की विशेषता यह है, कि यह पानी के बिना भी काफी दिनों तक हरा भरा रह सकता है। मतलब कि इसके ऊपर सूखे का उतना प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही, यह बेहद कम पानी में पककर तैयार हो जाती है। तो उधर राजेंद्र श्वेता प्रजाति को खेतों में पानी की आवश्यकता होती है। परंतु, इतना भी ज्यादा नहीं होती। दोनों प्रजाति की खेती से प्रति हेक्टेयर चार क्विंटल उत्पादन बढ़ जाता है।

इस राज्य के किसानों को लगा झटका

अचानक बारिश से इस राज्य के किसानों को लगा झटका

किसान मोहित वर्मा का कहना है, कि उन्होंने इस बार काफी बड़े स्तर पर टमाटर की खेती की थी। खेत में टमाटर पके हुए थे। बस एक से दो दिन में उसकी तुड़ाई चालू होने वाली थी।

उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जनपद में मौसम ने आकस्मिक तौर पर करवट बदली एवं देखते ही देखते आसमान में काले बादल से छा गए। इसके उपरांत तेज हवाओं सहित बारिश का दौर चालू हो गया। इससे लोगों को गर्मी से काफी हद तक राहत तो मिली। परंतु, किसान भाइयों के लिए यह बरसात मुसीबत बन गई। बारिश से खेत में लगी तरबूज, खरबूज और टमाटर की फसल को काफी ज्यादा हानि पहुंची है। विशेष कर बारिश होने से टमाटर सड़ने लग गए हैं। ऐसी स्थिति में किसान काफी चिंताग्रस्त हो गए हैं।

तरबूज, खरबूज और टमाटर की फसल में काफी नुकसान

मीडिया खबरों के अनुसार, किसानों ने बताया है, कि पिछले साल बाजार में तरबूज, खरबूज, टमाटर और खीरा का अच्छा-खासा भाव था। इसके चलते किसानों ने इस बार इन्हीं सब फसलों की खेती की थी, जिससे बेहतरीन आय हो पाए। परंतु, अचानक बारिश आने से सबकुछ बर्बाद हो गया। किसानों ने कहा है, कि बरसात की वजह से टमाटर, तरबूज और खरबूज की फसल में रोग लगना शुरू हो गए हैं। इससे फल सड़ना शुरू हो जाते हैं। साथ ही, तरबूज और खरबूज में दाग- धब्बे आ गए हैं। इससे बाजार में इसकी कीमतों में काफी गिरावट आई है। ऐसे में किसान भाई खर्चा तक भी नहीं निकाल पा रहे हैं।

व्यापारी टमाटर को खरीदने से बच रहे हैं

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि किसान मोहित वर्मा ने कहा है, कि उन्होंने इस बार बड़े स्तर पर टमाटर की खेती की थी। उनके खेत में टमाटर पके हुए थे। बस एक से दो दिन में उसकी तुड़ाई चालू होने वाली थी। परंतु, इससे पहले ही बारिश हो गई, जिसके चलते टमाटर में कीड़े लग गए एवं सड़न भी चालू हो गई। फिलहाल, बाजार में मेरे टमाटर को व्यापारी खरीदने से कतरा रहे हैं। मोहित वर्मा का कहना है, कि इस बार उसने 2 बीघे खेत में टमाटर की खेती की थी। इसके ऊपर 60 हजार रुपये की लागत आई थी। परंतु, फिलहाल ऐसा लग रहा है, कि लागत भी नहीं निकल सकेगी।

तरबूज और खरबूज की खेती करने वाले किसान ने क्या कहा है

साथ ही, किसान बहादुर ने कहा है, कि इस बार 70 हजार रुपये की लागत से उसने चार बीघे में तरबूज और खरबूज की खेती की थी। परंतु, बारिश के कारण तरबूज और खरबूज के फल सड़ना शुरू हो गए। साथ ही, उसमें दाग- धब्बे भी आ चुके हैं। अब ऐसी स्थिति में मंडी में हमारी फसल की समुचित कीमत नहीं प्राप्त हो पा रही है। यदि मंडी के अंदर यही भाव चलता रहा, तो इस बार तरबूज- खरबूज की खेती में घाटा होगा। बतादें, कि बारिश की वजह से महाराष्ट्र में किसान भाइयों को काफी हानि का सामना करना पड़ा है। सैकड़ों एकड़ में लगी प्याज की फसल को भी क्षति पहुंची है।

BRAJDHAM

BRAJDHAM

FARMS & RESORT

Best place to Celebrate Your Day

www.brajdhamfarms.com

चाय की खेती से जुड़ी विस्तृत जानकारी

भारत के अंदर चाय की खेती काफी पहले से की जा रही है। दरअसल, साल 1835 में अंग्रेजो ने सबसे पहले असम के बागो में चाय लगाकर इसकी शुरुआत की थी। आज के समय में भारत के विभिन्न राज्यों में चाय की खेती की जाती है। इससे पूर्व चाय की खेती सिर्फ पहाड़ी क्षेत्रों में ही की जाती थी। लेकिन, अब यह पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर मैदानी इलाकों तक पहुंच चुकी है। दुनिया में भारत चाय उत्पादन के संदर्भ में दूसरे स्थान पर है। विश्व की लगभग 27 फीसद चाय का उत्पादन भारत के अंदर ही किया जाता है। इसके साथ ही 11 फीसद चाय उपभोग के साथ भारत सबसे बड़ा चाय का उपभोगकर्ता भी है। चाय को पेय प्रदार्थ के तौर पर उपभोग में लाया जाता है। अगर चाय का सेवन सीमित रूप में करते है, तो आपको इससे विभिन्न लाभ मिलते हैं।

भारत में चाय का सर्वाधिक सेवन किया जाता है। विश्व में भी जल के उपरांत यदि किसी पेय प्रदार्थ का सबसे ज्यादा उपयोग किया जाता है, उसका नाम चाय है। चाय में कैफीन भी काफी ज्यादा मात्रा में विघमान रहती है। चाय प्रमुख तौर पर काले रंग में पाई जाती है, जिसे पौधों और पत्तियों से तैयार किया जाता है। गर्म जलवायु में चाय के पौधे अच्छे से प्रगति करते है। यदि आप भी चाय की खेती करना चाहते हैं, तो आइए हम इस लेख में आपको चाय की खेती से जुड़ी अहम जानकारी देंगे।

चाय की खेती हेतु मृदा, जलवायु एवं तापमान कैसा होना चाहिए

चाय की खेती करने के लिए हल्की अम्लीय जमीन की जरूरत होती है। इसकी खेती के लिए बेहतर जल निकासी वाली भूमि होना अति आवश्यक है। क्योंकि, जलभराव वाली जगहों पर इसके पौधे काफी शीघ्रता से नष्ट हो जाते हैं। चाय की खेती अधिकांश पहाड़ी इलाकों में की जाती है। चाय की खेती हेतु जमीन का P.H. मान 5.4 से 6 के बीच रहना चाहिए।

चाय की खेती के लिए उष्णकटिबंधीय जलवायु को उपयुक्त माना जाता है। चाय के पौधों को गर्मी के साथ-साथ वर्षा की भी जरुरत पड़ती है। शुष्क और गर्म जलवायु में इसके पौधे अच्छे से विकास करते हैं। इसके अतिरिक्त छायादार स्थानों पर भी इसके पौधों को विकास करने में सहजता होती है। अचानक से होने वाला जलवायु परिवर्तन फसल के लिए नुकसानदायक होता है। इसके पौधों को शुरुआत में सामान्य तापमान की जरूरत पड़ती है। चाय के पौधों को विकास करने के लिए 20 से 30 डिग्री तापमान की आवश्यकता होती है। चाय के पौधे कम से कम 15 डिग्री और ज्यादा से ज्यादा 45 डिग्री तापमान ही झेल सकते हैं।

जानें चाय की उन्नत किस्में कौन-कौन सी हैं?

चीनी जात चाय

चाय की इस किस्म में पौधों का आकार झाड़ीनुमा होता है, जिसमें निकलने वाली पत्तियां चिकनी और सीधी होती हैं। इसके पौधों पर बीज काफी शीघ्रता से निकल आते हैं और इसमें चीनी टैग की खुशबू विघमान होती है। इसकी पत्तियों को तोड़ने के दौरान अगर अच्छी पत्तियों का चयन किया जाता है, तो चाय भी उच्च गुणवत्ता वाली अर्जित होती है।

असमी जात चाय

चाय की यह प्रजाति विश्व में सबसे बेहतरीन मानी जाती है। इसके पौधों पर निकलने वाली पत्तियों का रंग थोड़ा हरा होता है, जिसमें पत्तियां चमकदार एवं मुलायम होती हैं। इस प्रजाति के पौधों को फिर से रोपण करने के लिए भी उपयोग में लिया जा सकता है।

व्हाइट पिओनी चाय

चाय की यह व्हाइट पिओनी प्रजाति सर्वाधिक चीन में उत्पादित की जाती है। इस प्रजाति के पौधों पर निकलने वाली पत्तियां कोमल एवं बड्स के जरिए से तैयार की जाती हैं। साथ ही, चाय में हल्का कड़कपन भी पाया जाता है। इसको जल में डालने पर इसका रंग हल्का हो जाता है।

सिल्वर निडल व्हाइट चाय

सिल्वर निडल व्हाइट प्रजाति की चाय को कलियों के जरिए से तैयार किया जाता है। इस प्रजाति की कलियां चहुंओर से रोये से ढक जाती हैं। इसके बीज पानी में डालने पर हल्के रंग के पड़ जाते हैं। सिल्वर निडल व्हाइट किस्म का स्वाद मीठा एवं ताजगी वाला होता है।

चाय कितने तरह की होती है

चाय की उन्नत प्रजातियों से चाय प्रमुख तौर पर काली, सफेद और हरे रंग की अर्जित हो जाती है। इसकी पत्तियों, शाखाओं एवं कोमल हिस्सों को प्रोसेसिंग के जरिए से तैयार किया जाता है।

सफेद चाय

सफेद चाय को तैयार करने के लिए पौधों की ताजा एवं कोमल पत्तियों को उपयोग किया जाता है। इस प्रकार की चाय स्वाद का स्वाद मीठा होता है। इसमें एंटी-ऑक्सिडेंट की मात्रा ज्यादा और कैफीन की मात्रा काफी कम पाई जाती है।

हरी चाय

हरी चाय की पत्तियों से विभिन्न प्रकार की चाय बनाई जाती है। इसके पौधों में निकलने वाली कच्ची पत्तियों से हरी चाय को तैयार करते है। इस चाय में एंटी-ऑक्सिडेंट की मात्रा सर्वाधिक होती है।

काली या आम चाय

यह एक साधारण चाय होती है, जो कि प्रमुख तौर पर हर घर में मौजूद होती हैं। इसके दानों को विभिन्न तरह की चायों को बनाने हेतु इस्तेमाल में लाया जाता है। परंतु, सामान्य तौर पर इसको साधारण चाय के लिए उपयोग में लाते हैं। इस प्रजाति की चाय को तैयार करने के लिए पत्तियों को तोड़के कर्ल किया जाता है, जिससे दानेदार बीज भी मिल जाते हैं।

चाय की खेती के लिए भूमि की तैयारी एवं खाद

चाय के पौधे एक बार तैयार हो जाने के पश्चात विभिन्न सालों तक पैदावार देते हैं। इसलिए इसके खेत को बेहतर ढ़ंग से तैयार कर लिया जाता है। भारत में इसका उत्पादन अधिकांश पर्वतीय इलाकों में ढलान वाली भूमि में किया जाता है। इसके लिए भूमि में गड्ढों को तैयार कर लिया जाता है। यह गड्ढे पंक्तिबद्ध ढ़ंग से दो से तीन फीट का फासला रखते हुए तैयार किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त पंक्तियों के बीच भी एक से डेढ़ मीटर का फासला रखा जाता है।

इसके उपरांत तैयार गड्ढों में जैविक खाद के तौर पर 15 KG पुरानी गोबर की खाद व रासायनिक खाद स्वरूप 90 KG पोटाश, 90 KG नाइट्रोजन और 90 KG सुपर फास्फेट की मात्रा को मृदा में मिश्रित कर प्रति हेक्टेयर में तैयार गड्ढो में भर दिया जाता है। यह समस्त गड्ढे पौध रोपाई से एक महीने पूर्व तैयार कर लिए जाते हैं| इसके पश्चात भी इस खाद को पौधों की कटाई के चलते साल में तीन बार देना पड़ता है।

चाय के पौधों को प्रभावित करने वाले रोग और उनका नियंत्रण कैसे करें

बतादें, कि अन्य फसलों की भांति ही चाय के पौधों में भी विभिन्न प्रकार के रोग लग जाते है, जो पौधों पर आक्रमण करके बर्बाद कर देते हैं। अगर इन रोगों का नियंत्रण समयानुसार नहीं किया जाता है, तो उत्पादन काफी प्रभावित होता है। इसके पौधों में मूल विगलन, चारकोल विगलन, गुलाबी रोग, भूरा मूल विगलन रोग, फफोला अंगमारी, अंखुवा चित्ती, काला मूल विगलन, भूरी अंगमारी, शैवाल, काला विगलन कीट और शीर्षस्म्भी क्षय जैसे अनेक रोग दिखाई पड़ जाते हैं। जो कि चाय के उत्पादन को बेहद प्रभावित करते हैं। इन रोगो से पौधों का संरक्षण करने हेतु रासायनिक कीटनाशक का छिड़काव समुचित मात्रा में किया जाता है।

चाय की खेती से कितनी आमदनी होती है

चाय के पौधे रोपाई के एक साल पश्चात पत्तियों की कटाई के लिए तैयार हो जाते है। इसके उपरांत पत्तियों की तुड़ाई को एक वर्ष में तीन बार किया जा सकता है। बतादें, कि इसकी प्रथम तुड़ाई मार्च के महीने में की जाती है। वहीं, अतिरिक्त तुड़ाई को तीन माह के समयांतराल में करना होता है। चाय की विभिन्न तरह की उन्नत प्रजातियों से प्रति हेक्टेयर 600 से 800 KG की पैदावार हांसिल हो जाती है। बाजार में चाय का भाव बेहद अच्छा होता है, जिससे किसान भाई चाय की एक साल की फसल से डेढ़ से दो लाख तक की आमदनी सहजता से कर सकते हैं।

धान की एमएसपी में वृद्धि से किसानों को होगा काफी फायदा

केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में मार्केटिंग सीजन 2023-23 के लिए खरीफ की फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य अधिक करने का निर्णय किया गया है। केंद्रीय मंत्री जी. किशन रेड्डी का कहना है, कि इस निर्णय का सबसे ज्यादा लाभ तेलंगाना के किसानों को होगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में बुधवार को कैबिनेट की बैठक हुई। इसके चलते आर्थिक मामलों की कैबिनेट कमेटी ने 2023-24 मार्केटिंग सीजन हेतु खरीफ की फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) इजाफा करने पर मुहर लगा दी है। इस पर केंद्रीय मंत्री जी. किशन रेड्डी का कहना है, कि सरकार के इस निर्णय से तेलंगाना के धान से लेकर मक्का, सूरजमुखी एवं कॉटन किसानों को काफी लाभ होगा।

तेलंगाना भारत का दूसरा सर्वोच्च धान उत्पादक राज्य है

तेलंगाना से आने वाले केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जी. किशन रेड्डी ने बताया केंद्र सरकार साल 2014 से निरंतर एमएसपी में वृद्धि कर रही है। तेलंगाना भारत का दूसरा सबसे बड़ा धान उत्पादक राज्य है। अब धान के एमएसपी में बढ़वार होने का फायदा यहां के किसान भाइयों को मिलेगा। राज्य में उत्पादित की जाने वाली प्रमुख फसलों की एमएसपी में 2014 से 2023 के मध्य 60 से 80 फीसद तक की वृद्धि हुई है।

इन फसलों के उत्पादकों को काफी लाभ है

जी. किशन रेड्डी ने बताया है, कि प्रदेश में मक्का, धान, सूरजमुखी और कपास की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। बतादें, कि साल 2014 से अब तक सूरजमुखी के बीजों की एमएसपी में सर्वाधिक 80 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। साथ ही, कपास किसानों को लाभ पहुंचाने एवं तेलंगाना के हैंडलूम एवं टेक्सटाइल क्षेत्र को प्रोत्साहन देने में भी एमएसपी बढ़ाने का योगदान है। कपास की एमएसपी 2014 से अब तक 75 प्रतिशत तक बढ़ गई है।

अन्नदाता मतलब कि कृषकों की आमदनी भी 2014 के पश्चात से बढ़ी है। तेलंगाना धान का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। साथ ही, मक्का का भी काफी उत्पादन करता है। इन दोनों फसलों की एमएसएपी में 60 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है।

इन फसलों की एमएसपी कितनी है

तेलंगाना में उत्पादित होने वाली प्रमुख फसलों में धान-सादा की एमएसपी 2014 में 1360 रुपये प्रति क्विंटल थी। वर्तमान में यह 61 प्रतिशत बढ़कर 2183 क्विंटल पर पहुँच गई है। साथ ही, धान-ग्रेड ए पूर्व में 1400 रुपये क्विंटल था, जो कि फिलहाल 2203 रुपये प्रति क्विंटल हो गई है। मतलब कि 57 प्रतिशत का इजाफा।

इसी प्रकार मक्का की दर 1310 रुपये से 60 प्रतिशत बढ़कर 2090 रुपये क्विंटल, सनफ्लावर सीड की 3750 रुपये से 80 प्रतिशत बढ़कर 6760 रुपये क्विंटल, कॉटन (मीडियम स्टेपल) की 3750 रुपये से 77 प्रतिशत बढ़कर 6620 रुपये क्विंटल और कॉटन (लॉन्ग स्टेपल) की 4050 रुपये से 73 प्रतिशत बढ़कर 7020 रुपये प्रति क्विंटल हो गई है।

किसानों को कितना लाभ मिलेगा

केंद्र सरकार का यह निर्णय आम बजट 2018-19 की उस घोषणा के अनुरूप है, जिसमें एमएसपी को फसलों की औसत लागत पर 50 प्रतिशत अधिक के समतुल्य करना था। तेलंगाना में उत्पादित होने वाली फसलों के साथ भी कुछ ऐसा हुआ है।

प्रदेश में धान-सादा का औसत खर्चा 1455 रुपये क्विंटल है। वहीं, एमएसपी 50 प्रतिशत ज्यादा 2183 रुपये है। उधर मक्का की लागत 1394 रुपये है और एमएसपी 2090 रुपये क्विंटल, सनफ्लावर सीड की लागत 4505 रुपये है एवं एमएसपी 6760 रुपये एवं कॉटन (मीडियम स्टेपल) की लागत 4411 रुपये और एमएसपी 6620 रुपये क्विंटल है।

मेरीखेती ने जून माह की मासिक किसान पंचायत का किया आयोजन

मेरीखेती द्वारा किसानों के हित में बम्बावड़ गांव जिला गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश में जून माह की मासिक किसान पंचायत का आयोजन किया। किसान पंचायत के आयोजन के दौरान कृषि क्षेत्र के जाने माने कृषि वैज्ञानिक मौजूद रहे। किसानों ने अपनी समस्याएं वैज्ञानिकों के समक्ष रखी, जिनका संतोषजनक समाधान कृषि वैज्ञानिकों में अपने अनुभव व समझ के मुताबिक किसानों को प्रदान किया गया। बतादें कि आजकल कृषि क्षेत्र में राज्य सरकार से लेकर केंद्र सरकार तक जैविक खेती को बढ़ावा देने की हर संभव कोशिश कर रही है। किसानों के लिए सबसे अच्छी बात यह है, कि मेरीखेती द्वारा आयोजित की जाने वाली मासिक किसान पंचायत में उनको उनकी समस्या से संबंधित सही व सटीक जानकारी व समाधान प्रदान किया जाता है।

मासिक किसान पंचायत में डॉ सी.बी. सिंह प्रिंसिपल साइंटिस्ट (RETD) IARI ने जैविक खेती के महत्व एवं आवश्यकता की खूब चर्चा की है। मासिक किसान पंचायत में किसानों को संबोधित करते हुए डॉ सीवी सिंह ने कहा है, कि आजकल किसान अत्यधिक उत्पादन अर्जित करने के चक्कर के फसल की गुणवत्ता के विषय में नहीं सोच रहे हैं। जो कि आज और आने वाले समय में एक बड़ी समस्या को निमंत्रण देने वाला है। क्योंकि ज्यादा पैदावार लेने के लिए जरूरत से ज्यादा रासायनिक उर्वरकों का इस्तेमाल करने पर फसल काफी हद तक जहरीली हो जाती है। उसी फसल को आम जनमानस जब खाएगा तो फसल के माध्यम से उसके अंदर भी नुकसानदायक रसायनों का प्रभाव पड़ेगा।

मेरीखेती द्वारा आयोजित मासिक किसान पंचायत में स्कूल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंस एंड इंजीनियरिंग IFTM यूनिवर्सिटी मुरादाबाद के सहायक प्राध्यापक डॉ शुभम गुप्ता जी ने किसानों को जैविक खेती करने की विधि एवं इसके फायदों के बारे में बताया। डॉ शुभम गुप्ता ने कहा है, कि खेती-किसानी के क्षेत्र में किसानों को काफी सूझ बूझ और कृषि विशेषज्ञों की सलाहनुसार फसल चयन करने की बात कही है। उन्होंने रसायनिक खेती की जगह जैविक खेती करने के लिए किसानों को कहा। उनका कहना है, कि आने वाले समय में रासायनिक खेती से तैयार होने वाली फसल का सेवन करना किसी बड़े खतरे से कम नहीं होगा। आज के समय में ही अधिकांश लोग किसी न किसी रोग से ग्रसित होते नजर आ रहे हैं। जिसकी एक मुख्य वजह खान पान भी है। किसान यदि जैविक खेती बिना रासायनिक उर्वरकों के केवल जैविक खाद विधि से करेंगे तो उनको उत्तम गुणवत्ता वाली पैदावार मिलेगी। जैविक विधि से खेती करने पर लोगों को उत्तम खाद्य पदार्थ प्राप्त होगा।

मेरीखेती द्वारा आयोजित मासिक किसान पंचायत में स्कूल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंस एंड इंजीनियरिंग IFTM यूनिवर्सिटी मुरादाबाद के सहायक प्राध्यापक डॉ कुलदीप भार्गव भी मौजूद रहे। डॉ कुलदीप भार्गव ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा है, कि जैविक खेती से किसान कम लागत में अच्छा-खासा मुनाफा उठा सकते हैं। आज के समय में सभी लोग एक अच्छा खाद्य पदार्थ खाने के लिए कितना भी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी फसल बिना रासायनिक उर्वरकों के तैयार की गई है, तो लोग अपनी सेहत को अच्छा रखने के लिए आपके द्वारा उगाई गई जैविक फसल को अच्छे-खासे भावों पर खरीदेंगे।

सरकारी नीतियां

इस राज्य में सुपर सीडर पर 40 प्रतिशत तक का अनुदान दिया जा रहा है

वर्तमान में संभागीय कृषि अभियांत्रिकी विभाग सतना में किसान भाइयों के लिए सुपर सीडर उपलब्ध है। विशेष बात यह है, कि यदि किसान भाई सीडर खरीदते हैं, तो इस पर उन्हें 40 प्रतिशत तक अनुदान दिया जाएगा।

मध्य प्रदेश की राज्य सरकार किसान भाइयों की आमदनी में इजाफा करने के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएं जारी कर रही है। इन योजनाओं के अंतर्गत किसान भाइयों की खेती करने की तकनीक वैज्ञानिक रूप धारण कर गई है। इसके अतिरिक्त मध्य प्रदेश में कृषकों को कृषि यंत्रों पर अच्छा-खासा अनुदान भी दिया जा रहा है। परंतु, फिलहाल रीवा और सतना जनपद के किसानों के लिए काफी अच्छी खुशखबरी है। यहां के कृषकों को सुपर सीडर मशीन खरीदने के लिए अच्छा-खासा अनुदान प्रदान किया जा रहा है।

सुपर सीडर किसानों के लिए काफी उपयोगी साबित होता है

मीडिया खबरों के अनुसार, सुपर सीडर एक ऐसा यंत्र है, जिसको ट्रैक्टर के साथ जोड़कर खेती-बाड़ी करने के कार्य में लिया जाता है। इस यंत्र का सर्वाधिक इस्तेमाल फसलों की बुवाई करने हेतु किया जाता है। इसके इस्तेमाल से नरवाई की दिक्कत परेशानी दूर हो चुकी है।

अब ऐसी स्थिति में गेहूं एवं चने की खेती करने वाले कृषकों के लिए सुपर सीडर यंत्र बेहद उपयोगी साबित होता है।

सुपर सीडर के उपयोग से नरवाई जलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि किसी फसल के डंठल को नरवाई कहा जाता है। सुपर सीडर धान एवं गेहूं की डंठल को छोटे-छोटे भागों में विभाजित कर मृदा में मिला देता है। अब ऐसी स्थिति में सुपर सीडर मशीन से फसलों की बिजाई करने वाले कृषकों को नरवाई को आग के जरिए जलाना नहीं पड़ता है। इससे प्रदूषण पर भी रोक लगती है।

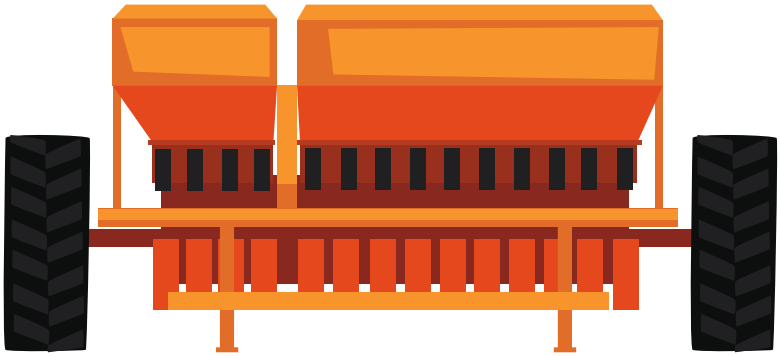

सुपर सीडर पर 40 प्रतिशत तक का अनुदान दिया जाएगा

फिलहाल, संभागीय कृषि अभियांत्रिकी विभाग सतना में किसान भाइयों के लिए सुपर सीडर उपलब्ध हैं। विशेष बात यह है, कि यदि किसान भाई सीडर खरीदेंगे तो 40 प्रतिशत तक अनुदान मिलेगा। मुख्य बात यह भी है, कि यह यंत्र एक घंटे में एक एकड़ भूमि में फैले नरवाई को चौपट कर देती है। इसके पश्चात फसलों की बिजाई करती है। धान के उपरांत गेहूं एवं गेंहू के बाग मूंग की खेती करने वाले कृषकों के लिए सुपर सीडर किसी वरदान से कम नहीं है। किसान भाई सुपर सीडर के माध्यम से वर्षभर में अच्छी-खासी आमदनी की जा सकती है। वैसे तो सुपर सीडर की कीमत लगभग 3 लाख रुपये है। परंतु, कृषि विभाग की तरफ से 40 प्रतिशत प्रतिशत अनुदान मिलने के पश्चात इसकी कीमत काफी हद तक कम हो जाती है।

पीएम किसान सम्मान निधि की 14 वीं किस्त सिर्फ इन किसानों को दी जाएगी

हरियाणा सरकार अपने स्तर से किसानों को लुभाने के लिए दिनों-दिन किसी नई सब्सिडी का ऐलान कर रही है। वर्तमान में फल व सब्जी की खेती पर किसानों को बड़ी सब्सिड़ी मिलेगी।

बतादें, कि एक ओर हरियाणा में सूरजमुखी को भावांतर भरपाई योजना से बाहर निकालने की मांग को लेकर सड़कों पर आंदोलन जारी है। तो उधर, दूसरी ओर सरकार अन्नदाताओं को अपनी सब्सिडी के जरिए लुभाने का भरपूर प्रयास कर रही है। विरोध प्रदर्शन के मध्य किसानों के लिए अच्छी खबर सामने आई है। दरअसल, हरियाणा राज्य सरकार ने फल व सब्जी की खेती पर अच्छा-खासा अनुदान देने की घोषणा करदी है। चलिए जानते हैं, कि किसानों को कहां और कितना अनुदान मिलेगा।

बागवानी फसलों को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन दिया जा रहा है

हरियाणा में किसान भावांतर योजना से सूरजमुखी को बाहर निकालने के लिए प्रदर्शन कर रहे हैं। इसी कड़ी में हरियाणा सरकार ने किसानों को अनुदान देने का ऐलान किया है। इसका अर्थ है, कि हरियाणा सरकार किसानों को फल व सब्जी की खेती पर अच्छा-खासा अनुदान प्रदान कर रही है। दरअसल, बागवानी को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से इस तरह का ऐलान किया गया है। बतादें, कि हरियाणा में जल का काफी अभाव है। जिसके चलते किसानों को प्रतिवर्ष धान-गेहूं की खेती में काफी बड़ी हानि वहन करनी पड़ती है। अब ऐसी स्थिति में सरकार ऐसी फसलों को प्रोत्साहन दे रही है, जिसमें जल की कम खपत है। हरियाणा सरकार विगत दिनों से कई सारी महत्वपूर्ण योजनाओं के तहत किसानों को हर संभव अनुदान प्रदान करने में जुटी हुई है।

हरियाणा सरकार कितना अनुदान प्रदान कर रही है

हरियाणा सरकार में बागवानी विभाग की तरफ से 'मेरा पानी मेरी विरासत' नाम से एक योजना चलाई जा रही है। इसके अंतर्गत कृषकों को कम लागत में अधिक मुनाफा देने वाली खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। जो किसान भाई ऐसा कर रहे हैं, उनको प्रोत्साहन धनराशि भी प्रदान की जा रही है। हरियाणा सरकार प्रदेश के किसानों में पॉलीहाउस की स्थापना करने के लिए 65 प्रतिशत अनुदान प्रदान कर रही है।

इस पोली हाउस के अंतर्गत कम खाद और कम पानी के साथ किसी भी फल व सब्जियों की बड़े पैमान पर पैदावार की जा सकती है। पॉलीहाउस की यह भी विशेषता है, कि इसमें किसी भी मौसम में कोई भी सब्जी उत्पादित की जा सकती है। इस अनुदान का फायदा उठाने के लिए किसान भाई अपने समीपवर्ती बागवानी विभाग केंद्र से संपर्क साधें।

आखिर किस वजह से NAFED द्वारा कच्चे चना भंडारण हेतु बनाई गई विशेष योजना

आखिर किस वजह से NAFED द्वारा कच्चे चना भंडारण हेतु बनाई गई विशेष योजना

NAFED ने अपने 20% कच्चे चना स्टॉक को चना दाल (चना या बंगाल चना) में परिवर्तित करने और रिटेल बाजार में आपूर्ति करने की योजना तैयार की है। नेशनल एग्रीकल्चरल कोऑपरेटिव मार्केटिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया (नेफेड) ने अपने 20% प्रतिशत कच्चे चना भंडारण को चना दाल (चना या बंगाल चना) में बदलने एवं रिटेल बाजार में सप्लाई करने की योजना निर्मित की है।

दो सरकारी अधिकारियों ने कहा है, कि यह विकास ऐसे वक्त में हुआ है, जब सरकार के पास रणनीतिक बफर जरूरत के मुकाबले भारी मात्रा में चना एवं अन्य दालों का कम भंडार है। आज के समय में NAFED के समीप भंडार में तकरीबन 3.6 मिलियन टन (MT) चना है, जिसमें इस वर्ष एग्रीकल्चर मिनिस्ट्री की तरफ से प्राइस सपोर्ट स्कीम (PRICE SUPPORT SCHEME (PSS) के अंतर्गत खरीदा गया 3.3 मिलियन टन शामिल है। रिकॉर्ड तोड़ उत्पादन के चलते बाजार की कम कीमतों की वजह से पिछले दो सालों में ज्यादा खरीद का परिणाम है।

किसान अपनी उपज नेफेड (NAFED) को बेच रहे हैं

कृषि मंत्रालय की तरफ से खाद्य उत्पादन के दूसरे अग्रिम अनुमान के मुताबिक, 2022-23 (जुलाई-जून) में चना का उत्पादन 13.5 मीट्रिक टन होने का अंदाजा लगाया गया है। जो कि पिछले साल के तकरीबन समान है। इस साल भी ज्यादा पैदावार की वजह चना की कीमतें न्यूनतम समर्थन मूल्य 5,335 प्रति क्विंटल से नीचे बनी हुई हैं। इससे किसान अपनी पैदावार सरकार की खरीद एजेंसी नेफेड को बेचने के लिए आगे आ रहे हैं, जिससे किसानों को काफी अच्छा-खासा लाभ प्राप्त हो रहा है।

निफेड ने 2.3 मीट्रिक टन के रणनीतिक मानदंड के तुलनात्मक 4.27 मीट्रिक टन का बफर स्टॉक तैयार किया है। इसके अंतर्गत समस्त 5 घरेलू दालों के साथ-साथ आयातित स्टॉक भी शम्मिलित है। बाजार सूत्रों के अनुसार, दिल्ली के लॉरेंस रोड बाजार में मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान की कच्चे चने की प्रजातियां 5,100 से 5,125 रुपए प्रति क्विंटल में बिकीं हैं।

दाल में 20% प्रतिशत कच्चा चना परिवर्तित किया जाएगा

एक सरकारी अधिकारी का कहना है, कि 20% कच्चे चना भंडार को दाल में बदलना एक प्रयोग है। कच्चा चना जारी करने के अतिरिक्त नेफेड (NAFED) कच्चे चने को पीसकर दाल के तौर पर जारी करने पर विचार कर रहा है। इसके पश्चात यह राज्यों को जारी किया जाएगा अथवा खुले बाजार में यह अभी तक सुनिश्चित नहीं है। इसे खुले बाजार में विक्रय किया जा सकता है अथवा खुदरा विक्रेताओं को दिया जा सकता है।

सालभर से दालों का भंडारण नहीं किया गया

सरकार राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों को अपने भंडार को खत्म करने के लिए करीब एक साल से रियायती दर पर चना दे रही है। क्योंकि दालों को एक साल से ज्यादा समय तक स्टोर नहीं किया जा सकता है। हाल ही में ग्राहकों के मामलों के विभाग ने लिक्विडेशन को प्रोत्साहित करने के लिए छूट की दर को 8 रुपए प्रति किलोग्राम से बढ़ाकर 15 रुपए प्रति किलोग्राम कर दिया है। आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) ने पिछले वर्ष अगस्त में राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को 15 लाख टन चना के आवंटन को रियायती दर पर की कई सारी कल्याणकारी योजनाओं के लिए "पहले आओ, पहले पाओ" के आधार पर आवंटित करने की स्वीकृति दी थी।

बिहार में कृषि वैज्ञानिकों ने गर्मी में भी उगने वाली गोभी की किस्म-6099 को विकसित किया

बिहार राज्य के नालंदा जनपद में किसानों ने 200 एकड़ में फूल गोभी की खेती चालू की है। विशेष बात यह है, कि नालंदा जनपद के किसान फूल गोभी की प्रजाति-6099 की खेती कर रहे हैं।

फूल गोभी का सेवन हर किसी को पसंद है। सर्दी के मौसम में प्रमुख सब्जी फूल गोभी ही होती है। ऐसे लोग फूल गोभी से बनी भुजिया भी खाना काफी पसंद करते हैं। फूल गोभी के अंदर प्रोटीन, फॉस्फोरस, मैगनीज, पोटैशियम, फोलेट, विटामिन बी, विटामिन सी, विटामिन के और फाइबर जैसे तत्व भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। इसका सेवन करने से कई सारे शारीरिक लाभ होते हैं। आमतौर पर सर्दी के मौसम में फूल गोभी बड़ी ही सहजता से मिल जाती है। परंतु, ग्रीष्मकाल में यह बाजार से गायब हो जाती है, क्योंकि गर्मी में इसका उत्पादन नहीं होता है। हालाँकि, अब से आपकों वर्षभर फूल गोभी खाने के लिए उपलब्ध मिलेगी।

कितने रकबे में गोभी की खेती शुरू हुई है

मीडिया एजेंसियों के अनुसार, बिहार के नालंदा जनपद में किसानों ने 200 एकड़ में फूल गोभी की खेती चालू की है। विशेष बात यह है, कि नालंदा जनपद के किसान फूल गोभी की प्रजाति-6099 की खेती कर रहे हैं। उद्यान महाविद्यालय के प्राचार्य डा. पंचम कुमार सिंह का कहना है, कि पहले यहां किसान केवल सर्दी के मौसम में ही फूल गोभी की खेती किया करते थे। जुलाई माह में इसकी नर्सरी तैयार की जाती थी। अगस्त महीने में पौधों की रोपाई का कार्य होता है, जिसके पश्चात अक्टूबर माह से बाजार में फूल गोभी आनी चालू हो जाती थी। परंतु, अब कृषि वैज्ञानिकों ने फूल गोभी की किस्म-6099 को विकसित किया है। अब ऐसी स्थिति में किसान वर्षभर फूल गोभी की खेती कर सकते हैं।

विगत वर्ष किस्म-6099 की खेती परीक्षण के तौर पर की गई थी

आजकल बदलते दौर में कृषि वैज्ञानिकों की निरंतर कोशिशों और शोधों के चलते नई-नई किस्में विकसित की जा रही हैं। बतादें कि गोभी की किस्म-6099 की विगत वर्ष परिक्षण के तौर पर खेती शुरू की थी, जिसका नतीजा भी सकारात्मक देखने को मिला है। इस वजह से किसानों ने इस वर्ष पहली बार ग्रीष्मकाल में गोभी की किस्म-6099 की खेती शुरू की है। बतादें, कि बबुरबन्ना, सोहडीह एवं आशानगर में तकरीबन 200 एकड़ भूमि पर किसानों ने गरमा फूलगोभी की खेती शुरू की है। इसी कड़ी में किसानों का कहना है, कि गरमा फूल गोभी की खेती के लिए फसलचक्र भी तैयार कर लिया है। फरवरी माह में नर्सरी तैयार की जानी है, जिसकी पैदावार मई माह तक मिल पाएगी। साथ ही, दूसरी नर्सरी जून माह में तैयार की जाएगी, जिसकी पैदावार अक्टूबर माह तक मिल पाएगी। ऐसे में सीधी सी बात है खेती का क्षेत्रफल निश्चित तौर पर बढ़ेगा।

फूल गोभी की खेती करने हेतु जरुरी बात

केंद्र एवं राज्य सरकारें अपने-अपने स्तर किसानों के हित में नई नई योजनाएं जारी करती रहती हैं। बागवानी फसलों को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार एवं कृषि विभाग पूरी तन्मयता से जुटे हुए हैं। बागवानी के क्षेत्र में किसानों के लिए गोभी की नई किस्म-6099 विकसित की गई है। यदि किसान भाई खरीफ सीजन में फूल गोभी का उत्पादन करना चाहते हैं, तो उनको बेहद ही सावधानियां बरतने की जरुरत पड़ेगी। बतादें, कि इस गोभी की किस्म में दो से तीन दिन के अंतराल पर फसल की सिंचाई करनी होगी। साथ ही, रासायनिक खाद के स्थान पर जैविक खाद का इस्तेमाल करें। यूरिया खाद का उपयोग बिल्कुल भी ना करें। साथ ही, पौधरोपण से पूर्व प्रति चार कट्ठे में एक ट्रॉली गोबर डाल दें। इसके पश्चात खेत की जोताई करें।

पेप्सिको (PEPSICO) ने जारी किया किसानों के लिए मौसम की सटीक जानकारी देने वाला ऐप

बतादें कि पेप्सिको (PEPSICO) ने किसानों के लिए उनकी फसल की जाँच करने के लिए ऐप बनाया है। आलू की खेती करने वाले कृषकों को मौसम के साथ- साथ कई सारी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। बहुत सारे किसान यह भी समझ नहीं पाते हैं, कि उनकी फसल की सिंचाई करने के लिए उपयुक्त वक्त कब है।

आलू का उत्पादन करने वाले किसान भाइयों के लिए खुशखबरी है। उनकी फसल की पहले की तुलना में काफी कम बर्बादी होगी। फिलहाल, किसान भाई अपनी आलू की फसल की वक्त पर सिंचाई कर पाएंगे। बतादें, कि समुचित मात्रा में खाद और कीटनाशकों का भी छिड़काव कर पाऐंगे। यह सब मुमकिन होगा 'क्रॉप एवं प्लॉट लेवल इंटेलिजेंस मॉडल' की मदद से। दरअसल, PEPSICO ने अपने ब्रांड लेज के जरिए एक 'क्रॉप एवं प्लॉट लेवल इंटेलिजेंस मॉडल' को बाजार में प्रस्तुत किया है। पेप्सिको (PEPSICO) आलू की खेती करने वाले किसान भाइयों की सहायता करने हेतु इस इंटेलिजेंस मॉडल को लागू किया है। विशेष बात यह है, कि इस मॉडल को सर्वप्रथम मध्य प्रदेश व गुजरात में पायलट प्रोजेक्ट की भांति चालू किया गया है।

मौसम की मिलेगी बिल्कुल सटीक जानकारी

पेप्सिको (PEPSICO) का कहना है, कि आलू की खेती करने वाले किसान भाइयों को मौसम के साथ- साथ कई सारी चुनौतियों से जूझना पड़ता है। विभिन्न किसान ये भी समझ नहीं पाते हैं, कि उनकी फसल की सिंचाई करने के लिए उपयुक्त समय कब है। साथ ही, आलू के खेत में खाद एवं कीटनाशक कब डालें। इसके अतिरिक्त मौसम को लेकर उनके पास संपूर्ण अपडेट भी नहीं होता है। अब ऐसी स्थिति में पाला अथवा शीतलहर पड़ने पर आलू की फसल को काफी ज्यादा हानि पहुंचती है। परंतु, फिलहाल किसान भाइयों को PepsiCo की इस मॉडल से सेटेलाइट के माध्यम से उचित वक्त पर मौसम की सटीक जानकारी मिल पाऐगी।

समस्त जानकारियां डैशबोर्ड पर उपलब्ध रहेंगी

बतादें, कि क्रॉपिन एक अग्रणी एग्री-टेक कंपनी है। ग्लोबल एग्री-टेक फर्म क्रोपिन की मदद से PepsiCo इंडिया ने क्रॉप एवं प्लॉट लेवल इंटेलिजेंस मॉडल को प्रस्तुत किया है। इस मॉडल के माध्यम से किसान भाइयों को 10 दिन पूर्व ही मौसम की जानकारी प्राप्त हो जाएगी। ऐसी स्थिति में आलू उत्पादक किसान मौसम में परिवर्तन आने से पूर्व ही सतर्क हो जाएंगे। साथ ही, वह संभावित बीमारियों का इलाज भी पहले से चालू कर सकेंगे। खास बात यह है, कि इस मॉडल के माध्यम से एक मोबाइल ऐप तैयार किया गया है, जिसके डैशबोर्ड पर विभिन्न प्रकार की जानकारियां मौजूद रहेंगी।

पेप्सिको (PepsiCo) इतने किसानों को प्रशिक्षण दे रही है।

भारत में PepsiCo 14 राज्यों में 27,000 से ज्यादा किसानों के साथ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष तौर से जुड़ी हुई है। कंपनी का कहना है, कि वह चिप्स हेतु 100 प्रतिशत आलू इन्हीं 14 राज्यों के किसान भाइयों से खरीदती है। कंपनी आरंभिक चरण में इन्हीं में से 62 किसानों को आवश्यक प्रशिक्षण दे रही है। इस दौरान किसानों को डैशबोर्ड के विषय में बताया जा रहा है। आखिर वह इसकी सहायता से मौसम के पूर्वानुमान की जानकारी कैसे प्राप्त कर सकते हैं। प्रशिक्षण के लिए चयनित 62 में 51 किसान गुजरात व 11 किसान मध्य प्रदेश के निवासी हैं।

भावांतर भरपाई योजना को लेकर हरियाणा में किसानों का प्रदर्शन जारी है

भावांतर भरपाई योजना को लेकर हरियाणा में किसानों का प्रदर्शन जारी है

हरियाणा में भावांतर भरपाई योजना को लेकर किसानों का आंदोलन दूसरे दिन भी अड़िग है। चलिए इस लेख में जानें भावांतर भरपाई योजना के बारे में, जिसको लेकर हरियाणा के किसान सड़कों पर उतरे हैं।

हरियाणा राज्य में भावांतर भरपाई योजना को लेकर किसान दूसरे दिन भी सड़कों पर बैठे हुए हैं। बतादें, कि किसान निरंतर सूरजमुखी को भावांतर भरपाई योजना से बाहर निकालने की मांग कर रहे हैं। इस प्रदर्शन के चलते मंगलवार देर रात्रि भारतीय किसान यूनियन (चढ़ूनी) के अध्यक्ष गुरनाम सिंह चढ़ूनी व उनके बहुत से साथियों को पुलिस ने अपनी हिरासत में ले लिया था। जिसके पश्चात किसान और ज्यादा भड़क उठे हैं। इसी मध्य खबर है, कि किसान नेता राकेश टिकैत भी इस आंदोलन में शम्मिलित होने वाले हैं।

भावांतर भरपाई योजना क्या है

सरकार ने किसानों को भारी नुकसान से संरक्षण देने के लिए भावांतर भरपाई योजना जारी की थी। 30 सितंबर, 2017 को यह योजना विशेषकर उन कृषकों के लिए चालू हुई थी। जो बागवानी एवं मसाला फसलों की खेती किया करते हैं। इसका उद्देश्य किसानों को उत्पादन की समुचित कीमत दिलाना था। इस योजना में मसाला की दो फसलों और बागवानी की 19 फसलों को शम्मिलित किया गया था। सरकार की ओर से योजना में शम्मिलित सभी फसलों का भाव निर्धारित किया गया था। यदि उससे कम भाव में फसल बिकती थी तो सरकार धनराशि मुहैय्या कराकर नुकसान की भरपाई करती थी। हरियाणा में बहुत सारे किसानों ने इस योजना का फायदा लिया।

किसानों में आक्रोश की शुरुआत यहां से हुई

जब इस योजना में एमएसपी वाली फसलों को शम्मिलित किया गया तो किसानों ने आपत्ति व्यक्त करनी चालू कर दी। बतादें, कि इसके दायरे में बाजरा को लाया गया, जिससे उत्पादकों को भारी घाटा वहन करना पड़ा है। दरअसल, सरकार की ओर से बाजरा का एमएसपी 2250 रुपये प्रति क्विंटल तैयार किया गया था। किसानों को बाजार में 1100 से 1200 रुपये प्रति क्विंटल की दर से बाजरा की कीमत मिल पाए। अब सरकार को भावांतर योजना के अंतर्गत बाजार की कीमत और एमएसपी के मध्य आ रहे अंतराल की भरपाई करना था।

बाजरा उत्पादक कृषकों को हुई हानि

यदि बाजार में भाव 1200 रुपये प्रति क्विंटल के अनुरूप प्राप्त हो, तो सरकार को अब 1050 रुपये की भरपाई करनी थी। लेकिन सरकार ने मात्र 600 रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से ही भरपाई की। ऐसे में किसानों को प्रति क्विंटल के हिसाब से बाजरा का भाव सब मिलाकर 1800 रुपये ही मिल पाया। जो एमएसपी से बेहद कम था। किसान भाइयों को इससे घाटा भी सहना पड़ा।

आंदोलन की शुरुआत किस वजह से हुई

इसके चलते सरकार ने सूरजमुखी को भी भावांतर भरपाई योजना में शम्मिलित कर दिया है। अब ऐसे में जिन किसानों ने बाजरा के मामले में घाटा वहन किया था। वे किसान सड़कों पर उतर आए। सूरजमुखी को इस योजना से अलग करने की मांग को लेकर आंदोलन शुरू कर दिया। भारतीय किसान यूनियन (चढ़ूनी) का कहना है, कि उन्हें भावांतर नहीं बल्कि एमएसपी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा है, कि सरकार सूरजमुखी को एमएसपी पर नहीं खरीदना चाहती। केवल व्यापारियों को ही फायदा दिलाना चाहती है। इसी वजह से सरकार ने सूरजमुखी को इस योजना में शम्मिलित किया है।

MASSEY FERGUSON
7250 DI
46
HP
MASSEY FERGUSON 7250 DI

इस राज्य में बागवानी फसलों पर दी जा रही बंपर सब्सिड़ी, शीघ्र आवेदन करें

बिहार सरकार द्वारा राज्य में बागवानी फसलों के ऊपर भी अनुदान दिया जा रहा है। राष्ट्रीय बागवानी मिशन एवं मुख्यमंत्री बागवानी मिशन योजना के अंतर्गत लीची, कटहल, आम और अमरूद की खेती करने वाले किसान भाइयों को अनुदान दिया जा रहा है।

बिहार राज्य के किसानों के लिए बड़ी खुशखबरी है। फिलहाल, उनको सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर नहीं रहना होगा। उनकी फसलों को समयानुसार जल मिलेगा। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की सरकार ने किसानों के फायदे में सूक्ष्म सिंचाई योजना के अंतर्गत किसानों को अच्छी-खासी अनुदान राशि देने की योजना बनाई है। सरकार का यह मानना है, कि राज्य में सूक्ष्म सिंचाई योजना को प्रोत्साहन देने से फसलों का उत्पादन बढ़ जाएगा। इससे किसान भाइयों को अधिक फायदा मिलेगा।

बिहार सरकार ने जल की बर्बादी को रोकने के लिए सूक्ष्म सिंचाई योजना जारी की

दरअसल, पानी का एक- एक बूंद व्यर्थ न हो, इस मंसा से बिहार सरकार द्वारा सूक्ष्म सिंचाई योजना का आरंभ किया है। उनका मानना है, कि ट्यूबवेल से डायरेक्ट सिंचाई करने से जल का दोहन अधिक होता है। साथ ही, पौधों की जड़ों तक समुचित मात्रा में जल नहीं पहुंच पाता है। इससे उत्पादन भी प्रभावित होता है। वहीं, सिंचाई की यह विधि ज्यादा खर्चीली भी होती है। अब ऐसी स्थिति में यदि किसान भाई सूक्ष्म सिंचाई योजना के अंतर्गत प्लांट लगाकर पौधों की सिंचाई करते हैं, तो उनको अधिक लाभ होगा। यही कारण है, कि सरकार ने इस योजना के अंतर्गत किसानो को अच्छी-खासी अनुदान राशि देने की घोषणा की है। यदि किसान अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, तो अधिकारियों से संपर्क साध सकते हैं।

ऑनलाइन आवेदन हेतु अंतिम तिथि

साथ ही, बिहार सरकार प्रदेश में बागवानी फसलों के ऊपर भी अनुदान प्रदान कर रही है। राष्ट्रीय बागवानी मिशन और मुख्यमंत्री बागवानी मिशन योजना के तहत लीची, कटहल, आम और अमरूद की खेती करने वाले किसान भाइयों को अनुदान प्रदान किया जाएगा। यदि किसान भाई योजना का फायदा उठाना चाहते हैं, तो http://horticulture.bihar.gov.in पर जाकर आवेदन कर सकते हैं। **ऑनलाइन आवेदन करने की आखिरी तारीख 30 जून** है।

बिहार राज्य इन फसलों की पैदावार में प्रथम स्थान पर है

मुख्य बात यह है, कि बिहार सरकार ने बागवानी फसलों के रकबे में विस्तार करने के लिए इस योजना के जरिए सब्सिडी देने की योजना बनाई है। यदि किसान योजना एवं अनुदान के संदर्भ में ज्यादा जानकारी लेना चाहते हैं, तो आप जिला उद्यान अधिकारी से संपर्क कर सकते हैं। बतादें, कि बिहार राज्य बागवानी फसलों की खेती में अपनी अलग पहचान रखता है। लीची, मशरूम, मखाने और भिंडी की पैदावार में बिहार भारत भर में प्रथम स्थान पर आता है। अर्थात सबसे ज्यादा इन फसलों का उत्पादन यहीं पर किया जाता है।

केंद्र सरकार ने धान सहित इन फसलों की एमएसपी में की बढ़ोत्तरी

धान के न्यूनतम समर्थन मूल्य में 143 रुपये प्रति क्विंटल की दर से वृद्धि की गई है। इसी प्रकार तुअर एवं उड़द दाल के न्यूनतम समर्थन मूल्य में भी काफी ज्यादा इजाफा हुआ है।

मानसून के आने से पहले केंद्र सरकार ने किसानों को बड़ा उपहार दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार द्वारा धान समेत विभिन्न फसलों की एमएसपी बढ़ा दी है। जानकारी के अनुसार, धान की एमएसपी में 143 रुपये प्रति क्विंटल की दर से इजाफा किया गया है। इसी प्रकार तुअर एवं उड़द दाल के न्यूनतम समर्थन मूल्य में भी खूब वृद्धि की गई है। साथ ही, इस खबर से किसानों के मध्य खुशी की लहर दौड़ रही है। किसानों ने केंद्र सरकार के इस कदम की काफी सराहना की है।

केंद्र सरकार ने धान सहित दलहन की एमएसपी में किया इजाफा

कैबिनेट बैठक के पश्चात मोदी सरकार ने धान के साथ- साथ दलहन के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि की स्वीकृति दी है। विशेष बात यह है, कि खरीफ फसलों की एमएसपी में 3 से 6 प्रतिशत का इजाफा किया गया है। तुअर दाल की एमएसपी में 400 रुपये प्रति क्विंटल की दर से वृद्धि की गई है। इस तरह अब तुअर दाल का भाव बढ़कर 7000 रुपये क्विंटल तक पहुँच चुका है। साथ ही, उड़द दाल के न्यूनतम समर्थम मूल्य में 350 रुपये की वृद्धि की गई है। फिलहाल, एक क्विंटल उड़द दाल की कीमत 6950 रुपये हो चुकी है।

मोटे अनाज की फसलों पर कितने रुपये प्रति क्विंटल की दर से वृद्धि की गई है

विशेष बात यह है, कि मोटे अनाज की एमएसपी में भी वृद्धि दर्ज की गई है। केंद्र सरकार द्वारा मोटे अनाज की खेती को प्रोत्साहन देने के लिए यह कदम उठाया गया है। केंद्रीय कैबिनेट ने मक्के की एमएसपी में 128 रुपये प्रति क्विंटल की दर से वृद्धि की है।

करोड़ों गरीबों को खाद्य उपलब्ध कराया गया है

साथ ही, बैठक के पश्चात मीडिया को संबोधित करते हुए केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने कहा है, कि खरीफ की पैदावार 2018 में 2850 लाख टन था। जो कि अब बढ़कर 330 मिलियन टन पर पहुँच जाएगा। उनकी माने तो मूंग दाल की एमएसपी में 10% प्रतिशत से ज्यादा की वृद्धि हुई है। अब मूंग दाल की कीमत 8558 रुपये क्विंटल तक पहुँच गई है। वहीं, सोयाबीन, रागी, ज्वार, बाजारा और मेज की एमएसपी में 6 से 7% प्रतिशत का इजाफा किया गया है। इसी प्रकार कपास के समर्थन मूल्य में भी 10% प्रतिशत तक की वृद्धि की गई है। विशेष बात यह है, कि सरकार ने फर्टिलाइजर के भाव में किसी प्रकार की बढ़ोत्तरी नहीं की है। सरकार का यह कहना है, कि हमारी सरकार ने 16-17 करोड़ गरीबों को खाद्य उपलब्ध कराया है।

केंद्र सरकार प्रतिवर्ष 23 फसलों के लिए एमएसपी जारी करती है

बतादें, कि कृषि लागत और मूल्य आयोग (CACP) की सिफारिशों के आधार पर सरकार प्रति वर्ष 23 फसलों के लिए एमएसपी निर्धारित करती है। CACP 23 फसलों पर एमएसपी की सिफारिश लागू करता है। इसके अंतर्गत सात अनाज, सात तिलहन, पांच दलहन और चार कमर्शियल फसलें शम्मिलित हैं। इन 23 फसलों में से 15 खरीफ फसलें हैं और अन्य रबी फसलें हैं।

पिछले साल बासमती चावल के निर्यात का आंकड़ा क्या था

बतादें, कि धान की एमएसपी में वृद्धि किए जाने से पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, ओडिशा, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और बिहार समेत विभिन्न राज्यों के किसानों को मोटा मुनाफा अर्जित होगा। क्योंकि, इन राज्यों में धान का काफी अच्छा उत्पादन होता है। एकमात्र पश्चिम बंगाल 54.34 लाख हेक्टेयर में धान की खेती करता है, जिससे 146.06 लाख टन धान की पैदावार होती है। विशेष बात यह है, कि भारत सबसे ज्यादा बासमती चावल का निर्यात करता है। विगत वर्ष भारत ने 24.97 लाख टन बासमती चावल का निर्यात किया था।

इस राज्य में पीएम किसान सम्मान निधि योजना के तहत 6 नहीं 10 हजार की धनराशि मिलेगी

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना केंद्र सरकार द्वारा किसानों के हित में चलाई गई है। इस योजना का लाभ केवल उन्हीं किसानों को मिल पाएगा, जिन्होंने पीएम किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत खुद को पंजीकृत कराया है।

भारत में किसानों की हालत उतनी अच्छी नहीं है, जितनी की होनी चाहिए। यही कारण है, कि यहां राज्य एवं केंद्र सरकारें किसानों के लिए आए दिन नई नई योजनाएं जारी करती रहती हैं, जिससे उन्हें सहायता की जा सके। ऐसी ही एक योजना प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि योजना है। इस योजना के अंतर्गत किसानों को प्रति वर्ष 6 हजार रुपये सरकार की तरफ से दिए जाते हैं। यह योजना संपूर्ण भारत में लागू है। परंतु, फिलहाल इसी तर्ज पर एक और योजना एक राज्य सरकार ने जारी की है जिसके मुताबिक, अब किसानों को प्रतिवर्ष 6 हजार की जगह 10 हजार रुपये दिए जाएंगे।

किसान कल्याण योजना

बतादें कि यह नई योजना मध्य प्रदेश सरकार ने लागू की है। इस योजना का नाम किसान कल्याण योजना रखा है। इस योजना के अंतर्गत राज्य सरकार प्रतिवर्ष किसानों को उनके कल्याण हेतु 10 हजार रुपये प्रदान करेगी। मतलब कि 6 हजार रुपये जो कि प्रतिवर्ष पीएम किसान सम्मान निधि के तहत मिलते थे, वो तो मिलेंगे ही उनके साथ साथ 4 हजार रुपये और किसानों को मिलेंगे। एमपी गवर्नमेंट ने इस योजना की शुरूआत 2020 में ही कर दी थी। उस समय यह धनराशि दो किस्तों में दो दो हजार के रूप में जाता था।

इस योजना का फायदा कौन से किसानों को मिल पाएगा

इस योजना के अंतर्गत केवल मध्य प्रदेश के किसानों को ही फायदा मिलेगा। सबसे बड़ी बात यह है, कि एमपी के सभी किसानों को इस योजना के तहत लाभ नहीं मिल पाएगा। केवल उन्हीं किसानों को लाभ मिलेगा जिन्होंने पीएम किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत खुद को पंजीकृत कराया है। साथ ही, जानकारी वाली बात यह है, कि जिन किसानों के खातों में किसी टेक्निकल परेशानी की वजह से पीएम किसान योजना वाली धनराशि नहीं आई है, उनके खाते में यह पैसा भी नहीं आएगा।

यह राज्य सरकार सेब की खेती पर किसानों को 50% प्रतिशत अनुदान दे रही है, जल्द आवेदन करें

आजकल बिहार में किसान बड़े पैमाने पर सेब की पैदावार कर रहे हैं। इससे सेब उत्पादक किसानों को लाखों रुपये की आमदनी हो रही है। बतादें, कि दरभंगा, समस्तीपुर, पटना, औरंगाबाद और कटिहार समेत पूरे बिहार में बड़े स्तर पर सेब की खेती की जा रही है।

बिहार में किसान फिलहाल पारंपरिक फसलों की खेती के स्थान पर बागवानी फसलों की खेती में अधिक रूचि ले रहे हैं। यही कारण है, कि राज्य सरकार बागवानी फसलों के लिए बंपर अनुदान मुहैय्या कर रही है। बिहार सरकार का कहना है, कि बागवानी फसलों की खेती से किसान भाइयों की आमदनी में काफी वृद्धि होगी। जिससे उनकी स्थिति काफी हद तक सुधरेगी। अतः वे अपने परिवार को बेहतर और समुचित सुविधाएं दे सकेंगे। ऐसे भी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की सरकार ने विशेष उद्यानिक फसल योजना के अंतर्गत सेब की खेती करने वाले किसान भाइयों को अनुदान देने का निर्णय किया है।

बिहार में हो रही सेब की खेती

आम तौर पर लोगों की यह धारणा है, कि सेब की खेती केवल हिमाचल प्रदेश और जम्मू- कश्मीर में ही की जाती है। हालाँकि, अब इस तरह की कोई बात नहीं है। फिलहाल, बिहार में किसान बड़े पैमाने पर सेब की खेती कर रहे हैं। इससे किसान भाइयों को लाखों रुपये की आमदनी हो रही है। बतादें, कि कटिहार, दरभंगा, समस्तीपुर, पटना और औरंगाबाद समेत पूरे बिहार में सैंकड़ों की तादात में किसान सेब की खेती कर रहे हैं। यहां के किसान हिमाचल प्रदेश से सेब के पौधे लाकर अपने खेतों में रोप रहे हैं।

बिहार सरकार ने 50 प्रतिशत अनुदान देने की घोषणा की है

सेब की खेती के प्रति किसानों की रूचि को देखते हुए बिहार सरकार ने राज्य में सेब के रकबे का विस्तार करने की योजना बनाई है। बिहार सरकार यह चाहती है, कि किसान भाई ज्यादा से ज्यादा संख्या में सेब की खेती करें। जिससे कि उनकी आमदनी में इजाफा हो सके। साथ ही, राज्य की अर्थव्यवस्था को भी काफी मजबूती मिलेगी। यही वजह है, कि प्रदेश सरकार ने सेब की खेती करने वाले कृषकों को 50 प्रतिशत अनुदान देने का फैसला लिया है।

बिहार सरकार किसानों को कितना अनुदान देगी

विशेष बात यह है, कि सरकार ने सेब की खेती करने हेतु प्रति हेक्टेयर इकाई खर्चा 246250 रुपये तय किया है। इसके ऊपर से किसान भाइयों को 50 प्रतिशत अनुदान मिलेगा। मतलब कि सरकार किसान भाइयों को 123125 रुपये मुफ्त में प्रदान करेगी। हालांकि, फिलहाल इस योजना का फायदा केवल कटिहार, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, भागलपुर, बेगूसराय, औरंगाबाद और वैशाली जनपद के किसान ही ले पाऐंगे।

बिहार सरकार इन फसलों पर भी अनुदान दे रही है

बतादें, कि बिहार सरकार राज्य में बागवानी को प्रोत्साहन देने के लिए विभिन्न फसलों पर अनुदान प्रदान कर रही है। फिलहाल, सरकार आम, केला, कटहल, पान, चाय एवं प्याज की खेती करने पर भी बेहतरीन अनुदान दे रही है। जानकारी के लिए बतादें, कि इसके लिए किसान भाई उद्यान निदेशालय की ऑफिसियल बेवसाइट पर जाकर आवेदन करें।

जानें भारत कॉफी उत्पादन के मामले में विश्व में कौन-से स्थान पर है

भारत कॉफी उत्पादन के मामले में दुनिया में 6वें नंबर पर है। भारत लगभग 8200 टन कॉफी का उत्पादन करता है। भारत के अंदर सबसे ज्यादा कॉफी का उत्पादन कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल में होता है। इन राज्यों में किसान भाई सर्वाधिक कॉफी की खेती करते हैं। कॉफी के कुल पैदावार में कर्नाटक की भागीदारी 53 फीसद है।

बतादें, कि कॉफी की खपत दिनों दिन दुनिया भर में लगातार बढ़ती जा रही है। भारत के बड़े-बड़े शहरों में अधिकांश लोग चाय की तुलना में कॉफी पीना अधिक पसंद करते हैं। कॉफी की प्रोसेसिंग करके बहुत सारे सौंदर्य उत्पाद तथा खाने-पीने की चीजें भी निर्मित की जाती हैं। यही वजह है, कि सब्जी और फलों की भांति बाजार में कॉफी की मांग भी इजाफा होता जा रहा है। कॉफी की दुनियाभर में होने वाली मांग की आपूर्ति करने हेतु भारत के अतिरिक्त 6 देश और इसका उत्पादन करते हैं। इस वजह से किसान चाहें तो कॉफी की खेती करके आरंभ से ही अच्छा-खासा लाभ उठा सकते हैं।

भारत के इन राज्यों में सबसे ज्यादा कॉफी का उत्पादन किया जाता है

कॉफी की बेहतरीन गुणवत्ता वाली पैदावार लेने के लिये समुचित जलवायु एवं मिट्टी का होना अत्यंत आवश्यक होता है। विशेषज्ञों के अनुसार, सम शीतोष्ण जमीन में इसकी खेती करना मुनाफे का सौदा साबित हो सकता है। भारत में केरल, तमिलनाडु और कर्नाटक ही ऐसे राज्य है, जहां के बहुत सारे किसान सालों से कॉफी की खेती कर रहे हैं। बतादें, कि एक बार कॉफी की बुवाई-रोपाई करने के पश्चात तकरीबन 50-60 साल तक इसके बीजों की बेहतरीन पैदावार ली जा सकती है।

जानें किस राज्य में कितने प्रतिशत कॉफी का उत्पादन किया जाता है

भारत कॉफी उत्पादन के मामले में 6वें नंबर पर आता है। भारत 8200 टन कॉफी का उत्पादन करता है। केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु में किसान सर्वाधिक कॉफी की खेती करते हैं। कॉफी के कुल उत्पादन में कर्नाटक की भागीदारी 53 प्रतिशत है। इसी प्रकार तमिननाडु की भागीदारी 11 प्रतिशत एवं केरल की 28 प्रतिशत है। कॉफी की सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि इसकी एक बार बिजाई करने पर इसके पेड़ से बहुत वर्षों तक कॉफी का उत्पादन ले सकते हैं।

विभिन्न राज्य सरकारें अपने-अपने स्तर से कॉफी की खेती के लिए प्रोत्साहन देती हैं

वर्तमान में भारत सहित संपूर्ण विश्व में लोग चाय से अधिक कॉफी पीना पसंद कर रहे हैं। अब ऐसी स्थिति में कॉफी की मांग आहिस्ते-आहिस्ते बढ़ती जा रही है। परंतु, इसके उत्पादन में उस हिसाब से वृद्धि नहीं हो रही है। यदि पंजाब, छत्तीसगढ़, बिहार, उत्तर प्रदेश और हरियाणा जैसे राज्यों में किसान भाई कॉफी की खेती करते हैं, तो पारंपरिक फसलों की तुलना में उनको अधिक मुनाफा होगा। हालांकि, बहुत सारे राज्यों में वक्त-वक्त पर कॉफी की खेती करने के लिए कृषकों को अनुदान भी दिया जाता है। स्वयं छत्तीसगढ़ सरकार राज्य में कॉफी की खेती करने के लिए किसानों को बढ़ावा दे रही है।

कॉफी बारिश से ही अपनी सिंचाई आवश्यकता पूर्ण कर लेती है

कॉफी की खेती के लिए गर्म मौसम सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है। दोमट मृदा में कॉफी का उत्पादन काफी अच्छा होता है। यदि किसान भाई चाहें, तो 6 से 6.5 पीएच मान वाली मृदा में कॉफी की खेती कर सकते हैं। जून और जुलाई माह में कॉफी के पौधों की बुवाई करना अच्छा रहेगा। सबसे खास बात किसान भाई कॉफी के खेत में सदैव उर्वरक के तौर पर जैविक खाद का ही उपयोग किया करते हैं। साथ ही, कॉफी की फसल की सिंचाई करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। यह बारिश के जल से अपनी आवश्यकता पूर्ण कर लेती है।

कॉफी के एक पेड़ से कितने वर्ष तक पैदावार ली जा सकती है

कॉफी की विशेषता यह है, कि इसके पौधों पर कीटों का संक्रमण भी बेहद कम होता है। रोपाई करने के 5 वर्ष पश्चात कॉफी की फसल तैयार हो जाती है। कॉफी के एक पेड़ से आप 50 वर्ष तक आमदनी कर सकते हैं। यदि किसान भाई एक एकड़ भूमि में कॉफी का बाग लगाते हैं, तो 3 क्विंटल तक उत्पादन मिलेगा। ऐसे में किसान कॉफी की खेती से अच्छा-खासा मुनाफा उठा सकते हैं।

दालचीनी की खेती से संबंधित विस्तृत जानकारी

दालचीनी की खेती से संबंधित विस्तृत जानकारी (HOW TO GROW CINNAMON)

आज हम आपको मसालों में सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली दालचीनी के बारे में बताने जा रहे हैं। दालचीनी के अंदर विघमान कई सारे औषधीय गुण लोगों के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी होते हैं। बतादें, कि कोरोना काल में दालचीनी का इस्तेमाल काफी बढ़ गया। दालचीनी की मांग विगत कई सालों से बाजार में सदैव अच्छी-खासी बनी रहती है। अब ऐसी स्थिति में किसान इसकी खेती से काफी अच्छा लाभ उठा सकते हैं। चलिए आपको दालचीनी की खेती से संबंधित कुछ अहम जानकारी देते हैं।

दालचीनी दक्षिण भारत का एक प्रमुख पेड़ है। इस वृक्ष की छाल का दवाई और मसालों के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है। दालचीनी एक छोटा सदाबहार पेड़ होता है, जो कि 10–15 मीटर ऊँचा होता है। दालचीनी की खेती दक्षिण भारत के तमिलनाडू एवं केरल में इसका उत्पादन किया जाता है। दालचीनी के छाल का इस्तेमाल हम मसालों के तौर पर करते हैं। इस पौधे की पत्तियों का इस्तेमाल हम तेजपत्ते के तौर पर करते हैं।

दालचीनी की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु एवं मृदा

दालचीनी एक उष्णकटिबंधीय पेड़ की श्रृंखला में आता है। यह पौधा ग्रीष्म एवं आर्द्र जलवायु को आसानी से झेलने की क्षमता रखता है। इस जलवायु की वजह से पौधे का विकास और छाल की नकल बेहतर होती है। इस वजह से इसे नारियल एवं सुपारी के बागों में उत्पादित किया जा सकता है। परंतु, आवश्यकता से अधिक छाया दालचीनी को प्रभावित कर देती है। साथ ही, पेड़ भी कीटों की बली चढ़ जाते हैं। इस फसल को मध्यम जलवायु में खुले मैदान में अलग से भी पैदा किया जा सकता है।

दालचीनी की खेती के लिए भूमि की तैयारी एवं रोपण

दालचीनी के रोपण हेतु जमीन को साफ करके 50 से.मी.X50 से.मी. के गड्ढे 3 मी.X 3मी. के फासले पर खोदना चाहिए। इन गड्ढों में रोपण से पूर्व कम्पोस्ट और ऊपरी मिट्टी को भर देते हैं। दालचीनी के पौधों को जून-जुलाई में रोपित करना अच्छा होता है, क्योंकि पौधे को स्थापित होने में मानसून का फायदा मिल जाता है। 10-12 माह पुराने बीज द्वारा उत्पादित पौधे, अच्छी तरह मूल युक्त कतरनें अथवा एयर लेयर का उपयोग रोपण में करना चाहिए। 3-4 बीज द्वारा उत्पादित पौधे, मूल युक्त कतरनें या एयर लेयर पति गड्ढे में रोपण करना चाहिए। कुछ मामलों में बीजों को सीधे गड्ढे में डाल कर उसे कम्पोस्ट और मृदा से भर देते हैं । शुरूआती सालों में पौधों के अच्छे स्वास्थ्य और उपयुक्त विकास के लिए आंशिक छाया प्रदान करनी चाहिए। जून, जुलाई माह में तैयार किए गए गड्ढों के मध्य में दालचीनी का पौधरोपण करना चाहिए। इस दौरान एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि रोपण के पश्चात बारिश का पानी बंधा में इकठ्ठा ना हो।

दालचीनी की किस्में

अगर हम दालचीनी की किस्मों की बात करें तो कोंकण कृषि विश्वविद्यालय द्वारा साल 1992 में कोंकण तेज की खोज और प्रचार-प्रसार किया है। यह किस्म छाल और पत्तियों से तेल निकालने के लिए बेहतर मानी जाती है। दालचीनी में 6.93 प्रतिशत यूजेनॉल, 3.2 प्रतिशत तेल और 70.23 प्रतिशत सिनामोल्डेहाइड मौजूद होता है।

दालचीनी के पेड़ के लिए उर्वरक

दालचीनी के पेड़ में प्रथम वर्ष 5 किलो खाद या कम्पोस्ट, 20 ग्राम नाइट्रेट (40 ग्राम यूरिया), 18 ग्राम फास्फोरस (115 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट), 25 ग्राम पोटाश (45 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) ड़ाली जाए। इस उर्वरक की मात्रा प्रति वर्ष इसी प्रकार बढ़ानी चाहिए एवं 10 वर्ष के पश्चात 20 किलो खाद अथवा कम्पोस्ट, 200 ग्राम नाइट्रोजन (400 ग्राम यूरिया), 180 ग्राम फॉस्फोरस (सिंगल सुपर फास्फेट का 1 किलो 100 ग्राम) डालें। , 250 ग्राम पोटाश (पोटाश का 420 ग्राम म्यूरेट) देना उचित होता है।

दालचीनी के पेड़ों लगने वाले रोग एवं उनकी रोकथाम
बीजू अगंमारी

यह रोग डिपलोडिया स्पीसीस द्वारा पौधों में पौधशाला के दौरान होता है। कवक के द्वारा तने के चहुंओर हल्के भूरे रंग के धब्बे हो जाते हैं। अत: पौधा बिल्कुल नष्ट हो जाता है। इस रोग की रोकथाम करने के लिए 1% प्रतिशत बोर्डियो मिश्रण का छिड़काव किया जाता है।

भूरी अगंमारी

यह रोग पिस्टालोटिया पालमरम की वजह से होता है। इसके प्रमुख लक्षणों में छोटे सफेद रंग का धब्बा होता है, जो कुछ समय के पश्चात स्लेटी रंग का होकर भूरे रंग का किनारा बन जाता है। इस रोग पर सहजता से काबू करने के लिए 1% प्रतिशत बोर्डियो मिश्रण का छिड़काव करना चाहिए।
यह भी पढ़ें: वरुण नामक ड्रोन 6 मिनट के अंदर एक एकड़ भूमि पर छिड़काव कर सकता है|

कीट दालचीनी तितली

दालचीनी तितली (चाइलेसा कलाईटिया) नवीन पौधों एवं पौधशाला का प्रमुख कीट माना जाता है। आमतौर पर यह मानसून काल के पश्चात नजर आता है। इस का लार्वा कोमल और नई विकसित पत्तियों को खाता है। अत्यधिक ग्रसित मामलों में पूरा पौधा पत्ती विहीन हो जाता है और केवल पत्तियों के मध्य की उभरी हुई धारी ही बचती है। इसकी वयस्क बड़े आकर की तितली होती है एवं यह दो तरह की होती है। पहले बाहरी सतह पर सफेद धब्बे नुमा काले भूरे रंग के पंखों और दूसरी के नील सफेद निशान के काले रंग के पंख उपस्थित होते हैं। पूरी तरह से विकसित लार्वा तकरीबन 2.5 से.मी. लम्बे पार्श्व में काली धारी समेत हल्के पीले रंग का होता है। इस कीट को काबू में करने के लिए कोमल और नई विकसित पत्तियों पर 0.05% क्वानलफोस का छिड़काव करना फायदेमंद होता है।

लीफ माइनर

लीफ माइनर (कोनोपोमोरफा सिविका) मानसून काल के दौरान पौधशाला में पौधों को काफी ज्यादा नुकसान पहुँचाने वाला प्रमुख कीट माना जाता है। इसका वयस्क चमकीला स्लेटी रंग का छोटा सा पतंगा होता है। इसका लार्वा प्रावस्था में हल्के स्लेटी रंग का उसके उपरांत गुलाबी रंग का 10 मि.मीटर लम्बा होता है। यह कोमल पत्तियों की ऊपरी और निचली बाह्य आवरण (इपिडरमिस) के उतकों को खाकर उस पर छाले जैसा निशान छोड़ देते हैं। ग्रसित पत्ती मुरझाकर सिकुड़ जाती हैं एवं पट्टी पर बड़ा सा छेद भी बन जाता है। इस कीट पर नियंत्रण पाने हेतु नवीन पत्तों के निकलने पर 0.05% क्वनालफोस का छिड़काव करना काफी अच्छा होता है। सुंडी और बीटल भी दालचीनी के नए पत्तों को प्रभावी तौर पर खाते हैं। क्वनालफोस 0.05% को डालने से इसको भी काबू में कर सकते हैं।

पर्ण चित्ती एवं डाई बैंक

पर्ण चित्ती और डाई बैक रोग कोलीटोत्राकम ग्लोयोस्पोरियिड्स की वजह से होता है। पत्तियों की पटल पर छोटे गहरे सफेद रंग के धब्बे आ जाते हैं, जो नाद में एक दूसरे से मिलके अनियमित धब्बा तैयार करते हैं। कई बार देखा गया है, कि पत्तों के संक्रमित हिस्से पर छेड़ जैसा निशान नजर आता है। इसके पश्चात संपूर्ण पत्ती भाग संक्रमित हो जाता है। इतना ही नहीं यह संक्रमण तने तक फैलकर डाई बैक की वजह बनता है। इस रोग की रोकथाम करने के लिए संक्रमित शाखाओं की कटाई-छटाई एवं 1% बोर्डियो मिश्रण का छिड़काव किया जाता है।

रामदेव बाबा ने पाम ऑयल का उत्पादन करने का ऐलान किया है

बाबा रामदेव का कहना है, कि तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और असम समेत 12 राज्यों में किसान पतंजलि के संपर्क में पाम ऑयल की खेती कर रहे हैं। उन्होंने कहा है, कि पतंजलि की नर्सरी में पाम ऑयल के एक करोड़ पौधे तैयार किए जा चुके हैं।

पतंजलि अब स्वयं पाम ऑयल की खेती करेगी। रामदेव बाबा ने स्वयं ही इस बात की घोषणा की है। उन्होंने गुरुवार के दिन मीडिया को संबोधित करते हुए कहा है, कि पतंजलि अब स्वयं पाम तेल का उत्पादन करेगी। इसकी खेती के लिए किसानों को पतंजलि के साथ जोड़ा जाएगा। बाबा रामदेव के मुताबिक, अभी तक पाम ऑयल की खेती करने वाले 40 हजार किसान पतंजलि से जुड़ गए हैं। आगामी वक्त में इनकी तादात 5 लाख तक करनी है। अब ऐसी स्थिति में पतंजलि में पाम ऑयल की पैदावार चालू होने से 5 लाख किसानों को प्रत्यक्ष तौर पर रोजगार मिलेगा।

नई किस्मों के माध्यम से 20 से 25 टन उत्पादन मिलेगा

बाबा रामदेव का कहना है, कि किसान विशेष किस्म की पाम ऑयल की खेती करेंगे। इससे पहले की तुलना में अधिक उत्पादन मिलेगा। उन्होंने कहा है, कि इस नवीन किस्म के पाम ऑयल के पौधों की आयु भी पहले की तुलना में अधिक है। अब इसकी खेती चालू करने पर आप इससे 40 साल तक फसल काट सकते हैं। बाबा रामदेव ने बताया कि पहले पाम ऑल का उत्पादन 16 से 18 टन प्रति हेक्टेयर था। परंतु, फिलहाल नवीन किस्म की खेती करने पर 20 से 25 टन उत्पादन मिलेगा। यदि किसान भाई एक हेक्टेयर में पाम ऑयल की खेती करते हैं। तब आपके बाग में पांच साल के भीतर ही फल आने चालू हो जाएंगे। इस प्रकार एक हेक्टेयर से 2 लाख रुपये की आमदनी होगी।

भारत प्रतिवर्ष लाखों टन पाम ऑयल की खपत करते हैं

बतादें, कि भारत में पाम ऑयल की खपत बेहद ही ज्यादा है। यह पाम ऑयल की खपत के मामले में विश्व का दूसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता है। भारत में प्रति वर्ष पाम ऑयल की खपत 90 लाख टन है। विशेष बात यह है, कि भारत में खाद्य तेल की कुल खपत में पाम ऑयल की भागीदारी 40% फीसदी है।

भारत को इससे करोड़ों की बचत होगी

बाबा रामदेव ने बताया है, कि तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और असम समेत 12 राज्यों में किसान पतंजलि के साथ जुड़कर पाम ऑयल की खेती कर रहे हैं। बाबा रामदेव ने कहा कि पतंजलि की नर्सरी में पाम ऑयल के एक करोड़ पौधे तैयार किए हैं। आगामी 5 से 6 सालों में इसकी तादात बढ़ाकर 8 से 10 करोड़ करनी है। साथ ही, उन्होंने कहा है, कि पतंजलि द्वारा पाम ऑल का उत्पादन चालू करने से देश को बेहद लाभ मिलेगा। उसे विदेशों से धन खर्च करके पाम ऑयल का आयात करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। इससे भारत को 2 लाख करोड़ रुपये की बचत होगी।

मानसून की धीमी रफ्तार और अलनीनो बढ़ा रहा किसानों की समस्या

आपकी जानकरी के लिए बतादें, कि विगत 8 जून को केरल में मानसून ने दस्तक दी थी। इसके उपरांत मानसून काफी धीमी गति से चल रही है। समस्त राज्यों में मानसून विलंभ से पहुंच रहा है।

केरल में मानसून के आने के पश्चात भी फिलहाल बारिश औसत से कम हो रही है। साथ ही, मानसून काफी धीरे-धीरे अन्य राज्यों की ओर बढ़ रही है। पंजाब, उत्तर प्रदेश और हरियाणा समेत बहुत से राज्यों में लोग बारिश के लिए तरस रहे हैं। हालांकि, बिहार एवं झारखंड में मानसून की दस्तक के उपरांत भी प्रचंड गर्मी पड़ रही है। लोगों का लू एवं तेज धूप से हाल बेहाल हो चुका है। यहां तक कि सिंचाई की पर्याप्त उपलब्धता में गर्मी की वजह से फसलें सूख रही हैं। ऐसी स्थिति में किसानों के मध्य अलनीनो का खतरा एक बार पुनः बढ़ चुका है। साथ ही, जानकारों ने बताया है, कि यदि मौसम इसी प्रकार से बेईमान रहा तो, इसका असर महंगाई पर भी देखने को मिल सकता है, जिससे खाद्य उत्पाद काफी महंगे हो जाऐंगे।

अलनीनो की वजह से महंगाई में बढ़ोत्तरी हो सकती है

मीडिया खबरों के अनुसार, अलनीनो के कारण भारत में खुदरा महंगाई 0.5 से 0.6 प्रतिशत तक बढ़ सकती है। मुख्य बात यह है, कि अलनीनो की वजह से आटा, गेहूं, मक्का, दाल और चावल समेत खाने-पीने के समस्त उत्पाद भी महंगे हो जाऐंगे। साथ ही, अलनीनो का प्रभाव हरी सब्जियों के ऊपर भी देखने को मिल सकता है। इससे शिमला मिर्च, खीरा, टमाटर और लौकी समेत बाकी हरी सब्जियों की कीमतों में काफी इजाफा हो जाऐगा।

मानसून काफी आहिस्ते-आहिस्ते चल रहा है

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि केरल में 8 जून को मानसून का आगमन हुआ था। जिसके बाद मानसून काफी आहिस्ते-आहिस्ते चल रही है। यह समस्त राज्यों में विलंब से पहुँच रहा है। विशेष बात यह है, कि मानसून के आगमन के उपरांत भी अब तक बिहार समेत विभिन्न राज्यों में वर्षा समान्य से भी कम दर्ज की गई है। अब ऐसी स्थिति में सामान्य से कम बारिश होने से खरीफ फसलों की बिजाई पर प्रभाव पड़ सकता है। अगर मानसून के अंतर्गत समुचित गति नहीं आई, तो देश में महंगाई में इजाफा हो सकता है।

2023-24 में इतने प्रतिशत महंगाई होने की संभावना

भारत में अब तक बारिश सामान्य से 53% प्रतिशत कम दर्ज की गई है। सामान्य तौर पर जुलाई माह से हरी सब्जियां महंगी हो जाती हैं। साथ ही, ब्रोकरेज फर्म ने फाइनेंसियल ईयर 2023-24 में महंगाई 5.2 प्रतिशत रहने का अंदाजा लगाया है। उधर रिजर्व बैंक ने कहा है, कि चालू वित्त वर्ष में महंगाई 5 प्रतिशत अथवा उससे कम भी हो सकती है।

चीनी की पैदावार में इस बार गिरावट देखने को मिली है

बतादें, कि भारत में सामन्यतः चीनी की पैदावार में विगत वर्ष की अपेक्षा कमी दर्ज की गई है। साथ ही, चावल की हालत भी ठीक नहीं है। इस्मा के अनुसार, चीनी की पैदावार 3.40 करोड़ टन से घटकर 3.28 करोड़ टन पर पहुंच चुकी है। साथ ही, यदि हम चावल की बात करें तो अलनीनो के कारण इसका क्षेत्रफल इस बार सिकुड़ सकता है। वर्षा कम होने के चलते किसान धान की बुवाई कम कर पाऐंगे, क्योंकि धान की फसल को काफी ज्यादा जल की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में धान की पैदावार में गिरावट आने से चावल महंगे हो जाएंगे, जिसका प्रभाव थोक एवं खुदरा बाजार में देखने को मिल सकता है।

इस अनसुनी सब्जी से किसान सेहत और मुनाफा दोनों कमा सकते हैं

इस अनसुनी सब्जी से किसान सेहत और मुनाफा दोनों कमा सकते हैं

आज हम आपको इस लेख में ऐसी सब्जी के बारे में बताने वाले हैं, जिसका नाम आपने शायद ही सुना होगा। यदि आप बाजार में सहजता से उपलब्ध होने वाली त भिंडी, लौकी, बैगन और गोभी इत्यादि सब्जियों को खाकर ऊब चुके हैं, तो आज आपको हम बताएंगे उम्दा और पोषक तत्वों से युक्त जुकिनी सब्जी के बारे में। इस सब्जी को आप बड़े स्वाद से खा सकते हैं।

सब्जियों का सेवन शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए जरुरी

सामान्यतौर पर घरों में लौकी, भिंडी एवं तोरई आदि जैसी सब्जियां बनाई जाती हैं। लेकिन हम आपको आज बताएंगे एक ऐसी सब्जी के बारे में जिसका नाम भी बहुत कम लोग जानते हैं। हर कोई जानता है, कि अच्छी सब्जी खाने से सेहत और बुद्धि भी अच्छी रहती है। यहां तक कि चिकित्सकों का भी यही कहना होता है, कि अच्छी सेहत के लिए अच्छी सब्जियों का सेवन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इस बात में कोई शक भी नहीं है। क्योंकि, शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक विकास के लिए अच्छी सब्जियों का सेवन करना अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसलिए आज हम इस लेख में आपको एक अनसुनी सब्जी के बारे में बताऐंगे। इस सब्जी का नाम जिकुनी है। अजीब से नाम की यह सब्जी एक प्रकार की तोरई है, जो की रंगीन होती है।

जुकिनी तोरी क्या और कैसी होती है

यह सब्जी बिल्कुल कद्दू की भांति दिखाई पड़ती है। परंतु, यह कद्दू नहीं होती है। इसका रंग, आकार एवं बाहरी छिलका बेसक कद्दू जैसा है। परंतु, खाने एवं बनाने में यह बिल्कुल तोरी जैसी होती है। बहुत सारे क्षेत्रों में यह भिन्न-भिन्न रंग की होती है, कुछ क्षेत्रों में यह पीले व हरे रंग की होती है। इसको भिन्न-भिन्न नाम जैसे कि नेनुआ, तोरी और तोरई आदि से भी जाना जाता है।

जिकुनी में विटामिन और खनिज भरपूर मात्रा में पाया जाता है

जिकुनी सब्जी के अंदर विभिन्न प्रकार के पोषण तत्व पाए जाते हैं। खबरों के मुताबिक, इसमें तकरीबन समस्त प्रकार के विटामिन व खनिजों का मिश्रण पाया जाता है। विटामिन ए, सी, के, पोटेशियम और फाइबर आदि की भरपूर मात्रा पाई जाती है। अब ऐसी स्थिति में यदि आप इस जुकिनी सब्जी का सेवन करते हैं, तो आप विभिन्न प्रकार की बीमारियों से निजात पा सकते हैं।

जिकुनी के एक पौधे से कितने किलो फल मिल सकेंगे

यदि आप इस जुकिनी सब्जी की खेती करते हैं, तो आप इससे काफी अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। क्योंकि, इसके एक पौधे से तकरीबन 12 किलो तक फल प्राप्त होते हैं।

परंतु, ध्यान देने योग्य बात यह है, कि इसकी खेती सितंबर एवं नवंबर के महीने में की जाती है। देखा जाए तो इसकी खेती से 25 से 30 दिन के अंदर ही फल आने चालू हो जाते हैं। फिर उसके पश्चात 40 से 45 दिनों के भीतर ही इसके फलों की तुड़ाई आरंभ कर दी जाती है। बाजार में जुकिनी सब्जी की कीमत तकरीबन 25 से 30 रुपए प्रति किलो के भाव होती है।

खरीफ सीजन क्या होता है, इसकी प्रमुख फसलें कौन-कौन सी होती हैं

खरीफ सीजन क्या होता है, इसकी प्रमुख फसलें कौन-कौन सी होती हैं

आज हम आपको खरीफ फसल से जुड़ी कुछ अहम बात बताने जा रहे हैं। इस लेख में जानेंगे कि खरीफ की फसल कौन कौन सी होती हैं और इन फसलों की बुवाई कब की जाती है। भारत में मौसम के आधार पर फसलों की बुवाई की जाती है। इन मौसमों को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है। खरीफ फसल, रबी फसल एवं जायद फसल। लेकिन आज हम खरीफ की फसल के बारे में आपको बताने वाले हैं।

अगर हम खरीफ की फसलों के विषय में बात करें तो प्रमुखतः खरीफ की फसलों की बुवाई का समय जून – जुलाई होता है। जो कि अक्टूबर माह में पककर तैयार हो जाती हैं। बतादें कि अधिक तापमान व आर्द्रता का होना खरीफ फसलों के लिए अत्यंत आवश्यक होता है। वहीं जब खरीफ फसलों का पकने का समय आता है। तब शुष्क वातावरण का होना आवश्यक होता है। एक तरह से खरीफ फसलों को मानसूनी फसल भी कहा जाता है। खरीफ शब्द का इतिहास देखें तो यह एक अरबी शब्द है, जिसका अर्थ पतझड़ होता है। वर्षाकाल में इसकी बुवाई की जाती है। लेकिन कटाई के दौरान पतझड़ का समय आ जाता है।

खरीफ फसलों को उच्च आद्रता और तापमान की जरुरत होती है। जानकारी के लिए बतादें कि एशिया के अंदर भारत, बांग्लादेश एवं पाकिस्तान में खरीफ की फसलों की बुवाई की जाती है। खरीफ फसलों की बुवाई जून-जुलाई में होती है। लेकिन भिन्न भिन्न स्थानों पर मानसून आने का वक्त और वर्षा में अंतराल होने की वजह से बिजाई के दौरान भी फासला देखा जाता है।

खरीफ की कुछ प्रमुख फसलें

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि धान, मक्का, बाजरा, जौ, ज्वार, कोदो, मूंगफली, सोयाबीन, तिल, अंडी (अरंण्ड), अरहर, मूंग, उड़द, गन्ना, सेब, बादाम, खजूर, अखरोट, खुबानी, पूलम, आड़ू, संतरा, अमरुद, लीची, बैगन, लीची, टिंडा, टमाटर, बीन, लोकी, करेला, तोरई, सेम, खीर, ककड़ी, कद्दू, तरबूज, लोबिया, कपास और ग्वार आदि खरीफ की कुछ प्रमुख फसलें हैं।

चावल

चावल एक तरह की उष्णकटबंधीय फसल है, चावल की फसल जलवायु में नमी एवं वर्षा पर निर्भर रहती है। भारत विश्व में दुसरे नंबर का चावल उत्पादक देश है। चावल की खेती के आरंभिक दिनों में सिंचाई हेतु 10 से 12 सेंटीमीटर गहरे जल की आवश्यकता पड़ती है। चावल की साली, अमन, अफगानी, बोरो, पलुआ और आस जैसी विभिन्न प्रजतियाँ होती हैं।

धान की खेती हेतु तकरीबन 24 % फीसद तापमान व 150 सेंटीमीटर की जरुरत पड़ती है। विशेष तौर पर भारत के हरियाणा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश और पंजाब में चावल का उत्पादन किया जाता है।

कपास

कपास एक उष्णकटबंधीय एवं उपोष्णकटिबंधीय फसल में आती है। भारत कपास उत्पादन के मामले में विश्व में तीसरे स्थान पर आता है। कपास एक शुष्क फसल है। परंतु, जड़ों को पकने के दौरान जल की आवश्यकता पड़ती है।

शॉर्ट स्टेपल, लॉन्ग स्टेपल, मीडियम स्टेपल आदि कपास की कुछ किस्में हैं। कपास की खेती के लिए 21-30°C तापमान की जरूरत पड़ती है। कपास की फसल में 50 से 100 सेंटीमीटर वर्षा की जरूरत होती है। काली मृदा में कपास की खेती काफी अच्छी होती है, जिससे उत्पादन अच्छा-खासा मिलता है। भारत के राजस्थान, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, तमिल नाडु, गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा में कपास का उत्पादन किया जाता है।

मूंगफली

भारत में मूंगफली की खेती मुख्यतः कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिल नाडु, गुजरात में की जाती है। मूंगफली की बुवाई ज्यादातर मानसून के आरम्भ में की जाती है। मूंगफली की बुवाई 15 जून से लेकर 15 जुलाई के बीच की जाती है। मूंगफली की बुवाई के लिए भुरभुरी दोमट एवं बलुई दोमट मृदा उपयुक्त होती है। साथ ही, भूमि में समुचित जल निकासी की व्यवस्था होनी चाहिए।

लौकी

लौकी की यानी की घीया शारीरिक स्वास्थ्य के लिए काफी अच्छी मानी जाती है। लौकी के अंदर पोटेशियम, मैग्नीशियम, आयरन, विटामिन बी और विटामिन सी पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त लौकी विभिन्न गंभीर रोगों जैसे कि वजन कम करने, मधुमेह, कोलेस्ट्रॉल और पाचन क्रिया में भी इस्तेमाल किया जाता है। लौकी की खेती ग्रीष्म एवं आर्द्र जलवायु में होती है। लौकी का सर्वाधिक उत्पादन उत्तर प्रदेश, बिहार और हरियाणा में किया जाता है। बलुई मृदा एवं चिकनी मिट्टी सबसे अच्छी मानी जाती है।

टमाटर

जब हम सब्जी की बात करें तो टमाटर का नाम ना आए ऐसा हो ही नहीं सकता। विटामिन एवं पोटेशियम के साथ-साथ टमाटर के अंदर विभिन्न प्रकार के खनिज तत्व विघमान रहते हैं। जो कि सेहत के लिए काफी लाभकारी साबित होते हैं। भारत के उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, राजस्थान, बिहार और कर्नाटक आदि राज्यों में टमाटर का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है। टमाटर की किस्मों की बात की जाए तो इसकी अरका विकास, अर्का सौरव, सोनाली, पूसा शीतल, पूसा 120, पूसा रूबी एवं पूसा गौरव आदि विभिन्न देशी उन्नत किस्में उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त पूसा हाइब्रिड-3, रश्मि, अविनाश-2, पूसा हाइब्रिड-1 एवं पूसा हाइब्रिड-2 इत्यादि हाइब्रिड किस्में उपलब्ध हैं।

लीची

लीची एक अच्छी गुणवत्ता वाला रसीला फल होता है। लीची का सेवन करने से अच्छा पाचन तंत्र और बेहतर रक्तचाप जैसे कई सारे शारीरिक लाभ होते हैं। लीची की सबसे पहले शुरुआत या खोज दक्षिणी चीन से हुई थी। भारत विश्व में लीची उत्पादन के मामले में दूसरे स्थान पर आता है। भारत के जम्मू कश्मीर, मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश को देखी-देखा अब बिहार, पंजाब, पश्चिम बंगाल, असम, त्रिपुरा, उत्तराखंड, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ और उड़ीसा में भी लीची की खेती होने लगी है।

भिंड़ी

भिंड़ी विभिन्न प्रकार की सब्जियों में अपना अलग पहचान रखती है। काफी बड़ी संख्या में लोग इसको बहुत पसंद करते हैं। भिंडी के अंदर कैल्शियम, विटामिन ए, विटामिन बी, फास्फोरस जैसे कई तरह के पोषक तत्व भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। भिंड़ी का सेवन करने से लोगों के पेट से संबंधित छोटे-छोटे रोग बिल्कुल समाप्त हो जाते हैं। भिंड़ी की खेती के लिए बलुई दोमट मृदा सबसे उपयुक्त मानी जाती है। भिंडी की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु की बात की जाए तो इसकी खेती के लिए अधिक गर्मी एवं अधिक ठंड दोनों ही खतरनाक साबित होती हैं। यदि हम भिंड़ी की किस्मों की बात करें तो पूसा ए, परभनी क्रांति, अर्का अनामिका, वीआरओ 6 और हिसार उन्नत इत्यादि हैं।

जानें टमाटर की कीमतों में क्यों और कितनी बढ़ोत्तरी हुई है

टमाटर के भाव में अच्छा-खासा इजाफा हुआ है। टमाटर के एक थोक विक्रेता ने बताया है, कि बारिश एवं ओलावृष्टि की वजह से टमाटर की लगभग 50% प्रतिशत फसल चौपट हो गई। इससे आकस्मिक तौर पर बाजार में टमाटर की अवक में गिरावट आ गई, जिससे कीमतों में इजाफा होने लगा है।

महाराष्ट्र राज्य में टमाटर की कीमतों में काफी बढ़ोत्तरी हुई है। विगत एक सप्ताह के भीतर कीमत में 100% फीसद का इजाफा हुआ है। इससे आम जनता की रसोई का बजट प्रभावित हो गया है। परंतु, टमाटर की खेती करने वाले उत्पादकों के चेहरे पर मुस्कराहट आई है। कृषकों को यह आशा है, कि यदि इसी प्रकार से टमाटर के भावों में इजाफा होता रहा, तो वह थोड़ी-बहुत हानि की भरपाई कर सकते हैं।

विगत माह महाराष्ट्र के टमाटर उत्पादक भाव में कमी आने के चलते लागत तक भी नहीं निकाल पा रहे थे। मंडियों के व्यापारी उनसे 2 से 3 रुपये किलो टमाटर खरीद रहे थे। परंतु, फिलहाल उनको टमाटर का अच्छा-खासा भाव अर्जित हो रहा है।

टमाटर की कीमत 30 से 60 रूपए प्रतिकिलो हो चुकी है

मीडिया एजेंसियों के अनुसार, महाराष्ट्र में टमाटर का खुदरा भाव 30 रुपये से बढ़ कर 50 से 60 रुपये प्रति किलो हो चुका है। अंधेरी, नवी मुंबई, मंबुई एवं ठाणे समेत विभिन्न शहरों में रिटेल बाजार में टमाटर 50 से 60 रुपये प्रति किलो के हिसाब से विक्रय किए जा रहे हैं। साथ ही, एपीएमसी वाशी के निदेशक संजय पिंगले ने बताया है, कि टमाटर की आवक में गिरावट आने के चलते भाव में इजाफा हुआ है। कुछ महीने पहले मांग के मुकाबले टमाटर का उत्पादन काफी अधिक था। इस वजह से टमाटर का भाव धड़ाम से गिर गया था। तब खुदरा बाजार में टमाटर 20 से 30 रुपये प्रति किलो के हिसाब से बेचे जा रहे थे। संजय पिंगले के अनुसार, जब टमाटर की आवक बढ़ेगी तब ही कीमतों में सुधार हो सकता है। हालांकि, अभी कुछ दिनों तक टमाटर की कीमत यथावत ही रहेगी।

थोक व्यापारी इतने रुपए किलो टमाटर खरीद रहे हैं

वाशी के थोक व्यापारी मंगल गुप्ता ने बताया है, कि वर्षा और ओलावृष्टि की वजह से टमाटर की लगभग 50 प्रतिशत फसल चौपट हो चुकी है। इसकी वजह से अचानक बाजार में टमाटर की आवक में गिरावट आई है। नतीजतन भाव बढ़ने लगा। फिलहाल, थोक व्यापारी 16 से 22 रुपए किलो टमाटर खरीद रहे हैं। यही वजह है, जो इसका खुदरा भाव 60 रुपए किलो पर पहुँच गया है। मंगल गुप्ता के मुताबिक, मौसम अगर ठीक रहा तो कुछ ही हफ्तों के अंदर कीमत में गिरावट आ सकती है।

इन जगहों पर टमाटर की कीमतें हुई महंगी

साथ ही, पुणे के एक व्यवसायी ने बताया है, कि पहले रिटेल बाजार में टमाटर का भाव 10 से 20 रुपये प्रति किलो था। परंतु, दो माह के अंदर ही टमाटर कई गुना महंगा हो गया। बतादें, कि टमाटर की कीमतें राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली व महाराष्ट्र के साथ-साथ गाजियाबाद एवं नोएडा में भी बढ़ी हैं। जो टमाटर यहां पर एक सप्ताह पूर्व 15 से 20 रुपये प्रति किलो बिक रहा था। वर्तमान में उसकी कीमत 30 रुपये प्रति किलो पर पहुँच गई है।

इस राज्य में मडुआ की खेती को प्रोत्साहन दिया जा रहा है

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि बिहार राज्य के गया में कृषकों को मडुआ की खेती के लिए बढ़ावा दिया जा रहा है। परंतु, फिलहाल किसान गया जनपद में मडुआ के साथ- साथ चीना फसल का भी उत्पादन करेंगे।

एक बार पुनः भारतीय किसान मोटे अनाज की खेती की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। किसानों की रूचि ज्वार, बाजरा और मक्का जैसी मोटे अनाज की फसलों की खेती के प्रति बढ़ रही है। विभिन्न राज्यों में किसानों ने तो विदेश से बीज मंगाकर इन मोटे अनाजों की खेती चालू कर दी है। दरअसल, यूनाइटेड नेशन द्वारा साल 2023 को अन्तरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष घोषित कर दिया है। केंद्र सरकार के साथ-साथ राज्य सरकारें भी अपने-अपने स्तर से मोटे अनाज की खेती को प्रोत्साहन दे रही हैं। इसके लिए कृषकों को निःशुल्क बीज किट बांटी जा रही हैं। साथ ही, बिहार भी इसमें पीछे नहीं है। यहां के गया जनपद में किसानों को मोटे अनाज की खेती करने के लिए बढ़ावा दिया जा रहा है।

कृषि विभाग ने पांच हेक्टेयर में चीना की खेती कराई

मीडिया एजेंसियों के अनुसार, गया जनपद में कृषकों को मडुआ की खेती के लिए बढ़ावा दिया जा रहा है। बतादें, कि वर्तमान में किसान गया जिले में मडुआ के साथ- साथ चीना फसल का भी उत्पादन करेंगे। विशेष बात यह है, कि कृषि विभाग कृषकों से जनपद में पांच हेक्टेयर भूमि में चीना की खेती कराएगी, जिससे कि इसके बीज को कृषकों को बीज वितरित किया जा सके।

चीना को किस रूप में बनाकर सेवन किया जाता है

चीना की फसल मोटे अनाज की श्रेणी में आने वाली फसल है। चीना की खेती ऊसर भूमि, बलुई मृदा और ऊँचे खेत में भी सहजता से की जा सकती है। चीना की सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि यह एक असिंचित श्रेणी की फसल है। चीना की खेती में बारिश से ही सिंचाई की आवश्यकता पूर्ण हो जाती है। अगर हम इसके अंदर मौजूद पोषक तत्वों की बात करें तो इसके अंदर फाइबर समेत विभिन्न पोषक तत्व भरपूर मात्रा उपलब्ध होते हैं। इतना ही नहीं चीना का सेवन करने वाले लोगों को मधुमेह और ब्लड़ प्रेशर जैसे रोगों से राहत मिलती है। चीना का उपयोग भात, रोटी और खीर निर्मित कर खाया जाता है।

यहां किए जा रहे चीना के बीज तैयार

कृषि जानकारों के मुताबिक, गया जनपद में आवश्यकतानुसार एवं समयानुसार बारिश ना होने की स्थिति में कई बार किसान काफी जमीन पर धान की रोपाई नहीं करते हैं। अब ऐसी स्थिति में किसान भाई जल की कमी के चलते खाली पड़ी ऐसी भूमि पर चीना की खेती कर सकते हैं। विशेष बात यह है, कि चीना की फसल 2 महीने के अंदर ही पककर तैयार हो जाती है। अब ऐसी स्थिति में इसकी खेती से किसान भाई हानि की भरपाई कर सकते हैं। इस वर्ष टनकुप्पा प्रखंड के मायापुर फार्म के अंतर्गत भी चीना के बीज तैयार किए जा रहे हैं।

ESCORTS

THE POWERTRAC EURO 55 NEXT

#TechnologyDesignedToDeliver

55 HP ENGINE | 2-WHEEL DRIVE | 15-SPEED GEARBOX | INDEPENDENT PTO | 2,000KG SENSI 1 LIFT

EQUIPPED WITH ADVANCED TECHNOLOGY FOR HIGH-END APPLICATION

POWERTRAC

देश का # 1 किफ़ायती ट्रैक्टर

जानें लहसुन की कीमत में कितना इजाफा हुआ है

जानें लहसुन की कीमत में कितना इजाफा हुआ है

मंडी समिति के सचिव मदन लाल गुर्जर ने बताया है, कि विगत एक सप्ताह से लहसुन के भाव में यह बढ़ोत्तरी हुई है। मंगलवार को लहसुन की कीमत में 300 रुपये प्रति क्विंटल की दर से वृद्धि दर्ज की गई।

राजस्थान में लहसुन के भाव में काफी उछाल आया है। अब ऐसी स्थिति में मंडियों में लहसुन की आवक बढ़ गई है। अत्यधिक कीमत होने की वजह से बड़ी तादात में किसान लहसुन की उपज को विक्रय करने के लिए मंडी पहुंच रहे हैं। साथ ही, ऐसा भी सुनने को मिल रहा है, कि आगामी समय में कीमतों में और वृद्धि दर्ज होने की संभावना होती है। विशेष बात यह है, कि लहसुन के भाव में यह वृद्धि प्रतापगढ़ की मंडी में अधिक देखने को मिल रही है। इससे लहसुन उत्पादक किसान बेहद खुश दिखाई दे रहे हैं। लहसुन की खेती करना काफी मुनाफे का सौदा साबित होता है। लहसुन शरीर के लिए काफी फायदेमंद होता है। कई बार चिकित्सक भी मरीजों को लहसुन खाने की सलाह देते हैं। अधिकांश लोग सब्जी में लहसुन का तड़का दिए बिना सब्जी पसंद नहीं करते हैं।

लहसुन के भाव में 300 रुपए प्रति क्विंटल की दर से वृद्धि

मीडिया एजेंसियों के अनुसार, मंडी समिति के सचिव मदन लाल गुर्जर ने बताया है, कि विगत एक सप्ताह से लहसुन के भाव में यह वृद्धि सामने आ रही है। मंगलवार को लहसुन की कीमत में 300 रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से वृद्धि दर्ज की गई है। वर्तमान में मंडी के अंदर एक क्विंटल लहसुन का भाव 13000 हो चुका है। यही कारण है, कि किसान अपनी फसल विक्रय करने हेतु बड़ी तादात में मंडी पहुँच रहे हैं। मंडी में प्रतिदिन लगभग 1500 बोरी लहसुन की आवक हो रही है। लहसुन व्यापारी नितिन चंडालिया का कहना है, कि आगामी दिनों में लहसुन की कीमत में और उछाल आएगा। साथ ही, यहां से लहसुन का निर्यात फिलहाल अन्य राज्यों में भी चालू हो चुका है।

टमाटर के भाव में अच्छा-खासा इजाफा हुआ है

बतादें, कि राजस्थान में लहसुन के भाव में काफी इजाफा दर्ज हुआ है। महाराष्ट्र राज्य में टमाटर भी काफी महंगा हो चुका है। 30 रुपये किलो में मिलने वाले टमाटर की कीमत फिलहाल 60 रुपये तक पहुँच चुका है। बतादें, कि टमाटर उत्पादक काफी प्रसन्न हैं। वर्तमान, व्यापारी कृषकों से ज्यादा कीमत पर टमाटर खरीद रहे हैं। कृषकों को पहले एक किलो टमाटर के लिए 2 से 3 रुपये मिला करते थे। लेकिन, फिलहाल उनको काफी अच्छा भाव अर्जित हो रहा है।

राजस्थान के इस जनपद में हजारों हेक्टेयर में लहसुन की खेती

जानकारी के लिए बतादें, कि विगत वर्ष राजस्थान में लहसुन की उपज का समुचित भाव नहीं मिला था। सरकार द्वारा बाजार हस्तक्षेप योजना को मंजूरी मिलने के पश्चात भी उत्पादकों को लहसुन की समुचित कीमत नहीं मिल पाई थी। बतादें, कि किसान 14 रुपये किलो की दर से लहसुन का विक्रय करने हेतु विवश थे। बतादें, कि राजस्थान में किसान 1.31 लाख हेक्टेयर भूमि में लहसुन का उत्पादन करते है। बारा, हाड़ौती, बूंदी, झालावाड़ और कोटा इलाकों में किसान सर्वाधिक लहसुन की खेती करते हैं। इन इलाकों से 90 प्रतिशत लहसुन का उत्पादन होता है। इसी कड़ी में बारा जनपद में उत्पादकों ने 30 हजार 420 हेक्टेयर भूमि पर लहसुन का उत्पादन किया है।

वर्टिकल यानी लंबवत खेती से कम जगह और कम समय में पैदावार ली जा सकती है

वर्टिकल फार्मिंग के लिए किसानों को केवल अपनी समझ और बुद्धिमता लगाने की आवश्यकता है। वर्टिकल फार्मिंग को लंबवत खेती भी कहा जाता है। यह एक आधुनिक और नवीन विधि है। जिसके अंतर्गत उच्च ऊंचाई अथवा अन्य लंबवत तरीके से उत्पादन किया जाता है। दरअसल, वर्टिकल खेती में फसलों को सेंसरी प्रोजेक्शन की तकनीकों का इस्तेमाल करके बड़े पैमाने पर विकसित किया जाता है। जैसे कि रिपोर्ट लाइटिंग, हीड्रोपोनिक्स और कंट्रोलड पर्यावरण।

वर्टिकल फार्मिंग (VERTICAL FARMING) से उत्पादन अच्छा होता है

यह प्रणाली बेहतरीन कार्य क्षमता, समस्याओं का कम होना, वक्त और स्थान की बचत, प्राकृतिक संसाधनों के इस्तेमाल में गिरावट और पर्यावरणीय फायदों के साथ कृषि पैदावार को प्रोत्साहन देने की क्षमता प्रदान करती है। वर्टिकल फार्मिंग (VERTICAL FARMING) में फसलों को जरूरी ऊर्जा, पानी, प्रकाश और पोषक तत्वों के लिए उचित वातावरण में रखा जाता है। बेहतर ढंग से विकास के लिए विशेष तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता है, जैसे कि LED लाइटिंग वाले उपकरण, ऊर्जा को एकत्र करने की तकनीक, फ्री सीडलिंग उत्पादन एवं स्वच्छ जल की उचित व्यवस्था। वर्टिकल फार्मिंग करने से बहुत सारे लाभ होते हैं।

लंबवत खेती कई सकारात्मक संभावनाएं प्रदान करती है

वर्टिकल फार्मिंग प्रणाली बेहद संभावनाएं प्रदान करती है। जैसे कि चुनौतियों को कम करना, वितरण और संचार को बेहतर करने में मदद करना। वाणिज्यिक एवं शहरी क्षेत्रों में खेती की नवीन संभावित जगहों को इस्तेमाल में लाने लायक बनाती है। साथ ही, पौधों की उन्नति और उत्पादन में भी काफी सुधार लाती है। इसके अलावा, इस प्रणाली में खाद्य सुरक्षा और पर्यावरणीय संतुलन को स्थिर बनाए रखने की संभावना भी रहती है।

वर्टिकल यानी लंबवत खेती के प्रमुख लाभ

- तकरीबन तीन से पांच गुना ज्यादा उत्पादन
- कम समय में ज्यादा उत्पादन
- कम जगह पर ज्यादा उत्पादन
- पेशेवर संचालन और नियंत्रण
- वर्षभर उत्पादन
- पेशेवर संवर्धन एवं नकदी प्रवाह
- बारिश, मौसम एवं भूमिगत समस्याओं से छुटकारा
- पर्यावरणीय संतुलन को नियंत्रित रखना
- वर्टिकल फार्मिंग यानी लंबवत खेती का महत्त्व

वित्तीय व्यवहार्यता

वर्टिकल फार्मिंग में लगने वाली प्रारंभिक पूंजी लागत सामान्यतः ज्यादा होती है। परंतु, संपूर्ण फसल उत्पादन की परिकल्पना जरूरत के मुताबिक सही ढंग से की जाए तो यह प्रक्रिया पूर्णतः लाभ प्रदान करने वाली बन जाती है। पूरे वर्ष या किसी विशिष्ट अवधि के दौरान एक विशेष फसल को ऊर्ध्वाधर खेती के माध्यम से उगाने, उसकी कटाई करने तथा उत्पादन करने से वित्तीय तौर पर व्यवहार्यता हो सकती है।

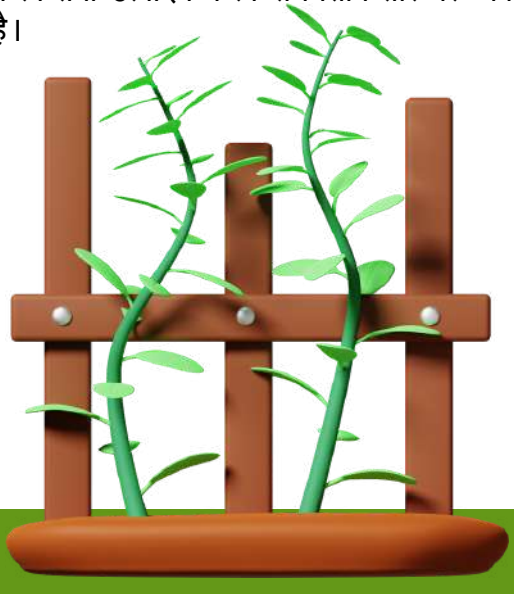

ज्यादा जल कुशल

पारंपरिक कृषि पद्धतियों के जरिए से उत्पादित की जाने वाली फसलों की तुलना में वर्टिकल फार्मिंग (Vertical farming) विधि के जरिए से उगाई जाने वाली समस्त फसलें आमतौर पर 95% प्रतिशत से ज्यादा जल कुशल होती हैं।

जल की बचत

वर्टिकल फार्मिंग (Vertical farming) से किसान काफी हद तक जल की खपत को कम कर सकते हैं। क्योंकि वर्टिकल फार्मिंग (Vertical farming) के अंतर्गत उपयोग होने वाली तकनीकों के माध्यम से कम जल उपयोग से अच्छी-खासी पैदावार ली जा सकती है।

बेहतर सार्वजनिक स्वास्थ्य व सेहत

बतादें, कि ज्यादातर फसलें "कीटनाशकों के उपयोग के बिना" उगाई जाती हैं। जो कि "समय के साथ-साथ बेहतर सार्वजनिक स्वास्थ्य की दिशा में सकारात्मक योगदान" प्रदान करता है। इसी वजह से उपभोक्ता शून्य-कीटनाशक उत्पादन की आशा कर सकते हैं, जो घर के लिये स्वस्थ, ताज़ा और टिकाऊ भी है।

रोजगार के अवसर

आखिर में इस बात पर बल देना काफी आवश्यक है, कि संरक्षित खेती के अंदर हमारे देश के कृषि छात्रों के लिये नए रोज़गार, कौशल सेट एवं आर्थिक अवसर उत्पन्न करने की क्षमता है। जो सीखने की अवस्था के अनुरूप होने के साथ तीव्रता से आगे बढ़ने में सक्षम है।

परंपरागत खेती छोड़ हरी सब्जी की खेती से किसान कर रहा अच्छी कमाई

भारत में किसान परंपरागत खेती की जगह बागवानी की तरफ अपना रुख करने लगे हैं। आशुतोष राय नाम के एक किसान ने भी कुछ ऐसा ही किया है। कहा गया है, कि मार्च माह में उन्होंने बाजार से बीज लाकर तोरई और खीरे की बिजाई की थी। उन्होंने बताया था कि बुवाई करने से पूर्व उन्होंने खेत की बेहतर ढ़ंग से जुताई की गई थी।

आशुतोष ने इतने बीघे में तोरई और खीरे की खेती कर रखी है

बिहार के बक्सर जनपद में किसान परंपरागत खेती करने के साथ-साथ आधुनिक विधि से सब्जी की भी खेती कर रहे हैं। इससे कृषकों को कम लागत में अधिक मुनाफा मिल रहा है। विशेष बात यह है, कि किसान एक ही खेत में विभिन्न प्रकार की सब्जियों का उत्पादन कर रहे हैं। इनमें से आशुतोष राय भी एक उत्तम किसान हैं। इन्होने 2 बीघे भूमि में तोरई और खीरे की खेती कर रखी है। आशुतोष ने बताया है, कि उनके यहां विगत 20 साल से सब्जी का उत्पादन किया जा रहा है। हरी सब्जी विक्रय कर वह प्रतिवर्ष मोटी आमदनी कर लेते हैं।

आशुतोष खेती में जैविक खाद का ही इस्तेमाल करते हैं

मीड़िया खबरों के अनुसार, किसान आशुतोष राय का कहना है, कि उनके पिता जी और दादा जी पहले पारंपरिक ढ़ंग से खेती किया करते थे। इससे खर्च अधिक और लाभ कम होता था। परंतु, उन्होंने आधुनिक तकनीक से पारंपरिक फसलों के साथ- साथ बागवानी फसलों की भी खेती आरंभ कर दी है। इससे लागत में अत्यधिक राहत मिल रही है। आशुतोष की मानें तो वह अपने सब्जी के खेत में जैविक खाद का ही उपयोग करते हैं। इससे उनके खेत की सब्जियां हाथों- हाथ बाजार में बिक जाती हैं।

लगभग 2 महीने में हरी सब्जी की बिक्री शुरू हो गई

आशुतोष का कहना है, कि मार्च माह में उन्होंने बाजार से बीज लाकर तोरई और खीरे की बिजाई की थी। उन्होंने बताया कि बिजाई करने से पूर्व खेत को अच्छे ढ़ंग से जोता गया था। उसके बाद पाटा चलाकर मृदा को एकसार कर दिया गया। साथ ही, 6-6 फीट के फासले पर तरोई की बुवाई की गई। इसके साथ ही बीच-बीच में खीरे की भी बिजाई की गई। इस दौरान आशुतोष वक्त-वक्त पर सिंचाई भी करता रहा। लगभग 2 माह में हरी सब्जी की बिक्री चालू हो गई।

पारंपरिक फसलों के मुकाबले हरी सब्जी की खेती में ज्यादा मुनाफा है – आशुतोष

आशुतोष प्रतिदिन 10 रुपये किलो की कीमत से एक क्विंटल तोरई बेच रहे हैं। इससे उन्हें प्रतिदिन 10 हजार रुपये की आमदनी हो रही है। साथ ही, वह खीरा बेचकर भी अच्छा-खासा मुनाफा कर लेते हैं। आशुतोष के अनुसार तो 2 बीघे में सब्जी की खेती करने पर उनका 20 हजार रुपये का खर्चा हुआ है। साथ ही, रोगों से संरक्षण के लिए आशुतोष को कीटनाशकों का छिड़काव भी करना पड़ा है। इसके अतिरिक्त भी फसलों को व्हाईट फ्लाई रोग से काफी क्षति हुई है। आशुतोष राय ने बताया है, कि पारंपरिक फसलों की तुलना में हरी सब्जी की खेती में काफी ज्यादा मुनाफा है।

MASSEY FERGUSON

7250 DI

46 HP

तिल की खेती से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

भारत के अंदर तिल की खेती मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु,महाराष्ट्र, कर्नाटक और राजस्थान में की जाती है। भारत के कुल उत्पादन का 20 फीसद उत्पादन केवल गुजरात से होता है। उत्तर प्रदेश में तिल की खेती विशेषकर बुंदेलखंड के राकर जमीन में और फतेहपुर, आगरा, मैनपुरी, मिर्जापुर, सोनभद्र, कानपुर और इलाहाबाद में शुद्ध और मिश्रित तौर पर की जाती है। तिल की पैदावार काफी हद तक कम है, सघन पद्धतियाँ अपनाकर उपज को बढाया जा सकता है। तकनीकी तरीको से तिल की खेती करने पर तिल की उपज 7 से 8 कुन्तल प्रति हेक्टेयर तक होती है।

तिल की खेती के लिए कैसी जलवायु एवं मृदा उपयुक्त है

तिल की खेती से अच्छी उपज लेने के लिए शीतोषण जलवायु उपयुक्त मानी जाती है। विशेषकर बरसात अथवा खरीफ में इसकी खेती की जाती है। दरअसल, अत्यधिक वर्षा अथवा सूखा पड़ने पर फसल बेहतर नहीं होती है। इसके लिए हल्की जमीन और दोमट भूमि अच्छी होती है। यह फसल पी एच 5.5 से 8.2 तक की भूमि में उगाई जा सकती है। फिर भी यह फसल बलुई दोमट से काली मृदा में भी उत्पादित की जाती है। तिल की विभिन्न प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जैसे कि बी.63, टाईप 4, टाईप12, टाईप13, टाईप 78, शेखर, प्रगति, तरुण और कृष्णा प्रजातियाँ हैं।

तिल की खेती के लिए जमीन की तैयारी और बिजाई कैसे करें

खेत की तैयारी करने के लिए प्रथम जुताई मृदा पलटने वाले हल से एवं दो-तीन जुताई कल्टीवेटर या फिर देशी हल से करके खेत में पाटा लगा भुरभुरा बना लेना चाहिए। इसके पश्चात ही बुवाई करनी चाहिए। 80 से 100 कुंतल सड़ी गोबर की खाद को अंतिम जुताई में मिश्रित कर देना चाहिए।

तिल की बिजाई करने हेतु जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई का दूसरा पखवारा माना जाता है। तिल की बिजाई हल के पीछे कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर की दूरी पर बीज को कम गहरे रोपे जाते हैं।

तिल की बिजाई हेतु एक हेक्टेयर भूमि के लिए तीन से चार किलोग्राम बीज उपयुक्त होता है। बीज जनित रोगों से संरक्षण के लिए 2.5 ग्राम थीरम या कैप्टान प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधन करना चाहिए।

तिल की बुवाई का उचित समय जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई का दूसरा पखवारा माना जाता है। तिल की बुवाई हल के पीछे लाइन से लाइन 30 से 45 सेंटीमीटर की दूरी पर बीज को कम गहराई पर करते है।

पोषण प्रबंधन कब करें

उर्वरकों का इस्तेमाल भूमि परीक्षण के आधार पर होना चाहिए। 80 से 100 कुंतल सड़ी गोबर की खाद खेत तैयारी करने के दौरान अंतिम जुताई में मिला देनी चाहिए। इसके साथ-साथ 30 किलोग्राम नत्रजन, 15 किलोग्राम फास्फोरस और 25 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर इस्तेमाल करना चाहिए। रकार और भूड भूमि में 15 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर इस्तेमाल करना चाहिए। नत्रजन की आधी मात्रा और फास्फोरस,पोटाश व गंधक की भरपूर मात्रा बिजाई के दौरान बेसल ड्रेसिंग में और नत्रजन की आधी मात्रा पहली ही निराई-गुडाई के समय खड़ी फसल में देनी चाहिए।

तिल की खेती के लिए सिंचाई प्रबंधन कैसे किया जाए ?

सिंचाई प्रबंधन तिल की फसल में कब होना चाहिए किस प्रकार होना चाहिए इस बारे में बताईये?

वर्षा ऋतू की फसल होने के कारण सिंचाई की कम आवश्यकता पड़ती है। यदि पानी न बरसे तो आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए। फसल में 50 से 60 प्रतिशत फलत होने पर एक सिंचाई करना आवश्यक है। यदि पानी न बरसे तो सिंचाई करना आवश्यक होता है।

तिल की खेती में निराई-गुडाई

किसान भाईयो प्रथम निराई-गुडाई बुवाई के 15 से 20 दिन बाद दूसरी 30 से 35 दिन बाद करनी चाहिए। निराई-गुडाई करते समय थिनिंग या विरलीकरण करके पौधों के आपस की दूरी 10 से 12 सेंटीमीटर कर देनी चाहिए। खरपतवार नियंत्रण हेतु एलाक्लोर50 ई.सी. 1.25 लीटर प्रति हेक्टेयर बुवाई के बाद दो-तीन दिन के अन्दर प्रयोग करना चाहिए।

तिल की खेती के लिए रोग नियंत्रण

इसमें तिल की फिलोड़ी और फाईटोप्थोरा झुलसा रोग लगते हैं। फिलोड़ी की रोकथाम के लिए बुवाई के दौरान कूंड में 10जी. 15 किलोग्राम अथवा मिथायल-ओ-डिमेटान 25 ई.सी 1 लीटर की दर से इस्तेमाल करना चाहिए। फाईटोप्थोरा झुलसा की रोकथाम करने के लिए 3 किलोग्राम कापर आक्सीक्लोराइड अथवा मैन्कोजेब 2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से जरूरत के अनुसार दो-तीन बार छिड़काव करना चाहिए।

तिल की खेती में कीट प्रबंधन

तिल में पत्ती लपेटक और फली बेधक कीट लग जाते हैं। इन कीटों की रोकथाम करने के लिए क्यूनालफास 25 ई.सी. 1.25 लीटर या मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

तिल की कटाई एवं मड़ाई

तिल की पत्तियां जब पीली होकर झड़ने लगें एवं पत्तियां हरा रंग लिए हुए पीली हो जाएं तब समझ जाना चाहिए कि फसल पककर तैयार हो चुकी है। इसके पश्चात कटाई नीचे से पेड़ सहित करनी चाहिए। कटाई के पश्चात बण्डल बनाके खेत में ही भिन्न-भिन्न स्थानों पर छोटे-छोटे ढेर में खड़े कर देना चाहिए। जब बेहतर ढ़ंग से पौधे सूख जाएं तब डंडे छड़ आदि की मदद से पौधों को पीटकर अथवा हल्का झाड़कर बीज निकाल लेना चाहिए।

महुआ के तेल से किसान अच्छी-खासी आमदनी कर सकते हैं

महुआ के तेल से किसान अच्छी-खासी आमदनी कर सकते हैं

महुआ का तेल शरीर के लिए काफी लाभकारी होता है। क्योंकि इसके अंदर कई सारे अहम व महत्वपूर्ण पोषक तत्व जैसे कि फाइबर, प्रोटीन और विटामिन आदि मौजूद रहते हैं।

महुआ का पेड़ सामन्यतः गांव में आज भी नजर आ जाएगा। हालाँकि, पूर्व की तुलना में इनकी तादात काफी शीघ्रता से घटती जा रही है। उसकी मुख्य वजह अनुमानुसार महुआ के पेड़ से होने वाले फायदों की जानकारी का अभाव है। अब बताइए जब लोगों को इससे होने वाले फायदों के विषय में नहीं पता होगा, तो वह उस पेड़ की देखभाल और रोपण क्यों करेंगे ? सबसे बड़ी बात यह है, कि किसान यदि चाहें तो महुआ के पेड़ से प्रति सीजन में लाखों की आय कर सकते हैं। अगर आप अच्छी खासी जमीन के मालिक हैं, तो आप महुआ का बाग लगा सकते हैं। उसके बाद आप प्रतिवर्ष इसके सीजन में अच्छी आमदनी कर सकते हैं। विशेष तौर पर इसके तेल से कृषकों को अच्छा-खासा मुनाफा हो सकता है। क्योंकि महुआ के फल से निकलने वाला तेल बेहद स्वास्थ्य वर्धक होता है और इसकी हमेशा बाजार में बनी रहती है। महुआ का तेल किसानों को काफी मुनाफा दिला सकता है।

महुआ के फल से तेल निकालने की विधि

महुआ के पेड़ की सर्वोच्च खासियत यह है, कि इसके फूल एवं फल दोनों से किसान भाई आमदनी कर सकते हैं। किसान इसके गिरते हुए फूलों को इकट्ठा कर के सुखा कर बेचते हैं। सूखे महुआ के फूलों का किसानों को बेहतर भाव मिलता है। साथ ही, इसके फल से निकलने वाले तेल की भी बाजार में खूब मांग रहती है।आपको बतादें, कि महुआ के फल से तेल निकालने के लिए सर्वप्रथम इसको छील कर इसकी गुठली निकाली जाती है। उसके बाद इस गुठली को छील कर उसके अंदर का हिस्सा निकाल कर उसको सुखाया जाता है। जब यह पूर्णतय सूख जाता है, तब इसका तेल निकल जाता है। महुआ के तेल की खासियत यह है, कि यह जितना प्राचीन होता है, इसके भीतर उतने ही अधिक औषधीय गुण बढ़ जाते हैं।

महुआ तेल में मौजूद गुण

आपको बतादें, कि महुआ के तेल के अंदर प्रोटीन, फाइबर और विटामिन जैसे पोषक तत्व उपलब्ध होते हैं। इस वजह से इसका नियमित सेवन आपके शरीर को महत्वपूर्ण पोषण प्रदान करता है। साथ ही, महुआ तेल विटामिन ई का एक बेहतरीन स्रोत है, जो एंटीऑक्सीडेंट के तौर पर कार्य करता है। वहीं, आपके शरीर को विभिन्न प्रकार के बेकार तत्वों से बचाता है। साथ ही, महुआ के तेल में फाइटोस्टेरोल नामक पोषक तत्व उपस्थित रहता है, जो कोलेस्ट्रॉल को काबू करने एवं दिल से जुड़े स्वास्थ्य को सुधारने में सहायता करता है। बतादें, कि इसके तेल में पोलीयूनसेटेड फैट विघमान रहता है, जो कि शारीरिक स्वास्थ्य के लिए बेहद जरूरी है। महुआ के तेल के अंदर विटामिन ई और विटामिन बी भी भरपूर मात्रा में पाई जाती है। जो कि मांसपेशियों को काफी शक्ति प्रदान कर सकती है। इस वजह से जब आप महुआ तेल से शरीर की मालिस करते हैं, तो आपकी शारीरिक थकावट के साथ-साथ आपका दर्द भी ठीक हो जाता है।

ककड़ी की खेती

से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

ककड़ी की खेती से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

ककड़ी एक कद्दू वर्गीय फसल है, जिसकी खेती नकदी फसल के लिए की जाती है। भारतीय मूल की फसल ककड़ी जिसको जायद की फसल के साथ उत्पादित किया जाता है। इसके फल की लंबाई तकरीबन एक फीट तक होती है | ककड़ी को प्रमुख तौर पर सलाद एवं सब्जी के लिए उपयोग किया जाता है। गर्मियों के दिनों में ककड़ी का सेवन काफी बड़ी मात्रा में किया जाता है। यह गर्म हवा से बचाने में भी मददगार होती है एवं मानव शरीर के लिए बेहद फायदेमंद भी होती है।

ककड़ी के पौधे लता के रूप में फैलकर विकास करते हैं। भारत में ककड़ी की खेती तकरीबन देश के समस्त क्षेत्रों में की जाती है। किसान भाई इसकी खेती कर के अच्छी-खासी आमदनी भी करते हैं। अगर आप भी ककड़ी की खेती करने के विषय में सोच रहे हैं, तो आगे इस लेख में आपको ककड़ी की खेती से जुड़ी सारी अहम जानकारी मिलेगी। यह जानकारी आपके लिए सहायक भूमिका निभाएगी।

ककड़ी की खेती कैसे करें

ककड़ी की खेती लिए उससे सम्बंधित सभी प्रकार की जानकारी का होना बहुत जरूरी होता है, इसलिए यहाँ इसके बारे में अवगत कराया गया है, इसके माध्यम से ककड़ी की उन्नत खेती करके लाभ कमा सकते हैं।

ककड़ी की खेती के लिए उपयुक्त मृदा

यदि हम ककड़ी की खेती के लिए उपयुक्त मृदा की बात करें तो यह किसी भी उपजाऊ मृदा में सहजता से की जा सकती है। लेकिन, कृषि विशेषज्ञों के अनुसार कार्बनिक पदार्थो से युक्त मृदा में ककड़ी का अधिक मात्रा में उत्पादन होता है। साथ ही, ककड़ी की खेती के लिए बलुई दोमट मृदा भी काफी उत्तम मानी जाती है। ककड़ी की खेती करने के लिए जमीन जल निकासी वाली होनी बेहद जरूरी है। जल भराव वाली जमीन में ककड़ी की खेती न करें। ककड़ी की खेती में सामान्य P.H मान वाली मृदा की काफी जरूरत होती है।

ककड़ी की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

ककड़ी की खेती के लिए समशीतोष्ण जलवायु का होना जरूरी होता है। सामान्य बारिश के मौसम में इसके पौधे बेहतर ढ़ंग से विकास करते हैं। परंतु, गर्मियों का मौसम ककड़ी की पैदावार के लिए सबसे अच्छा माना जाता है। ककड़ी की खेती के लिए ठंडी जलवायु उपयुक्त नहीं होती है।

बतादें, कि ककड़ी के बीज 20 डिग्री तापमान पर बेहतर ढ़ंग से अंकुरित होते हैं। वहीं पौध विकास के लिए 25 से 30 डिग्री तापमान सबसे अच्छा होता है। इसके पौधे 35 डिग्री तापमान तक अच्छे से विकास कर लेते है। परंतु, इससे ज्यादा तापमान पौधों के लिए अनुकूल नहीं रहता है।

ककड़ी की खेती में सिंचाई किस प्रकार की जाए

- ककड़ी की फसल में प्रथम सिंचाई बिजाई के शीघ्रोपरान्त करें।
- द्वितीय सिंचाई के 4 से 5 दिन पश्चात करें, जिससे कि अंकुरण बेहतर हो पाए।
- पौधो की वनस्पति एवं मृदा में नमी के आधार पर 7-10 दिनों के अंतर से सिंचाई करनी चाहिए।
- फसल में फूल आने से पूर्व, फूल आने के दौरान एवं फल के विकास के समय भूमि की नमी में गिरावट नहीं होनी चाहिये।
- इससे फल की उन्नति में प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। फसल से फलों की तुड़ाई के 2-3 दिन सिचाई करनी चाहिए, जिससे फल ताजा, चमकदार एवं आकर्षित बने रहेंगे।
- किसान भाइयों जमीन की ऊपरी सतह से 50 से.मी. तक नमी को बरकरार रखना चाहिए। क्योंकि इस भाग पर जड़ें बड़ी संख्या में होती है ।

ककड़ी की कटाई कब होती है

ऐसी स्थिति में जब फल हरे और मुलायम हों, तब ही तुड़ाई का कार्य करना चाहिए, ककड़ी की तुड़ाई किस्मो के अनुसार 35 से 40 दिन पर शुरू हो जाती है। फलो के आकार के अनुसार तुड़ाई करना चालू करदें।

ककड़ी की किस्में

पंजाब लोंगमेलन 1- यह किस्म 1995 में विकसित की गई थी। यह काफी शीघ्रता से पकने वाली प्रजाति है। इसकी बेलें लंबी, हल्के हरे रंग का तना, पतला एवं लंबा फल होता है। इसका औसतन उत्पादन 86 क्विंटल प्रति एकड़ होता है।

अर्का शीतल- इस किस्म के अंतर्गत 90 से 100 दिन की समयावधि में मध्म आकार का हरे रंग का फल लगता है। इसके फल को तैयार होने के लिए 90 से 100 दिन का समय लगता है। यदि हम इसके उत्पादन की बात करें तो पैदावार 200 से 250 क्विटल प्रति हेक्टेयर पैदावार होती है।

जानिए कीट नियंत्रण और कीट प्रबंधन में क्या-क्या अंतर होते हैं

जानिए कीट नियंत्रण और कीट प्रबंधन में क्या-क्या अंतर होते हैं

आपकी जानकारी के लिए बतादें कि कीट नियंत्रण एक उपचार है। लेकिन कीट प्रबंधन कीट संक्रमण से पूर्व ही किया जा सकता है। इस लेख में हमने कीट नियंत्रण एवं कीट प्रबंधन के मध्य अंतराल को विस्तृत रूप से बताया है।

खेती-बाड़ी में आम तौर पर दो शब्द कीट नियंत्रण एवं कीट प्रबंधन सुनने को मिलता है। परंतु, क्या आपको पता है, कि इन दोनों में कोई खास ज्यादा अंतर नहीं होता है। कीट से जुड़े इन दोनों ही शब्दों का अर्थ काफी बड़ा होता है। क्योंकि इनके इस्तेमाल से आपकी फसल एवं कृषि क्षेत्र पर भी इसका असर पड़ता है। अब ऐसी स्थिति में हम आपके लिए इन दोनों में अंतराल समेत इनके महत्व के संदर्भ में जानकारी देने वाले हैं।

कीट नियंत्रण क्या होता है

कीट नियंत्रण कीट में शामिल किस्मों का प्रबंधन है। यह खेत में उपस्थित अवांछित कीड़ों को कम करने, प्रबंधित करने और नियंत्रित करने व हटाने की प्रक्रिया है। कीट नियंत्रण के दृष्टिकोण में एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) शम्मिलित हो सकता है। खेती किसानी में कीटों को सांस्कृतिक, जैविक, रासायनिक और यांत्रिक तरीकों से संरक्षण किया जाता है। बिजाई से पूर्व खेत की जुताई एवं मिट्टी की जुताई करने से कीटों का भार घटता है। वहीं, फसल चक्रण से निरंतर होने वाले कीट प्रकोप को कम करने में काफी सहयोग मिलता है। कीट नियंत्रण तकनीक में फसलों का निरीक्षण, कीटनाशकों का इस्तेमाल एवं सफाई जैसी विभिन्न चीजें शम्मिलित हैं।

आखिर कीट नियंत्रण का महत्व क्या होता है

मानव स्वास्थ्य का संरक्षण: यह मच्छरों, टिक्स एवं कृन्तकों जैसे कीटों द्वारा होने वाली बीमारियों के प्रकोप को कम कर मानव स्वास्थ्य की रक्षा करने में सहयोग करता है।

संपत्ति का संरक्षण: कीटों को नियंत्रित करके फसलों, संरचनाओं एवं संग्रहीत उत्पादों को क्षति से बचाता है। संपत्ति को संक्रमण से जुड़े विनाश से बचाता है।

खाद्य सुरक्षा: कृषि प्रणाली में फसल पैदावार को बनाए रखना एवं भोजन की सुरक्षा और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए कीट नियंत्रण उपाय जरूरी है।

आर्थिक प्रभाव: प्रभावी कीट नियंत्रण क्षतिग्रस्त फसलों एवं संपत्ति के नुकसान की वजह से होने वाली वित्तीय हानियों को रोक सकता है।

कीट प्रबंधन होता क्या है

कीट प्रबंधन को अवांछित कीटों का खात्मा करने एवं हटाने की एक विधि के तौर पर परिभाषित किया गया है, जिसमें रासायनिक उपचारों का इस्तेमाल शम्मिलित हो सकता है अथवा नहीं भी हो सकता है। प्रभावी कीट प्रबंधन का उद्देश्य कीटों की तादात को एक सीमा तक कम करना है।

कीट प्रबंधन का महत्व क्या होता है?

रसायनों पर कम निर्भरता: यह जैविक नियंत्रण एवं सांस्कृतिक प्रथाओं जैसे वैकल्पिक तरीकों के इस्तेमाल पर बल देता है। रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता को कम करने के साथ उनके संभावित नकारात्मक प्रभावों को भी कम करता है।

पर्यावरणीय स्थिरता: कीट प्रबंधन पारिस्थितिक संतुलन बरकरार रखने एवं स्थिरता को प्रोत्साहन देने की कोशिश करता है।

एकीकृत कीट प्रबंधन: कीट प्रबंधन में निगरानी, निवारक उपाय एवं जरूरत पड़ने पर कीटनाशकों का लक्षित इस्तेमाल शम्मिलित है, जिससे ज्यादा प्रभावशाली एवं टिकाऊ कीट नियंत्रण होता है।

दीर्घकालिक रोकथाम: कीट प्रबंधन का उद्देश्य कीट संबंधित परेशानियों की मूल वजहों को दूर करना है। साथ ही, आने वाले समय में होने वाले संक्रमण को न्यूनतम करने के लिए निवारक उपायों को इस्तेमाल करना है, जिससे निरंतर एवं गहन कीट नियंत्रण उपचार की जरूरतें कम हो जाती हैं।

कीट नियंत्रण और कीट प्रबंधन में फर्क बताने हेतु निम्नलिखित बिंदु

लक्ष्य के आधार पर अंतर
कीट नियंत्रण- कई सारे तरीकों से कीटों का खत्मा करना अथवा नियंत्रित करना
कीट प्रबंधन- पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य को होने वाली हानि को कम करते हुए अथवा उनकों ध्यान में रखते हुए कीटों की रोकथाम करना

दृष्टिकोण के आधार पर अंतर
कीट नियंत्रण- कीटों के तत्काल उन्मूलन पर ध्यान केंद्रित करना
कीट प्रबंधन- लम्बे समय तक नियंत्रण एवं रोकथाम रणनीतियों पर बल देना

तरीकों के आधार पर अंतर
कीट नियंत्रण- कीटनाशकों पर काफी ज्यादा निर्भरता
कीट प्रबंधन- जैविक नियंत्रण, सांस्कृतिक प्रथाओं एवं रासायनिक नियंत्रण समेत कई सारी तकनीकों का उपयोग करना

दायरे के आधार पर अंतर
कीट नियंत्रण- विशेष रूप से वर्तमान में कीट संक्रमणों को कम करना अथवा उनका खत्मा करना
कीट प्रबंधन- वर्तमान संक्रमण एवं भावी संभावित खतरों दोनों का खत्मा अथवा कम करना।

वहनीयता के आधार पर अंतर
कीट नियंत्रण- पर्यावरण एवं गैर-लक्षित किस्मों पर नकारात्मक असर पड़ सकता है।
कीट प्रबंधन- पारिस्थितिक संतुलन बरकरार रखने एवं स्थिरता को प्रोत्साहन देने की कोशिश करता है।

एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) के आधार पर अंतर
कीट नियंत्रण- स्वाभाविक रूप से एक आईपीएम दृष्टिकोण नहीं है।
कीट प्रबंधन- आम तौर पर सभी उपलब्ध कीट प्रबंधन तकनीकों पर विचार करते हुए आईपीएम के सिद्धांतों का पालन करता है।

पारिस्थितिकी तंत्र के आधार पर अंतर
कीट नियंत्रण- समस्त पारिस्थितिकी तंत्र के लिए कम विचार
कीट प्रबंधन- पारिस्थितिक संदर्भ एवं पारिस्थितिकी तंत्र पर कीट प्रबंधन क्रियाओं के प्रभाव पर विचार करना

निगरानी के आधार पर अंतर
कीट नियंत्रण- सीमित निगरानी या कुछ निगरानी प्रणाली पर ध्यान
कीट प्रबंधन- कीटों का पता लगाने और प्रबंधन रणनीतियों की प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए निरंतर निगरानी और नियमित निरीक्षण पर निर्भरता।

अदरक और टमाटर सहित इस फल की भी कीमत हुई दोगुनी

बारिश से फसल को हानि पहुंचने के कारण आजादपुर मंडी (दिल्ली में) में टमाटर की आपूर्ति काफी कम हो गई है। नई फसल आने तक भाव कुछ वक्त तक ज्यों की त्यों रहेंगी।

टमाटर ने एक बार पुनः अपना रुद्र रूप दिखाना चालू कर दिया है। विगत एक पखवाड़े में टमाटर एवं अदरक के भावों में रॉकेट की रफ्तार जितनी बढ़ोत्तरी हुई है। कुछ समय पूर्व हुई बारिश से उत्तर भारत में टमाटर की फसल प्रभावित हुई है। वहीं दूसरी तरफ, अदरक के किसान अपनी फसल को अभी रोक रहे हैं। विगत वर्ष हुई क्षति की भरपाई के लिए कीमतों में बढ़ोत्तरी कर रहे हैं।

तरबूज की कीमत किस वजह से बढ़ी है

इसी मध्य, तरबूज के बीज की कीमत तीन गुना तक बढ़ चुकी है। दरअसल, इसको सूडान से आयात किया जाता है। परंतु, वहां पर सैन्य संघर्ष चल रहा है। जिसके चलते आपूर्ति काफी कम है। दिल्ली के एक व्यापारी संजय शर्मा का कहना है, कि एक किलो तरबूज के बीज का भाव फिलहाल 900 रुपये है। जो कि सूडान संघर्ष से पूर्व मात्र 300 रुपये थी।

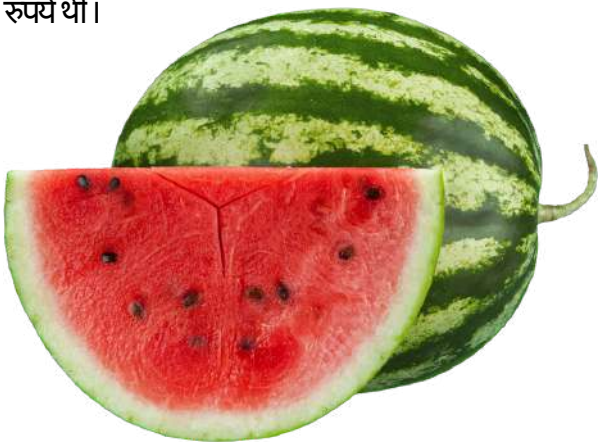

टमाटर का भाव दोगुना हो चुका है

खुदरा बाजार में टमाटर का भाव 15 दिन पूर्व 40 रुपये प्रति किलोग्राम थी। जिसमें फिलहाल तकरीबन 80 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई हैं। आजादपुर बाजार में टमाटर ट्रेडर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अशोक कौशिक के मुताबिक बारिश से फसल को क्षति पहुंचने की वजह से आजादपुर मंडी (दिल्ली में) में टमाटर की आपूर्ति काफी कम हो चुकी है। नवीन फसल आने तक भाव कुछ वक्त तक इतना ही रहने वाला है। कौशिक का कहना है, कि दक्षिणी भारत से टमाटर की भारी मांग है, जिससे भी भाव बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा है, कि टमाटर फिलहाल हरियाणा एवं यूपी के कुछ इलाकों से आ रहे हैं। कीमतों का कम से कम दो माह तक ज्यों के त्यों रहने की आशंका है।

अदरक की कीमतों में हुई वृद्धि

अदरक की कीमत जो कि 30 रुपये प्रति 100 ग्राम थी। वह अब बढ़कर 40 रुपये तक हो गई है। ऑल इंडिया वेजिटेबल ग्रोअर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष श्रीराम गढ़वे का कहना है, कि पिछली साल किसानों को कम भाव के चलते नुकसान वहन करना पड़ा था। इस बार वह बाजार में सावधानी से फसल उतार रहे हैं। अब जब कीमतों में वृद्धि हुई है, तो वह अपनी फसल को बेचना चालू कर देंगे। भारत का वार्षिक अदरक उत्पादन करीब 2.12 मिलियन मीट्रिक टन है।

किसान अश्वगंधा की खेती से अच्छी-खासी आमदनी कर रहे हैं

अश्वगंधा की खेती भारत के आंध्र प्रदेश, केरल, जम्मू- कश्मीर, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार और गुजरात समेत अन्य बहुत से राज्यों में की जा रही है। कृषकों की इससे आमदनी पूर्व की तुलना में काफी ज्यादा बढ़ गई है।

कृषि केवल एक जीवनयापन का साधन तक सीमित नहीं रहा है। वर्तमान में कृषि एक व्यवसाय बन चुका है। खेती में नवीन-नवीन तकनीक एवं पढ़े- लिखे युवाओं की दिलचस्पी बढ़ने से पैदावार में इजाफा हुआ ही है, साथ में लोगों की आमदनी में भी इजाफा हुआ है। यही कारण है, कि अब इंजीनियर की नौकरी को छोड़ कर युवा वैज्ञानिक विधि के माध्यम से खेती कर रहे हैं। विशेष बात यह है, कि पढ़े-लिखे युवा परंपरागत और बागवानी फसलों के साथ-साथ जड़ी-बूटियों का भी उत्पादन कर रहे हैं। बतादें, कि मेडिकल क्षेत्र में जड़ी बूटियों की काफी ज्यादा मांग है। हम आपको ऐसी ही एक जड़ी-बूटी अश्वगंधा के विषय में बताऐंगे जिसकी खेती कर किसान अच्छी-खासी आमदनी कर सकते हैं।

अश्वगंधा का उपयोग औषधियां तैयार करने में किया जाता है

भारत के विभिन्न राज्यों में किसान अश्वगंधा की खेती कर रहे हैं। किसान भाई अश्वगंधा की उपज से बेहतरीन आमदनी भी कर रहे हैं। निश्चित तौर पर इससे किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आएगा। सबसे बड़ी बात अश्वगंधा एक जड़ी-बूटी होती है। जिसका इस्तेमाल औषधियां निर्मित करने में किया जाता है।

जानकारी के लिए बतादें, कि अश्वगंधा का सेवन करने से शरीर के गंभीर रोग भी ठीक हो जाते हैं। साथ ही, इसको दूध में घोलकर सेवन करने से शारीरिक रोग प्रतिरोधक क्षमता काफी अधिक हो जाती है।

खारे पानी में भी अश्वगंधा का उत्पादन किया जा सकता है

अश्वगंधा की खेती किसान भाई खारे पानी में भी सहजता से कर सकते हैं। अश्वगंधा की यह अद्भुत विशेषता इसको और खास बनाती है। अश्वगंधा की खेती के लिए सितंबर से अक्टूबर माह का समय उपयुक्त माना जाता है। अश्वगंधा की खेती करने वाली भूमि पर सर्व प्रथम अच्छी तरह जुताई करलें। उसके पश्चात खेत में जैविक खाद अथवा वर्मी कंपोस्ट डाल दें पाटा चलाकर खेत को समतल कर दें। विशेष बात यह है, कि अश्वगंधा की बुवाई करने से पूर्व खेत में नमी अवश्य होनी चाहिए। ऐसी स्थिति में अश्वगंधा की खेती के लिए मृदा का पीएच मान 7.5 से 8 के मध्य उपयुक्त माना गया है।

अश्वगंधा में कितने किलो बीज की आवश्यकता होती है

यदि आप एक हेक्टेयर भूमि में अश्वगंधा की खेती करना चाहते हैं, तो 10 से 12 किलो अश्वगंधा के बीज की आवश्यकता होगी। बुवाई करने के एक सप्ताह पश्चात बीज अंकुरित हो जाएंगे।

अश्वगंधा पौधों की उच्चतम प्रकार से प्रगति के लिए 25 से 35 डिग्री के मध्य तापमान होना जरूरी है। साथ ही, 750 एमएम तक वर्षा आवश्यक होती है। माना गया है, कि इसकी खेती में धान एवं गेहूं की भांति परंपरागत फसलों की तुलना में 50 प्रतिशत ज्यादा लाभ होता है। यही कारण है, कि बिहार के अंदर किसान अश्वगंधा का बड़े पैमाने पर उत्पादन कर रहे हैं।

किस वजह से इस जड़ी-बूटी का नाम अश्वगंधा पड़ा है

अश्वगंधा की जड़ों से घोड़े की भांति सुगंध आती है। यही वजह है, जो इसका नाम अश्वगंधा रखा गया है। संस्कृत में घोड़े को अश्व कहा जाता है। अश्वगंधा का पौधा झाड़ी की भांति दिखाई देता है। फिलहाल बाजार में 100 ग्राम अश्वगंधा की कीमत 80 रुपए से 200 रुपए के मध्य है। ऐसे में इसकी खेती करके किसान भाई लाखों रुपए की आमदनी कर सकते हैं।

दुग्ध उत्पादन से मोटा मुनाफा लेने के लिए इन तीन गायों को पालें किसान

इस गाय की प्रतिदिन औसतन 12 से 20 लीटर दूध देने की क्षमता है। यदि आप इस गाय का बेहतर ढंग से देखभाल रखें तो यह पाया गया है, कि यह गाय प्रतिदिन 50 से 60 लीटर दूध भी दे सकती है।

भारत में इस समय डेयरी का व्यवसाय बड़ी तीव्रता से फैलता जा रहा है। दूध के व्यापार से लोग प्रति माह लाखों का मुनाफा अर्जित कर रहे हैं। दरअसल, दुग्ध व्यवसाय को करने के लिए भी तकनीक एवं नॉलेज की काफी आवश्यकता होती है। यदि आप बेहतर मवेशियों के साथ यह व्यवसाय आरंभ करते हैं, तो आपको निश्चित तौर पर अच्छा-खासा मुनाफा मिलेगा। वर्ना आप इसमें उतना पैसा नहीं कमा पाएंगे। हम आपको आज इस लेख में बताएंगे कि आप किन तीन प्रजातियों की गायों को पाल कर एक माह में मोटा मुनाफा कमा सकते हैं। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि अब गाय पालन के लिए सरकार की तरफ से भी मदद मिलती है। मतलब कि आपको यह व्यवसाय चालू करने के लिए अत्यधिक निवेश भी नहीं करना पड़ेगा।

देश में दुग्ध उत्पादन की काफी आवश्यकता है

भारत में दुग्ध उत्पादन करना किसान और पशुपालकों के लिए फायदे का सौदा होता है। दुग्ध उत्पादन करने से आज भी देश के अधिकांश किसान अपनी आजीविका चलाते हैं। आजीविका को चलाने के लिए कृषि के साथ-साथ किसान पशुपालन कर दूध बेचकर आमदनी करते हैं। बतादें कि भारत में दूध की अच्छी खासी खपत है। इसलिए दूध की आपूर्ति को सुनिश्चित करने के लिए बेहतर नस्ल के मवेशी पालना बेहद आवश्यक है।

प्रथम नस्ल गिर गाय

गिर गाय भारत में सबसे अधिक दूध देने वाली गाय मानी जाती है। गिर नस्ल की गाय के थन काफी अधिक बड़े होते हैं। यह गाय गुजरात के गीर के जंगलों में मिलती हैं। दरअसल, वर्तमान में इसको संपूर्ण भारत में पाला जाने लगा है। यह गाय प्रति दिन औसतन 12 से 20 लीटर दूध देती है। परंतु, यदि आप इस गाय का बेहतर ढ़ंग से ध्यान रखते हैं तो ऐसा पाया गया है, कि यह गाय 50 से 60 लीटर दूध भी प्रति दिन दे सकती है। अब आप सोचिए यदि आप इस प्रकार की तीन चार गाय भी रखते हैं, तो प्रति माह केवल इनका दूध बेचकर कितना धन कमा सकते हैं।

द्वितीय स्थान पर लाल सिंधी गाय

यह लाल सिंधी गाय सिंध के इलाके में पाई जाती है। जो कि इसके नाम से ही पता चलता है। साथ ही, यह गाय दिखने में थोड़ी लाल रंग की होती है। इसलिए इस गाय को लाल सिंधी गाय कहा जाता है। आजकल यह गाय ओडिशा, पंजाब, हरियाणा, कर्नाटक और केरल में भी बड़ी मात्रा में पाली जाती है। उत्तर प्रदेश और बिहार में भी कुछ किसान इस गाय को पालने का कार्य कर रहे हैं। यह गाय प्रतिदिन 15 से 20 लीटर दूध देती है। हालांकि, यदि आपने इसकी बेहतर ढंग से देखभाल रखी तो यह प्रतिदिन 40 से 50 लीटर भी दूध दे सकती है।

तृतीय स्थान पर साहिवाल गाय

बतादें कि तीसरे स्थान पर आने वाली साहिवाल गाय आपको मध्य प्रदेश, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में काफी नजर पड़ती है। इन राज्यों में किसानों के मध्य यह गाय सबसे ज्यादा लोकप्रिय है। औसतन यह गाय प्रति दिन 10 से 15 लीटर दूध देती है। परंतु, यदि आप इस गाय का अच्छे से खानपान और देखभाल रखेंगे तो यह आपको प्रतिदिन 30 से 40 लीटर भी दूध दे सकती है। इस गाय की सबसे अच्छी बात यह होती है, कि इसे कम जगह में भी आसानी से रखा जा सकता है। इसका अधिक ध्यान रखने की भी आवश्यता नहीं पड़ती।

ESCORTS

THE POWERTRAC
EURO 55 NEXT

#TechnologyDesignedToDeliver

55 HP ENGINE | 2-WHEEL DRIVE | 15-SPEED GEARBOX | INDEPENDENT PTO | 2,000KG SENSI 1 LIFT

EQUIPPED WITH ADVANCED TECHNOLOGY FOR HIGH-END APPLICATION

POWERTRAC

देश का # 1 किफ़ायती ट्रैक्टर

मिट्टी की सेहत - खाद

आगामी 27 सालों में उर्वरकों के उत्सर्जन में हो सकती है भारी कटौती

इन दिनों दुनिया भर में प्रदूषण एक बड़ी समस्या बनी हुई है। जो ग्लोबल वार्मिंग की मुख्य वजह है। प्रदूषण कई चीजों से फैलता है जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता है। इन दिनों अन्य प्रदूषणों के साथ-साथ उर्वरक प्रदूषण भी चर्चा में है। इन दिनों पूरी दुनिया के किसान भाई खेती में उत्पादन बढ़ाने के लिए नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों का प्रयोग करते हैं जो पर्यावरण और जैवविविधता को नुकसान पहुंचाते हैं। ऐसे में खेती में इनके प्रयोग को नियंत्रित करना जरूरी हो गया है।

हाल ही में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक शोध में पाया है कि आगामी 27 वर्षों में साल 2050 तक उर्वरकों से होने वाले उत्सर्जन को 80 फीसदी तक कम किया जा सकता है। वैज्ञानिकों ने कार्बन उत्सर्जन की बारीकी से गणना की है। शोधकर्ताओं ने बताया है कि खेती में नाइट्रोजन के उपयोग से होने वाला उत्सर्जन वैश्विक स्तर पर होने वाले उत्सर्जन का 5 फीसदी है।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि वैश्विक स्तर पर कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों का धड़ल्ले से उपयोग किया जा रहा है, जो ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण बन रहा है।

हर साल रासायनिक उर्वरकों से हो रहा है इतना उत्सर्जन

वैज्ञानिकों ने अपने शोध में बताया है कि हर साल खाद और सिंथेटिक उर्वरक के प्रयोग से 260 करोड़ टन उत्सर्जन हो रहा है। यह उत्सर्जन धरती पर विमानन और शिपिंग कंपनियों के द्वारा किए जा रहे उत्सर्जन से कहीं ज्यादा है। इसको देखते हुए वैज्ञानिक किसानों से वैकल्पिक उर्वरकों के उपयोग की अपील कर रहे हैं क्योंकि लंबी अवधि में यह बेहद हानिकारक है।

उत्सर्जन में कमी लाने के लिए किसानों को करना होगा जागरुख

शोधकर्ताओं ने कहा है कि रासायनिक उर्वरक के दुष्परिणामों को किसानों के समक्ष रखना एक बेहद आसान और अच्छा तरीका है। ऐसा करके उत्सर्जन में कमी लाई जा सकती है। वैज्ञानिकों ने दुनिया में उपयोग किए जाने वाले रासायनिक उर्वरकों का अध्ययन किया है। जिसके बाद उन्होंने अपने शोध में कहा है कि यदि दुनिया भर में यूरिया को अमोनियम नाइट्रेट से बदल दिया जाए तो इससे उत्सर्जन में 20 से 30 फीसद तक की कमी लाई जा सकती है। फिलहाल यूरिया सबसे ज्यादा उत्सर्जन करने वाले उर्वरकों में गिना जाता है।

वैज्ञानिकों का अब भी मानना है कि वैश्विक खाद्य जरूरतों को ध्यान में रखते हुए कार्बन उत्सर्जन को कम करना एक बड़ी चुनौती है। फिर भी इस समस्या के समाधान के लिए लगातार शोध करने की जरूरत है, साथ ही नई तकनीकों की खोज की जरूरत है। जिससे भविष्य में उत्सर्जन को बेहद निचले इतर पर लाया जा सके।

बिहार के आशीष कुमार अपने गांव में काली हल्दी की खेती कर मध्य प्रदेश तक सप्लाई कर रहे हैं।

बिहार के आशीष कुमार अपने गांव में काली हल्दी की खेती कर मध्य प्रदेश तक सप्लाई कर रहे हैं।

किसान आशीष कुमार का कहना है, कि उन्होंने एक लेख में पढ़ा था कि बिहार में काली हल्दी विलुप्त हो चुकी है। अब कोई काली हल्दी की खेती नहीं करता है। ऐसे में मैंने काली हल्दी की खेती करना चालू किया।

जैसा कि हम जानते हैं, कि हल्दी एक औषधीय मसाला होता है। इसका इस्तेमाल खाना निर्मित करने के साथ-साथ आयुर्वेदिक औषधियाँ तैयार करने के लिए किया जाता है। हल्दी के बिना हम स्वादिष्ट दाल एवं सब्जी की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। अधिकांश लोगों का मानना है, कि हल्दी का रंग केवल पीला ही हो होता है। परंतु, इस प्रकार की कोई बात नहीं है, आज भी भारत में किसान काली हल्दी का उत्पादन कर रहे हैं। आज हम आपको एक ऐसे ही किसान के विषय में बताएंगे, जिन्होंने काली हल्दी की खेती चालू कर लोगों के समक्ष मिसाल प्रस्तुत की है। वर्तमान में अन्य दूसरे किसान भी उनसे काली हल्दी की खेती करने का प्रशिक्षण ले रहे हैं।

आशीष अपने गांव में लगभग 3 वर्ष से काली हल्दी की खेती कर रहे हैं

एनबीटी की एक खबर के अनुसार, काली हल्दी की खेती करने वाले किसान का नाम आशीष कुमार सिंह है। आशीष कुमार बिहार राज्य के गया जनपद के अंतर्गत आने वाले टिकारी गांव के निवासी हैं।

आशीष कुमार अपने निज गांव में 3 साल से काली हल्दी की खेती कर रहे हैं। आशीष कुमार सिंह का कहना है, कि उनको कृषि से जुड़े लेख एवं खबरें पढ़ने का अत्यधिक शौक है। एक दिन उन्होंने अखबार में काली हल्दी के विषय में एक लेख पढ़ा था। इसके पश्चात आशीष ने काली हल्दी की खेती करने की योजना बनाई है। मुख्य बात यह है, कि आशीष विलुप्त होने की स्थिति पर पहुंच चुकी विभिन्न फसलों की खेती कर रहे हैं।

काली हल्दी से आयुर्वेदिक औषधियां निर्मित की जाती हैं

आशीष कुमार ने बताया कि उन्होंने लेख में पढ़ा था कि बिहार में काली हल्दी बिल्कुल खो चुकी है। अब इसकी खेती कोई नहीं करता है। ऐसे में मैंने इसकी खेती करना चालू कर दिया। उनके द्वारा उत्पादित हल्दी की सप्लाई सर्वाधिक मध्य प्रदेश में होती है। उनके अनुसार मध्य प्रदेश में बहुत सारे किसान उनसे जुड़े हुए हैं। आशीष काली हल्दी की मांग आते ही आपूर्ति कर देते हैं। दरअसल, मध्य प्रदेश में आदिवासी समुदाय के लोग अपना कोई भी शुभ कार्य आरंभ करने से पूर्व काली हल्दी का इस्तेमाल करते हैं। इसके अतिरिक्त इससे विभिन्न आयुर्वेदिक औषधियाँ भी तैयार की जाती हैं।

काली हल्दी की बुवाई हेतु कितना बीज उपयोग होता है

आशीष डेढ़ कट्ठे भूमि में काली हल्दी का उत्पादन कर रहे हैं। इससे उनको लगभग डेढ़ क्विंटल काली हल्दी की पैदावार मिलती है। बतादें, कि डेढ़ कट्ठे भूमि में काली हल्दी की बुवाई करने हेतु 10 किलो बीज की आवश्यकता होती है। उनका कहना है, कि काली हल्दी की खेती आप गमले में भी चालू कर सकते हैं। काली हल्दी की खेती में जल की काफी कम आवश्यकता है। अशीष कुमार सिंह से प्रेरणा लेकर दर्जनों की संख्या में किसानों ने काली हल्दी की खेती शुरू कर दी है। वह काली हल्दी के बीज 300 रुपये किलो के हिसाब से बेचते हैं। काली हल्दी में कुरकुमीन पीली हल्दी की तुलना में ज्यादा पाई जाती है। कृषि वैज्ञानिक देवेंद्र मंडल का कहना है, कि काली हल्दी का ओषधि के तौर पर सेवन करने से विभिन्न प्रकार के रोग ठीक हो जाते हैं। वर्तमान में बाजार के अंदर एक किलो काली हल्दी की कीमत 1000 से 5000 रुपये के मध्य है।

MERIKHETI